शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

हिंदी (ऐच्छिक)

कक्षा- बारहवीं

2016-17

सहायक-सामग्री निर्माण समिति

हिन्दी 'ऐच्छिक'

कक्षा-बारहवीं

क्रम सं.	नाम	पद
1.	**डॉ श्रीमती पंकज** (समूह संदर्शिका)	उपप्रधानाचार्या राणा प्रताप सर्वोदय कन्या विद्यालय रिठाला, दिल्ली-85
2.	**श्रीमती सीमा झा** (विषय-विशेषज्ञ)	प्रवक्ता-हिन्दी राजकीय सहशिक्षा सर्वोदय विद्यालय, सैक्टर-2, रोहिणी, दिल्ली-85
3.	**श्रीमती पुष्पा टाँक** (विषय-विशेषज्ञ)	प्रवक्ता-हिन्दी राणा प्रताप सर्वोदय कन्या विद्यालय, रिठाला, दिल्ली-85
4.	**डॉ. श्रीमती मंजू यादव** (विषय-विशेषज्ञ)	प्रवक्ता-हिन्दी राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, बी. एल. ब्लॉक, शालीमार बाग, दिल्ली-88
5.	**श्रीमती पूनम राही** (विषय-विशेषज्ञ)	प्रवक्ता-हिन्दी राणा प्रताप सर्वोदय कन्या विद्यालय, रिठाला, दिल्ली-85
6.	**सुश्री प्रिया कुमारी** (विषय-विशेषज्ञ)	प्रवक्ता-हिन्दी सर्वोदय विद्यालय, न्यू पुलिस लाइन, दिल्ली-9
7.	**श्रीमती ऋचा सरदाना** (विषय-विशेषज्ञ)	प्रवक्ता-हिन्दी राणा प्रताप सर्वोदय, कन्या विद्यालय, रिठाला, दिल्ली-85

8.	**श्रीमती मीना सिंघल** (विषय-विशेषज्ञ)	प्रवक्ता-हिन्दी सर्वोदय विद्यालय, के-2, ब्लॉक, मंगोल पुरी, दिल्ली-85
9.	**श्रीमती सुनीता नरुला** (विषय-विशेषज्ञ)	प्रवक्ता-हिन्दी राजकीय सहशिक्षा, सर्वोदय विद्यालय, सेक्टर-2, रोहिणी, दिल्ली-85
10.	**श्री मनोज त्रिपाठी** (विषय-विशेषज्ञ)	प्रवक्ता-हिन्दी राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, राजनिवास मार्ग, दिल्ली-54

अध्यापक हेतु सहायक निर्देश

1. सत्र के आरंभ में ही छात्रों को उनकी कापियों में C.B.S.E. के प्रश्न पत्र के अनुसार, प्रश्नों का अंक विभाजन लिखवा दें जिससे छात्र संबंधित प्रश्न का मूल्य समझ सकें।

2. पाठ आरंभ करने से पूर्व पाठ की विधा शैली को छात्रों को समझाना अति आवश्यक है।

3. कवि/लेखक का जीवन परिचय तीन मुख्य भागों में, 1. जीवन परिचय, 2. साहित्यिक अथवा काव्यगत विशेषताएँ 3. रचनाएँ - लिखा जाना चाहिए।

4. व्याख्या को प्रसंग, संदर्भ, व्याख्या, शिल्प-सौदंर्य चार भागों में लिखने का अभ्यास कराएँ। यह कार्य XI कक्षा से ही आरंभ हो जाना चाहिए, जो कि आठ अंक का है।

5. काव्य सौंदर्य के उत्तर का विभाजन दो भागों 1. भाव सौंदर्य 2. शिल्प सौंदर्य के अनुसार ही करना सिखाएँ। यह 3+3=6 अंक का प्रश्न है।

6. चरित्र-चित्रण का प्रश्न उपशीर्षकों में विभाजित करके ही छात्रों को लिखना सिखाएँ।

7. संपादक के नाम पत्र के अंतर्गत एक या दो समाचार पत्रों के पता (Adress) बच्चों को याद करवा दें। छात्र दैनिक समाचार पत्र न लिखकर समाचार पत्र का नाम लिखें।

8. छात्रों को पत्र-लेखन के समय बताया जाऐ कि सब कुछ बाँईं ओर ही लिख कर आरंभ करना है। तिथि तिरछी रेखा खींच कर न लिखें, अपना अथवा विद्यालय का नाम कहीं भी न लिखें।

विद्यार्थियों को परीक्षा भवन में उत्तर देते समय सहायक निर्देश

1. **10.15 से 10.30 तक प्रश्न पत्र को पढ़ते समय ध्यान रखने योग्य बातें-**
   (क) अपठित गंद्याश पढ़ने से पूर्व उनके प्रश्नों को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ें, तत्पश्चात ही उस गंद्याश को पढ़े।
   (ख) ठीक इसी प्रकार पंद्याश का प्रश्न हल करें।
   (ग) पत्र पढ़ कर उसका नाम व पता खोज लें व विषय समझ लें।
   (घ) निबंध में किसी एक विषय को सुनिश्चित करने के पश्चात उसके विभिन्न बिंदु दिमाग में सुनिश्चित कर लें।
   (ड) गद्य-पद्य की व्याख्या में लेखक तथा कविता का नाम ध्यान कर लें।
   (च) काव्य सौन्दर्य में भी कवि-कविता के बारें में सुनिश्चित कर लें।
   (छ) जिस भी लेखक/कवि की जीवनी करनी है उसकी रचनाओं, भाषा, साहित्यिक विशेषताओं को सुनिश्चित कर लें।
2. उत्तर लिखते समय बाईं और हाँशिया छोड़े।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखने के बाद दो पंक्तियों को अवश्य छोड़े जिससे सभी उत्तर स्पष्टत: दिखें।
4. महत्वपूर्ण अंशों को विशेषत: रेखांकित करें।
5. प्रत्येक प्रश्न को अंकों के अनुसार ही शब्द-सीमा में बाँधकर समय का ध्यान रखते हुए लिखें।
6. मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में लिखें।
7. सभी प्रश्नों के उत्तर देने का अथक प्रयास करें।
8. अपठित गंद्याश, पंद्याश, पत्र तथा निबंध वाले प्रश्नों को अंत के लिए न छोड़कर सुविधानुसार बीच में ही हल करने का प्रयास करें।

पाठ्यक्रम

हिंदी (ऐच्छिक)

कक्षा–12

खंड	विषय	अंक
(क)	अपठित अंश	**20**
	1. अपठित गद्यांश पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनांतरण, शीर्षक आदि पर लघूत्तरात्मक प्रश्न (उपयुक्त शीर्षक (1 अंक) + लघु प्रश्न (2 × 7)	15
	2. अपठित काव्यांश पर आधारित पाँच अति लघूत्तरात्मक प्रश्न (1 × 5)	05
(ख)	**कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन (पुस्तक : अभिव्यक्ति और माध्यम)**	**25**
	3. किसी एक विषय पर निबंध (विकल्प सहित)	10
	4. कार्यालयी पत्र (विकल्प सहित) (5 × 1)	05
	5. जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता के विविध आयामों पर पाँच अति लघुत्तरात्मक प्रश्न। (1 × 5)	05
	6. रचनात्मक लेखन पर एक प्रश्न (5 × 1)	05
(ग)	**पाठ्यपुस्तक**	**55**
	1. अंतरा भाग–2	
	(अ) काव्य भाग	**20**
	7. एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या	08

8.	कविता के कथ्य पर दो प्रश्न (3 + 3)	06
9.	कविताओं के काव्य-सौंदर्य पर दो प्रश्न (3 + 3)	06
(ब)	**गद्य भाग**	**20**
10.	एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या	06
11.	पाठों की विषयवस्तु पर दो प्रश्न (4 + 4)	08
12.	किसी एक लेखक/कवि का साहित्यिक परिचय	06
2.	**अंतराल भाग-2**	**15**
13.	पाठों की विषयवस्तु पर आधारित एक मूल्यपरक प्रश्न	05
14.	विषयवस्तु पर आधारित दो निबंधात्मक प्रश्न (5 + 5)	10
	कुल	**100**

प्रस्तावित पुस्तकें :

1. **अंतरा भाग-2** एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित
2. **अंतराल भाग-2** (विविध विधाओं का संकलन) एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित
3. **'अभिव्यक्ति और माध्यम'** एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित **(खंड-ख कामकाजी हिंदी और रचनात्मक लेखन हेतु)**

प्रश्नपत्र का प्रश्नानुसार विश्लेषण एंव प्रारूप

क्र. सं.	प्रश्नों के प्रारूप	दक्षता/परीक्षण परिणाम	1 अंक	2 अंक	3 अंक	4 अंक	5 अंक	6 अंक	8 अंक	10 अंक	कुल अंक	प्रतिशत
1.	अपठित बोध (पठन कौशल)	अवधाराणात्मक बोध, अर्थग्रहण, अनुमान लगाना, विश्लेषण करना, शब्द-ज्ञान व भाषिक प्रयोग, सृजनात्मक, मौलिकता।	6	7	–	–	–	–	–	–	20	20%
2.	कार्यलयी हिंदी और रचनात्मक लेखन (लेखन कौशल)	संकेत बिंदुओं का विसतार, अपने मत की अभिव्यक्ति, सोदहरण समझना, औचित्य निर्धारण, भाषा में प्रवाहमयता, सटीक शैली, उचित प्रारूप का प्रयोग अभिव्यक्ति की मौलिकता, सृजनात्मकता, सृजनात्मकता एंव तर्किकता	5	–	–	–	2	–	–	1	25	25%
3.	पाठ्यपुस्तकें	प्रत्यास्मरण, विषयवस्तु का बोध एंव व्याख्या, अर्थग्रहण (भावग्रहण), लेखक के मनोभावों को समझना, शब्दों का प्रसंगानुकूल अर्थ समझना, आलोचनात्मक चिंतन, तार्किकता, सराहना, साहित्यिक परंपराओं के प्रतिप्रेक्ष में मूल्याकंन, विश्लेषण, सृजनात्मकता, कल्पनशीलता, कार्य-करण संबंध स्थापित करना, साम्यता एंव अंतरों की पहचान, अभिव्यक्ति में मौलिकता एंव जीवन-मूल्यों की पहचान।	–	–	4	2	3	2	1	–	55	55%
		कुल	1x11 =11	2x7 =14	3x4 =12	4x2 =8	5x5 =25	6x2 =12	8x1 =8	10x1 =10	100	100%

विषय सूची

क्र सं.	*अध्याय*	*पृष्ठ संख्या*
1.	अंतरा (काव्य खण्ड)	11 से 83
2.	अंतरा (गद्य खण्ड)	84 से 131
3.	पूरक पुस्तक - अंतराल	132 से 150
4.	अभिव्यक्ति और माध्यम	151 से 188
5.	व्यावहारिक लेखन - (निबंध, पत्र)	189 से 192
6.	अपठित बोध (काव्याशं गद्यांश)	193 से 211
7.	प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-1	212 से 218
8.	प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-2	219 से 231
9.	प्रश्न पत्र हल सहित (2016)	232 से 250

विषय-सूची

कविता खंड-

आधुनिक काल

1. जयशंकर प्रसाद	–	(क) देवसेना का गीत
		(ख) कार्नेलिया का गीत
2. सूर्यकांत त्रिपाठी	–	(क) गीत गाने दो मुझे
		(ख) सरोज स्मृति
3. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय	–	(क) यह दीप अकेला
	–	(ख) मैंने देखा एक बूँद
4. केदारनाथ सिंह	–	(क) बनारस
	–	(ख) दिशा
5. विष्णु खरे	–	(क) सत्य
	–	(ख) एक कम
6. रघुवीर सहाय	–	(क) तोडो
	–	(ख) बसंत आया

प्राचीनकाल कविता खंड

7. (क) तुलसीदास	–	(क) भरत-राम का प्रेम
	–	(ख) पद
8. मलिक मुहम्मद जायसी	–	बारहमासा
9. विद्यापति	–	पद
10. केशवदास	–	कवित्त / सवैया
11. घनानंद	–	कवित्त / सवैया

पाठ-1

जय शंकर प्रसाद : जीवनी

जन्म : सन् 1888 में काशी के सूँघनी साहु-परिवार में

शिक्षा : उन्होंने विधिवत शिक्षा केवल आँठवीं कक्षा तक प्राप्त की। स्वशिक्षा द्वारा उन्होंने संस्कृत, पालि, उर्दू, और अंग्रेजी भाषाओं का गहन अध्ययन किया।

लेखन कार्य : वेदों और उपनिषदों में उनका विशेष चिंतन और मनन रहा। साहित्य की विविध विधाओं में उनकी लेखनी निरन्तर चलती रही।

रचनाएँ :

काव्य :- झरना, आँसू, लहर, कामायनी, कानन कुसुम।

नाटकः- राज्यश्री, अजातशत्रू, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी।

उपन्यासः- कंकाल, तितली, इरावती (अधूरा)

कहानी संग्रह :- छाया, प्रतिध्वनि, आँधी, इन्द्रजाल, आकाश द्वीप

निबन्धः- काव्य कला तथा अन्य निबंध

पुरस्कारः

'हिन्दुस्तानी एकेडमी' एवम 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' द्वारा कामायनी पर मरणोपरांत - 'मंगला प्रसाद पारितोषिक'

साहित्यिक विशेषताएँः

प्रसाद-साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें भारतीय दर्शन, संस्कृति एंव मनोविज्ञान के साथ-साथ भारतीय जीवन का सफल चित्रण हुआ है जैसे-

1. प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण
2. मानव प्रेम
3. ईश्वर प्रेम

4. देश प्रेम

5. मानव सौंदर्य

भाषा शैली:

1. संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग।

2. मुक्त छंद की रचनाएँ।

3. छायावादी काव्य के प्रमुख कवि।

4. प्रतीक योजना, बिम्ब विधान

5. अलंकारों का सुंदर प्रयोग।

6. माधुर्य गुण से युक्त शब्दावली।

मृत्यु:

सन् 1937 में साहित्य के यह देवता चिरनिद्रा में लीन हो गये।

———
———

पाठ परिचय

'देव सेना का गीत'

'देव सेना का गीत' 'जय शंकर प्रसाद' के प्रसिद्ध नाटक 'स्कन्दगुप्त' का अंश है। देव सेना स्कन्दगुप्त के प्रेम से वंचित रह जाने पर अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में अपने दुख, वेदना और व्याकुलता को प्रकट करते हुए गीत गाती है। हुणों के हमले में मालवा का राजा बंधुवर्मा और उसका परिवार मारा जाता है, लेकिन उनकी बहन देव सेना किसी तरह बच कर निकल जाती है। देव सेना स्कन्दगुप्त से प्रेम करती है और उसे पूरा विश्वास है कि इस मुश्किल घड़ी में स्कन्दगुप्त उसका साथ देगा और उससे विवाह करेगा। लेकिन स्कन्दगुप्त तो धन कुबेर की पुत्री विजया से विवाह करना चाहता है। इस बात से देवसेना पूरी तरह से टूट जाती है और अपने पूरे जीवन को देश सेवा के लिए समर्पित कर देती है।

सप्रसंग व्याख्या : आह वेदना ..... नीरवता अनंत अगडाई।

प्रसंग : कवि-'जयशंकर प्रसाद'

कविता-'देवसेना का गीत'

संदर्भ : इसमें देवसेना अपने दु:ख और संघर्षों का वर्णन करते हुए कहती है कि उसकी जीवन यात्रा पर अगर किसी ने अधिकार किया है तो वह है एकमात्र उसका अकेलापन।

व्याख्या:- देवसेना कहती है कि मुझे जीवन के अन्तिम क्षणों में भी दुख और पीड़ा ही मिल रही है। मैंने अपना सारा जीवन इसी आशा में गुजार दिया कि स्कन्दगुप्त मुझसे प्रेम करता है, लेकिन यह तो मात्र मेरा वहम था। इसी कारण मैंने अपने जीवन को देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया अर्थात् अपने जीवन की मधुर यादों को दान कर दिया अत: जीवन के अन्तिम क्षणों में भी मुझे दुख ही दु:ख मिल रहे हैं, मानों संध्या भी उसके दुख में आसूँ बहा रही हो। ऐसा लगता है मानो उसकी जीवन रूपी यात्रा में अगर कोई साथ चला है, तो मात्र उसका अकेलापन।

विशेष : देव सेना के जीवन संघर्षों का सजीव चित्रण हुआ है।

काव्य सौंदर्य :

1. खडी बोली।
2. मुक्त छंद की रचना है।
3. छायावादी रचना है।
4. करूण रस है।
5. उपमा, अनुप्रास और मानवीकरण अलंकार है।

———
———

काव्य सौंदर्य : श्रमित स्वप्न ..... विहाग की तान उठाई।

भाव पक्ष : इसके माध्यम से देव सेना कहती है कि जिस प्रकार दिन भर के थके हारे पथिक को कोई भी मधुर गीत अच्छा नहीं लगता उसी प्रकार अपने जीवन के संघर्षों से थकी हारी देवसेना को स्कन्दगुप्त का प्रेम-प्रसंग अच्छा नहीं लगता।

शिल्प सौंदर्यः

1.	कवि	–	जयशंकर प्रसाद
2.	कविता	–	देवसेना का गीत
3.	भाषा	–	खड़ी बोली
4.	शैली	–	छायावादी
5.	रस	–	वियोग श्रृंगार रस
6.	छंद	–	मुक्तछंद
7.	अलंकार	–	स्वप्न का मानवीकरण (मानवीकरण अलंकार)
8.	शब्दावली	–	तत्सम
9.	गुण	–	माधुर्य
10.	शब्द शक्ति	–	लाक्षणिकता

11. प्रतीक विधान – पथिक, स्वप्न

12. छंद कविता – तुकान्त

13. सार – देवसेना का संघर्ष

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है?

उत्तर : कवि ने आशा को बावली इसलिए कहा है क्योंकि जीवन के अन्तिम दिनों में स्कन्दगुप्त आकर देवसेना से प्रणय-निवेदन करता है। देवसेना सोचती है कि जिस समय मुझे स्कन्दगुप्त की जरूरत थी उसने मेरा साथ नहीं दिया। अब मैंने अपना सारा जीवन लोगों की सेवा में समर्पित कर दिया है तो मैं अपना प्रण नहीं छोड़ सकती। तब देवसेना अपने मन को समझाते हुए कहती है कि हे! मेरे मन, तू क्यों पागल हुआ जा रहा है। अगर क्षणिक सुख के लिए तू स्कन्दगुप्त की ओर मुड़ता है तो जो त्याग, तपस्या और बलिदान तूने किया है वह सब कुछ व्यर्थ चला जायेगा। मेरे जीवन भर की सारी देश सेवा रूपी कमाई तू खो देगा।

'कार्नेलिया का गीत'

पाठ का परिचय

'कार्नेलिया का गीत' 'जयशंकर प्रसाद' के प्रसिद्ध नाटक 'चन्द्रगुप्त' से लिया गया है। सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस की बेटी कार्नेलिया जब सिंघु नदी के तट पर खड़े होकर भारत की गौरव गाथा तथा अद्‌भुत प्राकृतिक सौंदर्य को देखती है तो इसे अपना देश मानने लगती है। वह कहती है कि भारत वह स्थान है जो माधुर्य और लालिया से भरा हुआ है। जहाँ अनजान व भूले-भटके लोगों को भी आश्रय मिल जाता है। दूर-देशों से आये हुए रंग-बिरंगे पक्षी भी भारत में ही अपना घौंसला बनाना चाहते हैं। यहाँ के लोग दूसरों के दुख-तकलीफों को देखकर अत्यन्त भावुक हो जाते हैं। विशाल समुद्र की लहरें भी भारत के किनारों से टकराकर शांत हो जाती हैं अर्थात उन्हें भी यहीं आकर आश्रय मिलता है।

काव्य सौंदर्य : हेम कुंभ ..... रजनी भर तारे।

भाव: उषा रूपी पनिहारिन अपने सोने के घड़े में सुख-समृद्धि और वैभव लाकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में उड़ेल देती है।

अर्थात बिखेर देती है। जबकि सारी रात जागने के कारण तारे मस्ती में ऊँघने लगते हैं।

शिल्प सौंदर्य :

1. कवि – जयशंकर प्रसाद
2. कविता – कार्नेलिया का गीत
3. भाषा – खड़ी बोली
4. शैली – छायावादी
5. रस – शांत रस
6. छंद – मुक्त छंद
7. अलंकार – उषा और तारों का मानवीकरण किया गया है। रूपक, अनुप्रास और मानवीकरण अलंकार हैं।

8. प्रतीक विधान – उषा, तारे, घड़ा।

9. शब्द शक्ति – लाक्षणिकता

10. छंद कविता – तुकान्त

11. गुण – माधुर्य

12. सार – प्रभातकालीन वातावरण का आकर्षण एवम् सजीव वर्णन।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'उड़ते खग' और 'बरसाती आँखों के बादल' में क्या विशेष अर्थ व्यंजित होता है?

उत्तर :'उड़ते खग' के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि पक्षीगण तक भारतवर्ष को अपना घर (नीड़) समझकर इसी ओर मुख करके उड़ते हैं और अपने बच्चों को जन्म देते हैं। अर्थात् यहाँ प्रत्येक प्राणी को अपने घर जैसी सुख-सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।

'बरसाती आँखों के बादल' के माध्यम से कवि कहता है कि इस देश के लोग अपने दुख के क्षणों को भूलकर दूसरों के दु:ख को अपना समझकर उनके लिए सहारा बनते हैं इस देश में प्रेम ओर करुणा सर्वव्याप्त है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

देवसेना का गीत

प्र. 1. मैंने भ्रमवश जीवन संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई'' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

प्र. 2. देव सेना की हार व निराशा के क्या कारण हैं?

प्र. 3. काव्य सौंदर्य

(क) लौटा लो ..... लाज गँवाई

कार्नेलिया का गीत

प्र. 1. कार्नेलिया का गीत कविता में प्रसाद ने भारत की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है?

प्र. 2. जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

जन्म : बंगाल 1898

जीवन-परिचय-निराला जी के बचपन का नाम सूर्यकुमार था। जब वे केवल तीन वर्ष के थे, तभी उनकी माता का निधन हो गया। किशोरावस्था में उनका विवाह कर दिया गया। पत्नी की प्ररेणा से निराला जी की साहित्य और संगीत में रूचि उत्पन्न हुई। सन् 1918 में उनकी पत्नी मनोहरा देवी परलोक सिधार गई। उसके बाद पिता चाचा, चचेरे भाई एक-एक कर सब की मृत्यु हो गई। इतना ही नहीं, इनकी दो सन्तानों (पुत्र और पुत्री) में से पुत्र की भी अल्पायु में मृत्यु हो गई। अन्त में पुत्री सरोज की असामयिक मृत्यु ने निराला जी को तोड़कर रख दिया। निराला जी का पूरा जीवन अभावों व दु:खों से ग्रस्त रहा।

शिक्षा : नौवीं कक्षा तक

सम्पादन कार्य : 1. 1922 - रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'समन्वय' के सम्पादन में।

2. 1923.24 'मतवाला' के सम्पादक मण्डल में।

रचनाएँ : 1. काव्य-कृतियाँ : परिमल, गीतिका, अनामिका, बेला, अर्चना, आराधना, नए पत्रे आदि।

2. उपन्यास : अप्सरा, अलका, प्रभावती, इरावती, निरूपमा, रतिनाथ की चाची आदि।

3. कहानी संग्रह : लिली, चतुरी चमार, सुकुल की बीबी, सखी, देवी।

4. रेखाचित्र : कुलीभाट

5. निबन्ध संग्रह : प्रबन्ध पद्म, प्रबन्ध प्रतिमा, चाबुक, चयन।

6. समीक्षा : रवीन्द्र कविता, कानन, पंत और पल्लव।

साहित्यिक विशेषताएँ

1. प्रेम, प्रकृति-चित्रण और रहस्यवाद

2. भारतीय इतिहास, दर्शन और परम्परा का व्यापक बोध

3. समकालीन जीवन के यथार्थवादी पक्षों का चित्रण

4. राष्ट्रीय चेतना और भारतीय संस्कृति का गंभीर चित्रण

5. भारतीय किसान के जीवन से लगाव

भाषा शैली

1. छन्दोबद्ध और छन्द मुक्त कविता
2. तत्सम प्रधान भाषा, खड़ी बोली
3. चित्रात्मक बिम्ब योजना
4. भाषा का कसाव, शब्दों की मितव्ययिता और अर्थ की प्रधानता
5. प्रबंध काव्य, मुक्तक और ग्रन्थ- सभी प्रकार की शैलियों का प्रयोग

मृत्यु : 1961 इलाहाबाद

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

(क) गीत गाने दो मुझे

पाठ परिचय - इस कविता में कवि ने ऐसे समय की ओर संकेत किया है जहाँ सब ओर निराशा व्याप्त है। वेदना से भरा कवि अपने दुख को भुलाने के लिए गीत गाना चाहता है। कवि के अनुसार पृथ्वी पर जीवन रूपी लौ बुझ गई है और वह इस लौ को जगाना चाहता है। वह निराशा में आशा का संचार करना चाहता है।

प्रसंग सहित व्याख्या : गीत गाने दो ..... आ रहा है काल देखो

प्रसंग : कवि- 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला'

कविता - 'गीत गाने दो मुझे'

संदर्भ : कवि संघर्ष करते-करते हार चुका है और उसे लग रहा है कि उसका अन्तकाल समीप है।

व्याख्या : कवि कहता है कि जीवन में निरन्तर बढ़ रहे दुख को कम करने के लिए मुझे गीत गाने दो। वह अपनी वेदना को कम करने के लिए गीत गाना चाहता है। अपने जीवन में लगातार एक के बाद एक दुख आने से और लगातार संघर्ष करते-करते कवि टूट चुका है। उसके होश उड़ चुके हैं। निरन्तर आघातों के कारण होश वालों के भी होश उड़ जाते हैं। अब जीवन जीना आसान नहीं है। कवि के पास जीवन जीने के लिए जो थोड़ा बहुत था,

वो भी ठग (प्रशासक वर्ग) व ठाकुरों (पूँजीपति वर्ग) ने छल कपट से लूट लिया। कवि को अपनों ने व समाज ने धोखा दिया है। पीड़ा सहते-सहते कवि का गला रूँध गया है, उसके गले से आवाज नहीं निकल पर रही है। उसे लग रहा है जैसे उसकी मृत्यु उसके समीप आ रही है। ऐसे निराशा भरे वातावरण में कवि गीत गाना चाह रहा है जिससे उसका दुख कम हो सके।

विशेष : कवि ने अत्यधिक दुख को सहने के लिए गीत गाने का सफल प्रयास किया है।

काव्य सौंदर्य

1. गीत गाकर वेदना को भूलने की बात छायावादी शैली की विशेषता है।
2. खड़ी बोली का प्रयोग
3. भाषा सरल व प्रभावशाली
4. भाषा में लयात्मकता व संगीतात्मकता
5. मुहावरों का प्रयोग - 'होश छूटना' 'चोट खाना'
6. गीत-गाने, ठग-ठाकुरों - अनुप्रास अलंकार
7. छन्द मुक्त शैली

——— • ——— • ——— • ——— • ———

काव्य सौंदर्य : भर गया है जहर से ..... फिर सींचने को।

भाव सौंदर्य : इन पंक्तियों में कवि को लग रहा है कि पूरा संसार हर तरफ से हार मानकर विष से भर गया है। लोग एक दूसरे को पहचान कर भी सही परिचय नहीं देते हैं। लोगों के बीच से मानवता, प्रेम व भावनाएँ खत्म हो चुकी है। लोगों में जीने की लालसा खत्म हो चुकी है। कवि मानवता की लौ को फिर से जलाना चाहता है। वह ऐसे गीत गाना चाहता है कि निराशा से भरे इस संसार में आशा का संचार हो सके।

शिल्प सौंदर्य

1. कवि – सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
2. कविता – 'गीत गाने दो मुझे'
3. भाषा – खड़ी बोली
4. शैली – छायावादी
5. छन्द – मुक्त छन्द
6. शब्द चयन – उच्चकोटी
7. भाव – लाक्षणिकता प्रधान
8. छन्द कविता – तुकान्त
9. शब्दावली – तत्सम
10. अलंकार – अनुप्रास– 'लोग-लोगों' विरोधाभास – 'जल उठो फिर सींचने को'
11. मुहावरों का प्रयोग
12. संगीतात्मकता एंव लयात्मकता

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : 'प्रस्तुत कविता दुख और निराशा से लड़ने की शक्ति देती है' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत कविता हमें दुख और निराशा से लड़ने की शक्ति देती है। वर्तमान समय दुख और निराशा से पूर्ण है। ऐसे समय में संघर्ष करना जरूरी है। इस कविता से हमारे भीतर दुख और निराशा से लड़ने का उत्साह जागृत होता है। इस कविता कें माध्यम से लोगों को जागृत करके उन्हें आह्वान किया है कि पृथ्वी से दुख और निराशा को दूर करके नई आशा का संचार करें और संघर्ष की ज्वाला प्रज्ज्वलित करें।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : 'चोट खाकर राह चलते, होश के भी होश छूटे' के द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

प्रश्न 2 : कंठ रूक रहा है, काल आ रहा है– यह भावना कवि के मन में क्यों आई?

सरोज-स्मृति

पाठ परिचय : यह कविता हिन्दी काव्य साहित्य का पहला शोक गीत है। यह कविता कवि की दिवगंता पुत्री पर केन्द्रित है। पुत्री की असामयिक मृत्यु ने कवि को तोड़ दिया है। उसे पुत्री के विवाह का समय याद आ रहा है। पुत्री का विवाह हर तरीके से नये ढंग का था। कवि ने इस विवाह में माता-पिता दोनों का कर्त्तव्य निभाया था। विवाह के समय पुत्री के चेहरे पर स्वाभाविक लज्जा थी। कवि को अपनी पुत्री के रूप में अपनी स्वर्गीया पत्नी की याद आती है। पुत्री का विवाह हो गया। विवाह में न तो मांगलिक गीत गाये गए और न ही किसी रिश्तेदार को बुलाया गया।

विवाह के बाद माँ के द्वारा दी जाने वाली शिक्षा भी पुत्री को, कवि ने दी और पुष्प शैया भी सजाई। रोते हुए कवि को भी कभी शकुन्तला याद आती है तो कभी सरोज का बचपन। विवाह के कुछ समय बाद वह ननिहाल चली गई, जहाँ उसे मामा-मामी का अगाध प्यार मिला था। ननिहाल में ही वह कली (सरोज) बड़ी हुई जहाँ की लता, सरोज की माँ थी। वहीं उसने असमय मृत्यु का वरण किया। इस कविता में एक भाग्यहीन पिता का संघर्ष तथा पुत्री के लिए कुछ न कर पाने का दुख भी व्यक्त हुआ है। कवि इस कविता में अपने सभी किए कर्मों से अपनी पुत्री का तर्पण करते हैं।

सप्रसंग व्याख्या : माँ की कुल शिक्षा ..... दृग वर महामरण।

प्रसंग : कवि - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

कविता : 'सरोज स्मृति'

संदर्भ : इसमें कवि ने अपनी पुत्री के पालन-पोषण से लेकर उसकी मृत्यु तक का वर्णन किया है।

व्याख्या : यहाँ कवि अपनी स्वर्गीया पुत्री को सम्बोधित करते हुए कहता है कि माँ के अभाव में माँ के द्वारा पुत्री के विवाह पर पुत्री को दी जाने वाली शिक्षा मैंने ही तुम्हें दी। तुम्हारी पुष्प शैया मैंने सजाई। इस समय कवि को शकुन्तला की याद आई। जिस प्रकार महर्षि कण्व ने माँ विहीन शकुन्तला को विवाह के पश्चात् शिक्षा दी थी, उसी प्रकार कवि ने माँ विहीन सरोज को शिक्षा दी थी लेकिन उस घटना और यहाँ की स्थिति में अन्तर है क्योंकि शकुन्तला को उसकी माँ स्वंय छोड़कर गई थी। लेकिन सरोज की माँ को मृत्यु ले गई थी। विवाह के बाद सरोज फिर अपने ननिहाल चली गई जहाँ नानी और मामा-मामी का

उसे बेहद प्यार मिला। मामा-मामी सरोज पर प्यार की ऐसी वर्षा करते थे जैसे बादल पृथ्वी पर जल की वर्षा करते हैं। ननिहाल में सभी उसके सुख-दुख में लगे रहे। वे लोग हमेशा सरोज के कल्याण में ही व्यस्त रहते थे। सरोज जिस लता की (अर्थात अपनी माँ मनोहरा की) कली थी, उस लता का पालन-पोषण भी उसी घर में हुआ था। वह ननिहाल में पल-बढ़ कर किशोरी बनी और अब वहाँ युवती बनकर पहुँची है। अन्त में सरोज ने ननिहाल में ही असमय मृत्यु का वरण किया। ननिहाल वालों की गोद में ही अपनी आँखें मूँदी।

विशेष : कवि अपनी स्वर्गीया पुत्री पर विलाप करते हुए उससे संबंधित घटनाओं को याद कर रहा है। शकुन्तला को याद कर, पुत्री से तुलना कर कवि की वेदना बढ़ी है।

काव्य सौंदर्य

1. भाषा खड़ी बोली
2. छन्दमुक्त कविता
3. 'मामा.....अपार' - उपमा अलंकार
4. वह लता ..... महावरण-रूपक अलंकार
5. छायावादी शैली
6. पहला शोक गीत
7. भाषा सरल, सरस, लयात्मक
8. कली, खिली, पली, हिली ..... पद मैत्री

———• ———• ——— • ——— • ———

काव्य सौंदर्य : श्रृंगार रहा जो निराकार ..... स्वर पर उतरा।

भाव सौंदर्य : कवि को अपनी पुत्री के श्रृंगार में वही श्रृंगार दिखा जो आकार रहित रहकर उसकी कविता में रस भरता है। पुत्री का श्रृंगार वह श्रृंगार गीत था जो उसने अपनी स्वर्गीया पत्नी के संग गाया था जो उसके प्राणों में राग-रंग भरता था। सरोज विवाह के समय अत्यधिक सुन्दर लग रही थी कवि को लगा कि जैसे उसकी पत्नी का अलौकिक सौंदर्य आकाश से उतर कर पृथ्वी पर सरोज के रूप में आ गया हो। सरोज का रति रूप कवि को अपनी पत्नी की याद दिला रहा था। सरोज के विवाह में कोई रिश्तेदार नहीं था, न किसी को निमन्त्रण भेजा गया था। न मांगलिक गीत गाए गये न ही रतजगा कर गीत गाये। केवल

घर में प्यार भरा शांत वातावरण था जो कि नवयुगल के नवजीवन के लिए जरूरी था।

शिल्प सौंदर्य

1. कवि - सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
2. कविता - सरोज-स्मृति
3. भाषा - खड़ी बोली
4. शैली - छायावादी
5. छन्द - मुक्त छन्द
6. शब्दावली - तत्सम
7. अलंकार -
   1. अनुप्रास - 'राग-रंग' 'रति रूप'
   2. मानवीकरण - 'प्रिय मौन ..... उतरा'
   3. विरोधाभास - 'प्रिय मौन एक संगीत भरा'
   4. रूपक - 'रति रूप'
8. छन्द कविता - तुकान्त
9. रस - वात्सल्य
10. बिंब - स्मृति
11. लयात्मकता

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : 'आकाश बदल कर बना मही' में 'आकाश' और 'मही' शब्द किनकी ओर संकेत करते हैं?

उत्तर : 'आकाश' कवि की स्वर्गीया पत्नी की ओर तथा 'मही' नववधू के वेश में सजी कवि की पुत्री की ओर संकेत करते है। कवि की पुत्री विवाह पर अत्यधिक सुन्दर लग रही थी, कवि को लगता है कि मानो उसकी पत्नी का आलौकिक सौंदर्य आकाश से उतर कर पृथ्वी पर सरोज के रूप में उतर आया हो। पुत्री सरोज का रति जैसा सौंदर्य कवि को उसकी

पत्नी की याद दिला रहा है।

प्रश्न 2 : 'वह लता वहीं की, जहाँ कली तू खिली, पंक्ति के द्वारा किस प्रसंग को उद्घटित किया गया है?

उत्तर: इस पंक्ति के द्वारा कवि का कहना है कि सरोज की माँ का लालन-पालन भी वहीं हुआ था जहाँ सरोज का हुआ अर्थात् सरोज ननिहाल में ही पली बढ़ी और युवा हुई।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. 'दुख ही जीवन की कथा रही' निराला जी ने ऐसा क्यों कहा है?

2. शकुन्तला के प्रसंग के माध्यम से कवि क्या संकेत करना चाहता है?

3. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:-

मुझ भाग्यहीन की तू संबल ..... मैं तेरा तर्पण।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

पाठ-3

सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

जीवन परिचय

जन्म-सन् 1911 में कुशीनगर (उत्तर प्रदेश)

शिक्षाः पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा, मद्रास के क्रिश्चियन कॉलेज से विज्ञान की पढ़ाई। लाहौर कॉलेज से बी.एस.सी. व अंग्रेजी विषय में एम.ए.।

कार्य : 1. अध्यापन कार्य : 1. सन् 1960 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति और साहित्य के अध्यापक रहे।

2. जोधपुर विश्वविद्यालय में भाषा-विज्ञान के निदेशक रहे।

2. सम्पादन कार्य : 1936 में सैनिक पत्रिका, विशाल भारत, प्रतीक दिनमान, नवभारत टाइम्स का सफल संपादन।

3. लेखन कार्य : अज्ञेय ने तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, प्रत्येक सप्तक में उन्होंने सात-सात कवियों की रचनाओं को शामिल किया।

जेल में उन्होंने 'चिंता' तथा 'शेखर एक जीवनी' को लिखा।

रचनाएँ : काव्य : भग्नदूत, चिंता, बावरा अहेरी, हरी घास पर क्षण भर

नाटकः उत्तर प्रियदर्शी

कहानियाँः विपथगा, परम्परा, ये तेरे प्रतिरूप, जिज्ञासा

उपन्यासः शेखरः एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी

यात्रा वृतांतः अरे यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली

निबन्धः त्रिशंकु, सबरंग, आत्मनेपद।

पुरस्कार : 1. 1979 में 'कितनी नावों में कितनी बार' कविता पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार । 2. साहित्य अकादमी पुरस्कार। 3. भारत भारती पुरस्कार।

साहित्यिक विशेषताएँः

1. जीवन को पूर्णता में जीने का आग्रह।

2. व्यष्टि और समष्टि में समन्वय।

3. दार्शनिकता एवं बौद्धिकता

4. लघु कविताओं का सौंदर्य।

भाषा शैली

1. इनकी रचनाओं में खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग हुआ है।

2. मुक्त छंद की रचना है।

3. अज्ञेय की भाषा बिम्बात्मक है।

4. प्रतीकात्मकता के गुण हैं- मछली, दीप और द्वीप

मृत्यु : सन् 1987 में इनका देहान्त दिल्ली के राम मनोहर लोहिया अस्पताल में हुआ।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

कविता का सार (यह दीप अकेला)

'यह दीप अकेला' में अज्ञेय जी ने 'दीपक' को मनुष्य के प्रतीक के रूप में लिया है। जिस प्रकार पंक्ति में शामिल हो जाने पर एक जगमगाते दीपक का सौंदर्य और महत्व बढ़ जाता है, उसी प्रकार एक व्यक्ति जो अपने आप में स्वतन्त्र है, प्रेम व करूणा से भरा हुआ है उसकी सार्थकता भी समाज के साथ जुड़कर रहने में है। अतः अज्ञेय जी व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता के साथ जोड़ने पर बल देते हैं ताकि विश्व का कल्याण हो सके। इसी में दीप की सार्थकता है और व्यक्ति की भी।

सप्रसंग व्याख्या : यह दीप अकेला ..... पंक्ति को दे दो।

प्रसंग : कवि - अज्ञेय

कविता - यह दीप अकेला।

संदर्भ : इसमें अज्ञेय जी दीपक के माध्यम से मनुष्य की बात करते हैं।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि यह जो दीपक है वह स्नेह, प्यार व अपनेपन से भरा हुआ है परन्तु अकेला है अर्थात यह जो मनुष्य है इसमें गर्व, घमण्ड और अनेक शक्तियाँ भरी हुई हैं जिससे कि वह इठलाता और इतराता रहता है। इसलिए अनेक शक्तियाँ होते हुए भी यह अकेला है। हमें इसे समाज में शामिल कर लेना चाहिए ताकि इसकी शक्तियों से राष्ट्र का

कल्याण हो सके। यह वो व्यक्ति है जो देश कल्याण के गीत गाता है यदि इसे समाज में शामिल नहीं किया गया तो फिर ऐसे मधुर गीत कौन गाएगा? यह वो गोता खोर है जो भावनाएँ रूपी समुद्र की अतल गहराई में जाकर सुंदर रचनाएँ रूपी मोती खोज कर लाता है। फिर उन्हें कौन खोज कर लायेगा? यह वह यज्ञ की हवन सामग्री है अर्थात ऐसी प्रज्वलित अग्नि कोई (बिरला) हठीला बहुतों में से एक हर सुलगा पाएगा। यह अद्वितीय है, इसके जैसा कोई दूसरा नहीं है। यह मेरा है अर्थात इसमें स्व का भाव है।

यह दीपक अर्थात मनुष्य अकेला है पर प्रेम व प्यार से भरा हुआ है साथ में अपनी शक्तियों पर इठलाता व इतराता रहता है। हमें इसे जन समूह में शामिल कर लेना चाहिए, इसी में इसकी और देश की भलाई है।

विशेषः इन पंक्तियों में कवि ने मनुष्य की व्यक्तिगत सत्ता को सामजिक सत्ता में शामिल करने का संदेश दिया है।

काव्य सौंदर्य

1. खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग
2. मुक्त छंद
3. प्रयोगवादी रचना
4. रूपक व मानवीकरण अलंकार
5. गाता गीत, कौन कृति में अनुप्रास अलंकार।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

काव्य सौंदर्य : यह सदा-द्रवित ..... श्रद्धामय इसको भी पंक्ति को दे दो।

भाव्य सौंदर्य : कवि दीपक को प्रतीक बनाकर मनुष्य के गुणों का वर्णन कर रहे हैं, जो सदा दयालु, जागरूक तथा सबके प्रति-प्रेम भाव से युक्त रहता है। इसी प्रकार से कवि भी समस्त कष्ट स्वयं सहन कर सबको अपनाने के लिए तैयार रहता है।

शिल्प सौंदर्य

1. कवि - अज्ञेय
2. कविता - यह दीप अकेला

3. भाषा – खड़ी बोली

4. शैली – प्रगति शैली

5. छंद – मुक्त छंद

6. रस – वीर रस

7. अलंकार – अनुप्रास, रूपक, मानवीकरण

8. प्रतीक विधान – द्वीप प्रतीक है व्यक्ति का

9. शब्द चयन – लाक्षणिकता प्रधान, तत्सम शब्दावली

10. छंद कविता – तुकान्त

11. गुण – माधुर्य एंव ओजगुण

12. शब्द – लक्षणा और व्यंजना

13. सार – व्यक्ति की शक्ति

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : 'यह दीप अकेला' एक प्रयोगवादी कविता है। इस कविता के आधार पर 'लघु-मानव' के अस्तित्व और महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : 'यह दीप अकेला' कविता में कवि ने एक छोटे से जलते हुए दीपक को 'लघु मानव' के रूप में माना है। जैसे छोटा सा दीपक जलकर अँधेरे को दूर कर देता है और चारों ओर उजाला ही उजाला कर देता है उसी प्रकार लघु मानव भी इस छोटे से दीपक के समान ही है। वह अपने कार्यों द्वारा समाज की बहुत भलाई कर सकता है। उसे महत्वहीन नहीं समझा जा सकता। वह पनडुब्बे की तरह हृदय की गहराइयों में उतर कर श्रेष्ठ कविता रूपी मोती निकालकर ले आता है। जैसे एक-एक बूँद से सागर बन जाता है वैसे ही अनके लघु मानव का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है और उसके अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता।

मैंने देखा एक बूँद (कविता का सार)

'मैंने देखा एक बूँद' कविता में कवि ने जीवन में क्षण के महत्व को दर्शाया है। इस कविता में सागर और बूँद समष्टि और व्यष्टि के प्रतीक हैं। कवि देखता है कि बूँद क्षण भर

के लिए ढलते सूरज की आग से रंग जाती है। क्षण भर का यह दृश्य देखकर कवि को एक दार्शनिक तत्व भी दिखने लग जाता है। भारतीय दर्शन में यह माना गया है कि आत्मा-परमात्मा से बिछुड़कर उसमें पुनः मिल जाने के लिए छटपटाती रहती है, उसी प्रकार बूँद भी सदैव इस बात के लिए प्रयासरत रहती है कि वह पुनः सागर में समा जाये। कवि ने यह संदेश भी दिया है कि जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह छोटा होते हुए भी विशेषताओं से भरा हुआ है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : 'सागर' और 'बूँद' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर : 'सागर' से कवि का आशय है - विराट समाज से 'बूँद' से कवि का आशय है- मनुष्य से। इस विशाल संसार (सागर) के समक्ष मनुष्य एक बूँद की तरह तुच्छ है, किन्तु यह तुच्छ बूँद जब पलभर के लिए ही सही, सागर से अलग होकर सूर्य के रंग में रंग जाती है, तब वह विशिष्ट हो जाती है। इसी प्रकार मनुष्य इस छोटी सी उम्र में कुछ ऐसा अनोखा कार्य कर जाता है कि वह सारे संसार में अमर हो जाता है और नष्ट होने से अपने आप को बचा लेता है। अतः मानव जीवन में क्षण के महत्त्व को दर्शाया गया है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : 'दीप अकेला' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए यह बताइये कि उसे कवि ने स्नेहभरा एंव मदमाता क्यों कहा जाता है?

प्रश्न 2 : यह दीप अकेला है 'पर इसको भी पंक्ति को दे दो' के आधार पर बताइय व्यष्टि का समष्टि में विलय क्यों और कैसे सम्भव है?

प्रश्न 3 : गीत और मोती की सार्थकता किससे जुड़ी है।

प्रश्न 4 : यह मधु है ..... तकता निर्भय पंक्तियों के आधार पर बताइये कि 'मधु', गोरस और 'अंकुर' की क्या विशेषता है।

प्रश्न 5 : क्षण के महत्व का उजागर करते हुए कविता का मूल भाव लिखिए।

पाठ-4

केदारनाथ सिंह

जन्म : सन् 1934 को उत्तर प्रदेश के चकिया गाँव में।

शिक्षा : बी.ए. बनारस के उदय प्रताप कॉलेज से, एम.ए. काशी हिंदू विश्वविद्यालय से ।

उपाधि : पी. एच. डी. आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान का विकास।

कार्य : अध्यापन कार्यः- बनारस, देवरिया, गोरखपुर तथा नई दिल्ली में। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के भारतीय भाषा केन्द्र में हिन्दी के प्रोफेसर पद से सेवानिवृत हुए।

लेखन कार्य : अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' में उनकी कविताएँ शामिल की गई। केदारनाथ जी हिंदी की साठोत्तरी कविता-धारा के विशिष्ट रचनाकार हैं जो पिछले पाँच दशकों से रचना कर्म में लगे हैं।

रचनाएँ : काव्य संग्रह : अभी बिल्कुल अभी, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, जमीन पक रही है।

आलोचना : कल्पना और छायावाद।

निबंध संग्रह : मेरे समय के शब्द, कब्रिस्तान में पंचायत

पुरस्कार : 1. 'अकाल में सारस' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।

2. मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान।

3. कुमारन आशान व्यास सम्मान।

4. दयावती मोदी पुरस्कार।

काव्यगत विशेषताएँ: 1. केदारनाथ सिंह नई कविता-धारा के वरिष्ठ रचनाकार है।

2. उनकी अधिकतर कविताओं में संवेदना और विचार की उपस्थिति उन्हें सहज और प्रभावपूर्ण बनाती है।

3. सौंदर्य और प्रेम से युक्त काव्य

4. आस्था और विश्वास का स्वर

5. सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति

'बनारस' (कविता का परिचय)

बनारस कविता में कवि केदारनाथ सिंह ने बनारस के सांस्कृतिक एवम् सामाजिक परिवेश का सजीव चित्रण किया है। इसमें आस्था, श्रद्धा, विरक्ति, विश्वास, आश्चर्य और भक्ति का समावेश है। मृत्यु यहाँ किसी अंत के बोध से पैदा होने वाली हताशा का कारण नहीं बनती, बल्कि जीवन को नये सिरे से जीने की सीढ़ी है। यहाँ न तो हवन कुंड में से धुँआ उठना बंद होता है और न चिताग्नि ठंडी होती है।

सप्रसंग व्याख्या : जो है वह सुगबुगाता ..... कटोरों का निचाट खालीपन

प्रसंग : कवि – 'केदारनाथ सिंह'

कविता – बनारस

संदर्भ : इसमें कवि ने बंसत के समय जागृति, उल्लास व नवीन चेतना का बड़ा ही सजीव चित्रण किया गया है।

व्याख्या : जब बनारस में बसंती हवा चलने लगती है तो जो सजीव है उसमें, सुगबुगाहट होने लगती है, अर्थात उसमें जीवतंता आने लगती है और जिसमें चेतना का रूप दिखाई नहीं देता, उसमें भी अंकुरण होने लगता है, अर्थात बसंत के आगमन से पूरे वातावरण में नया उल्लास व जोश आने लगता है।

आदमी जब दशाश्वमेघ घाट पर जाता है, तो गंगा के निरन्तर स्पर्श से घाट का पत्थर भी मुलायम हो जाता है अर्थात हमारे मन में व्याप्त कठोरता भी आस्था व भक्ति से मुलायम होने लगती है। यहाँ घाट की सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखें भी अजीब सी चमक से भरी रहती हैं। भिखारियों के कटोरों का एकदम खालीपन एक विचित्र सी चमक से भरा हुआ दिखई देता है। अर्थात् अब उनके खाली कटोरे भी दान-दक्षिणा से लबालब भर जायेंगे।

विशेष : यहाँ कवि ने बनारस शहर का सजीव चित्रण किया है।

काव्य सौंदर्य :

1. खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग किया है।

2. मुक्त छंद की रचना है।

3. 'बैठे बंदरों' और 'एक अजीब' में अनुप्रास अलंकार है।

4. और पाता ..... हो गया है' में विरोधाभास अलंकार है।

सप्रसंग व्याख्या : जो वह खड़ा है ..... विल्कुल बेखबर।

प्रसंग : कवि - 'केदारनाथ सिंह'

कविता - 'बनारस'

संदर्भ : इसमें कवि ने बनारस शहर की आस्था, विश्वास और श्रद्धा का वर्णन किया है।

व्याख्या : कवि कहता है कि बनारस जो कुछ है वह बिना किसी खंभे के सदियों से खड़ा है अर्थात लागों के मन की आस्था, श्रद्धा, विश्वास, भक्ति आदि सब कुछ बिना सहारे के अपने आप ही लोगों के जन-जीवन में रच बस गये हैं। जो दिखाई नहीं देता है, उसे राख और रोशनी के ऊँचे-ऊँचे खंभे आग के खंभे और पानी के खंभे, धुएँ के, सुगंध के और आदमी के उठे हुए हाथों के खंभे थामे हुए हैं।

बनारस शहर सदियों से किसी न देखे हुए सूर्य को अर्ध्य देता हुआ गंगा के जल में अपनी एक टाँग पर खड़ा है, अर्थात अपनी दूसरी टाँग से बिल्कुल अनजान बना हुआ। लोग गंगा स्नान करते हैं सूर्य को ईश्वर का रूप मानते हुए एक पैर पर खड़े होकर अर्ध्य देते हैं। उस समय उन्हें अपने दूसरे पैर का ध्यान नहीं होता।

यहाँ कवि यह कहना चाहता है कि इसे अन्य संस्कृतियों से न चिंता है न लगाव न द्वेष। इसलिए यह शहर अपने-आप में ही पूर्ण है। विलक्षण है अद्भुत है।

विशेष :- बनारस में एक तरफ आध्यात्मिकता का दर्शन होता है और दूसरी तरफ आधुनिकता का

काव्य सौंदर्य :

1. खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग।

2. मुक्त छंद

3. ऊँचे-ऊँचे में पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार है।

4. 'बिल्कुल बेखबर' में अनुप्रास। मानवीकर अलंकार है।

काव्य सौंदर्य : अगर ध्यान से देखो ..... और, आधा नहीं।

भाव सौंदर्य : संध्या के समय बनारस शहर को ध्यानपूर्वक देखने पर पता चलता है कि यह शहर आधा पूर्ण हैं और आधा रिक्त है। संध्या के समय मंदिरों-घाटों पर आधा बनारस शहर जल, मंत्र और फूल से भगवान की आरती करते हुए श्रद्धा-भक्ति में सराबोर हुआ दिखता है।

शिल्प सौंदर्य

1. कवि - केदारनाथ सिंह
2. कविता - बनारस
3. भाषा - खड़ी बोली
4. शैली - प्रगतिवादी
5. रस - शांत रस
6. छंद - मुक्त छंद
7. अलंकार - अनुप्रास
8. प्रतीक विधान - प्रतीकात्मकता
9. शब्द शक्ति - लक्षणा
10. शब्द चयन - तत्सम शब्दावली
11. छंद कविता - तुकान्त कविता
12. गुण - ओज गुण
13. सार - यहाँ के जीवन में अंनत दु:ख है तो उत्कट सुख भी।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : 'खाली कटोरों में बसंत का उतरना' से क्या आशय है?

उत्तर : इस कथन के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि बसंत के आने पर सारे बनारस शहर में धूल भरी आंधियाँ चलने लगती हैं वही खाली कटोरे लेकर बैठे हुए भिखारियों को यह उम्मीद होने लगती है कि बंसत आते ही अनेक तीज-त्योहार आयेंगे और

उन के खाली कटोरे दान देने वालों के दान-दक्षिणा से भर जायेंगे अर्थात् अब फिर से उनके निचाट खाली कटोरे पैसों से लबालब भर जायेंगे।

प्रश्न 2 : बनारस की पूर्णता और रिक्तता को कवि ने किस प्रकार दिखाया है?

उत्तर : बनारस की पूर्णता : बनारस में गंगा के तट पर सदा किसी न किसी त्योहार पर भारी भीड़ लगी रहती है। श्रद्धालु दूर-दूर से आकर पूजा-पाठ, स्नान-दान तथा शिव के दर्शन करते हैं और खूब दान करके पुण्य कमाते हैं। इस प्रकार यह शहर भरा रहता है।

बनारस की रिक्तता : बनारस की रिक्तता से आशय है कि दिन ढ़लते-ढ़लते अनेक श्रद्धालु अपने-अपने घरों की तरफ लौटना शुरू हो जाते हैं। शहर की अंधेरी गलियों से गंगा की तरफ जाने वाले शवों को दिखाया है जिससे शहर धीरे-धीरे खाली होता रहता है।

दिशा (कविता का परिचय)

'दिशा' बालमनोविज्ञान पर आधारित कवि केदारनाथ की एक लघु कविता है। इसमें बच्चों को निश्छलता और स्वाभाविक सरलता का अत्यन्त भावपूर्ण चित्रण हुआ है। इसमें कवि पतंग उड़ाते हुए बालक से पूछता है कि बताओ हिमालय किधर है? इस पर बालक बिना कोई विचार किए बाल सुलभ, सरलता से उत्तर देता है कि जिधर उसकी पंतग उड़ती जा रही है, हिमालय उधर ही है बालक का यह सहज उत्तर कवि को मोह लेता है। कवि सोचता है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना-अपना यथार्थ है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न (बनारस)

प्रश्न 1 : बनारस में बंसत का आगमन कैसे होता है और उसका क्या प्रभाव इस शहर पर पड़ता है?

प्रश्न 2 : बनारस में धीरे-धीरे क्या-क्या होता है? धीरे-धीरे से कवि इस शहर के बारे में क्या कहना चाहता है?

प्रश्न 3 : धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय में क्या-क्या बँधा है?

प्रश्न 4 : 'सई साँझ' में घुसने पर बनारस की किन-किन विशेषताओं का पता चलता है?

काव्य सौंदर्य:

प्रश्न 5 : (क) 'यह धीरे-धीरे होना ..... सूमचे शहर को'

(ख) 'अपनी एक टाँग पर ..... बेखबर'

दिशा

प्रश्न 1 : बच्चे का उधर-उधर कहना क्या प्रकट करता है?

प्रश्न 2 : 'मैं स्वीकार करूँ मैंने पहली बार जाना हिमालय किधर है' - प्रस्तुत पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

पाठ-5
विष्णु खरे

जीवन परिचय

जन्म व जन्मस्थान : विष्णु खरे स्वांतत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य रचनाकार हैं। इनका जन्म सन् 1940 ई. में छिंदवाड़ा, मध्यप्रदेश में हुआ था।

शिक्षा : इंदौर से 1963 में अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. किया।

कार्य : 1. अध्यापन कार्य - 1963 से 1975 तक मध्यप्रदेश तथा दिल्ली के महाविद्यालयों में अध्यापन से जुड़े।

2. लेखन कार्य : औपचारिक रूप से लेखन का आरंभ 1956 में हुआ। उन्होंने विदेशी कविताओं का हिन्दी में तथा हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद अधिक किया है।

3. **सम्पादन कार्य :**

1. 1962-63 में दैनिक 'इंदौर समाचार' में उप संपादक रहे।
2. 1966-67 में लघु-पत्रिका 'व्यास' का संपादन किया।
3. 1976-84 तक साहित्य अकादमी में उप-सचिव पद पर पदासीन रहे।
4. 1985 से 'नवभारत टाइम्स' में प्रभारी कार्यकारी संपादक के पद पर कार्य किया।
5. 1993 में जयपुर नवभारत टाइम्स के संपादक के रूप में कार्य किया।
6. इसके बाद जवाहर लाल नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय में दो वर्ष वरिष्ठ अध्येता रहे।
7. तब से वे स्वतंत्र लेखन एवं अनुवाद कार्य में रत हैं।

प्रकाशन कार्य : 1. पहला प्रकाशन टी. एस. इलियट का अनुवाद 'मरू प्रदेश और अन्य कविताएँ।' 2. एक समीक्षा पुस्तक 'आलोचना की पहली किताब' 1983 में प्रकाशित हुई।

रचनाएँ : विष्णु खरे की पहचान कविता के साथ-साथ अनुवादक रूप में रही है। इनके प्रमुख ग्रंथ हैं-

1. 'खुद अपनी आँख से'

2. 'सबकी आवाज के परदे में'

3. 'पिछला बाकी'

4. 'काल और अवधि' के दरमियान

साहित्यिक विशेषताएँ : विष्णु खरे के साहित्य में आधुनिक जीवन एंव उनसे जुड़ी समस्याएँ देखने को मिलती हैं। वे अपने काव्य द्वारा अमानवीय परिस्थितियों के विरूद्ध खड़े होकर उसे नैतिक स्वर प्रदान करते हैं। उनका काव्य स्वतंत्रता के पश्चात भारत का दर्पण है, जिसमें देश-समाज की प्रगति दिखाई गई है।

भाषा शैली : उनकी भाषा सीधी सादी एवं गंभीर भावों को एक साथ समेटे हुए है। इनकी भाषा में मुहावरों का काव्यात्मक प्रयोग हुआ है।

पुरस्कार/सम्मान :

1. फिनलैंड का 'राष्ट्रीय सम्मान' 'नाइट ऑफ दि आर्डर ऑफ दि ह्वाइट रोज'
2. 'रघुवीर सहाय सम्मान'
3. 'शिखर सम्मान'
4. हिंदी अकादमी दिल्ली का 'साहित्यकार सम्मान'
5. 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान'

एक कम

पाठ परिचय : इस कविता में 'विष्णु खरे' ने स्वतंत्रता के बाद के माहौल पर प्रकाश डाला है। स्वतंत्रता के बाद लोग ईमानदारी, राष्ट्रीय भावना से दूर हो गये और उसका स्थान भ्रष्टाचार और बेईमानी ने ले लिया। इन तरीकों को अपनाकर लोग अमीर हो गये। जिन लोगों ने इन तरीकों को नहीं अपनाया वे अपनी रोजममर्श की चीजों के लिए भी दूसरों के सामने हाथ फैलाने के लिए मजबूर हैं।

सप्रसंग व्याख्या :

तुम्हारे सामने बिलकुल ..... निश्चिंत रह सकते हो।

प्रसंग : कवि - 'विष्णु खरे'

कविता - 'एक कम'

संदर्भ : कवि इस बदले हुए महौल में ईमानदार व्यक्ति का साथ देने में अपने आपको असमर्थ पाता है।

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि बेईमान और भ्रष्टाचारियों के बीच जी रहे ईमानदार व्यक्ति के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रहा है। वह कहता है कि मैंने तुम्हारे सामने अपने आत्मसम्मान को खो दिया है। वह ईमानदार व्यक्ति की मदद नहीं कर पा रहा है। इस बात के लिए उसे शर्म आनी चाहिए किन्तु उसने उस शर्म को भी छोड़ दिया है। उसने सारी इच्छाएँ और आकांक्षओं को भी छोड़ दिया है।

अब वो किसी से मुकाबला भी नहीं करना चाहता। कवि ईमानदार व्यक्ति का विरोधी, मुकाबला करनेवाला या उनका हिस्सा बाँटनेवाला नहीं बनना चाहता। इसका अर्थ है कि उसके भीतर न तो धन कमाने की चाहत है और न ही उन्नति के रास्ते पर जाना चाहता है। कवि भिखारी अर्थात ईमानदार व्यक्ति की राह में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करना चाहता इसीलिए ईमानदार व्यक्ति उससे निश्चिंत रह सकता है।

विशेष : आजादी के बाद की स्थिति से मोह भंग हुआ है। ईमानदार और भ्रष्टाचारियों के बीच के अंतर को दिखाया गया है।

काव्य सौंदर्य

1. खड़ी बोली भाषा का प्रयोग हुआ है।
2. व्यंजना शक्ति का प्रयोग हुआ है।
3. 'नंगा-निर्लज्ज' 'हर होड़' में अनुप्रास अलंकार है।
4. शब्द चयन सटीक है।
5. इस कविता में प्रतीकात्मकता है।
6. लाक्षणिक विशेषणों का प्रयोग हुआ है।
7. छंद मुक्त कविता है।

काव्य सौंदर्य :

अब जब कोई ..... बच्चा खड़ा है।

भाव सौंदर्य : इन पंक्तियों के माध्यम से कवि यह बता रहा है कि जिन लोगों ने

स्वतंत्रता के पश्चात झूठ, छलकपट या बेईमानी का रास्ता अपना लिया वे अमीर बन गए। जो ईमानदार थे वे गरीब रह गये और इस माहौल में दूसरों के आगे हाथ फैलाने को विवश हो गये। जब कोई चाय या पच्चीस पैसे के लिए हाथ फैलाता है तो कवि यह जान लेता है कि वह कोई ईमानदार आदमी, औरत या बच्चा है। उसने बेईमानी का रास्ता नहीं अपनाया।

शिल्प सौंदर्य

1. कवि – 'विष्णु खरे'
2. कविता – 'एक कम'
3. भाषा – खड़ी बोली
4. शैली – भावात्मक
5. रस – शांत
6. छन्द – छन्द मुक्त
7. अलंकार – 'पच्चीस पैसे' ....अनुप्रास अलंकार
8. मुहावरा – 'हाथ फैलाना' – मुहावरा
9. शब्द शक्ति – व्यंजना
10. शब्द चयन – लाक्षणिकता प्रधान
11. छन्द कविता – अतुकान्त
12. गुण – माधुर्य

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : हाथ फैलाने वाले को कवि ने ईमानदार इसलिए कहा है क्योंकि ईमानदार होने के कारण उसने भ्रष्टाचार और बेईमानी को नही अपनाया जिसके कारण वह गरीब रह गया। यदि वो भी भ्रष्टाचारी होता तो वह अमीर बन जाता और उसे किसी के आगे हाथ फैलाने अर्थात भीख माँगने की जरूरत ही नहीं रहती। यह सजा उसे इसलिए मिली क्योंकि वह ईमानदार था।

प्रश्न 2 : कवि ने स्वयं को लाचार, कामचोर, धोखेबाज क्यों कहा है?

उत्तर : कवि ने स्वंय को लाचार, कामचोर, धोखेबाज इसीलिए कहा है क्योंकि वह चाहकर भी इन लोगों की कोई सहायता नहीं कर पा रहा है। कवि ऐसे भ्रष्ट और कामचोरी के वातावरण में अपने को असमर्थ महसूस कर रहा है। वह ईमानदार लोगों की सहायता तो नहीं कर पा रहा है लेकिन वह उनकी राह की बाधा भी नहीं बनना चाहता है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : 1947 के बाद भारतीय समाज में क्या परिवर्तन आया?

प्रश्न 2 : 'एक कम' कविता के माध्यम से कवि ने स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज की जीवन शैली को किस रूप में रेखांकित किया है? लिखिए।

प्रश्न 3 : बदलते परिवेश में ईमानदार व्यक्ति की छवि धूमिल होती जा रही है– क्या आप सहमत हैं?

महत्वपूर्ण व्याख्या

1. 1947 के बाद से ..... मामूली धोखेबाज

काव्य सौंदर्य

1. मैं तुम्हारा विरोधी ..... रह सकते हो।

सत्य

सप्रसंग व्याख्या :

यदि हम किसी ..... समाज जाता है इसमें।

प्रसंग : कवि – 'विष्णु खरे'

कविता – 'सत्य'

संदर्भ : इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने यह बताया है कि जो व्यक्ति दृढ़ निश्चय वाला होता है वही सत्य को पहचान सकता है।

व्याख्या : कवि कहता है कि सत्य की प्राप्ति उसी को होती है जो दृढ़ संकल्प वाला

होता है। यदि हम भी यदि युधिष्ठर के समान अडिग होते और सत्य को खोजने के लिए उसके पीछे जाते तो सत्य को भी मजबूर होकर रूकना ही पड़ता। जब सत्य रूककर पीछे पलटकर हमें देखता तो उस समय हमें महसूस होता कि सत्य हमारी ओर ही देख रहा है और वह इस तरह हमारी आँखों में देखता है जैसे वो हमें अंतिम बार देख रहा है। आज के बाद वो हमें कभी दिखाई नहीं देगा। उस समय हमें ऐसा प्रतीत होता है कि एक प्रकाश की किरण सत्य में से निकली और हमारी आत्मा में समा गई। सत्य वास्तव में दिखाई नहीं देता बल्कि यह केवल आत्मा द्वारा महसूस किया जा सकता है। सत्य आत्मा को प्रकाशित करता है।

विशेष : सत्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ निश्चय का होना आवश्यक है। सत्य को अनुभव करने पर आत्मा प्रकाशित होती है।

काव्य सौंदर्य

1. खड़ी बोली भाषा का प्रयोग किया गया है।
2. भाषा अत्यंत सरल व सहज है।
3. कविता मुक्त छंद में है।
4. यदि हम ..... पा जाते हैं, में उपमा अलंकार है।
5. सत्य का मानवीकरण किया गया है।

काव्य सौंदर्य :

हम कह नहीं ..... समाया या नहीं।

भाव सौंदर्य : इन पंक्तियों के माध्यम से कवि सत्य के बारे में बताना चाहता है। वह कहता है कि जब सत्य के भीतर से प्रकाश जैसा हमारे पास आता है तो हम कह नहीं सकते कि वो हमारे भीतर गया या नहीं क्योंकि न तो हमारे भीतर कुछ हलचल हुई, न कंपन हुआ और न ही कोई विशेष प्रकार की उर्जा को महसूस किया। इसका अर्थ यह है कि सत्य का प्रकाश हमें दिखाई नहीं देता। सत्य की पहचान आत्मा के द्वारा की जा सकती है, यह केवल अनुभव का विषय है।

शिल्प सौंदर्य

1. कवि – 'विष्णु खरे'

2. कविता – 'सत्य'

3. भाषा – खड़ी बोली

4. रस – शान्त

5. छन्द – मुक्त छंद

6. अलंकार – 1. न तो हममें ..... कोई ज्वर – दृष्टांत

2. सत्य का मानवीकरण

7. शब्द शक्ति – व्यंजना

8. शब्द चयन – लाक्षणिकता प्रधान

9. छन्द कविता – अतुकान्त

10. गुण – माधुर्य

11. शब्दावली – संस्कृत निष्ठ तत्सम शब्दावली

12. सार – सत्य चाहे हमें दृष्टि से दिखाई न दे परन्तु सत्य का का प्रकाश हमारी अंतरात्मा के द्वारा अनुभव किया जा सकता है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : सत्य की पहचान हम कैसे करें? कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : सत्य की पहचान केवल आत्मा के द्वारा की जा सकती है। सत्य के प्रति सदा ही संशय रहा है क्योंकि सत्य दिखाई नहीं देता बल्कि यह केवल महसूस किया जा सकता है। इसे पहचानने के लिए आत्मा को पवित्र और ईमानदार होना आवश्यक है तभी हम अपनी आत्मा में इसे अनुभव कर सकते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र.–1. सत्य हमसे परे क्यों और किस प्रकार हटता चला जाता है।

प्र.–2. सत्य का दिखना और ओझल होने से कवि का क्या तात्पर्य है?

प्र.–3. सत्य और संकल्प के परस्पर संबंध पर अपने विचार व्यक्त कीजिए?

प्र.-4. सत्य बोलना, सत्य सुनना, सत्य को सहन करना और सत्य का पालन करना आज के बदलते परिवेश में अत्यंत कठिन क्यों है।

अन्य महत्वपूर्ण व्याख्या

1. जब हम सत्य को ..... वे नहीं ठिठकते।

2. हम कह नहीं सकते ..... इंद्रप्रस्थ लौटते हुए।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

पाठ-6

रघुवीर सहाय

जीवन परिचय

जन्म : 9 दिसम्बर, 1924 उत्तर प्रदेश

शिक्षा : 1951 अंग्रेजी साहित्य में एम. ए.

सम्पादन कार्य

1. 'प्रतीक' पत्रिका में सहायक संपादक
2. 'आकाशवाणी' के समाचार विभाग में कार्यरत
3. 'कल्पना' पत्रिका का संपादन
4. 'दिनमान' पत्रिका का संपादन

रचनाएँ

1. **काव्य-संग्रह** - सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो-हँसों जल्दी हँसों, लोग भूल गए हैं।

पुरस्कार

1984 : साहित्य अकादमी पुरस्कार लोग भूल गए हैं - रचना पर

साहित्य विशेषताएँ

1. 'नयी कविता' के समर्थ कवि
2. जनजीवन के अनुभवों की अभिव्यक्ति
3. मानवीय पीड़ा की अभिव्यक्ति
4. अकेलेपन, असुरक्षा, फालतूपन, परायापन आदि का चित्रण

5. भयाक्रांत अनुभव की आवेगरहित अभिव्यक्ति

भाषा शैली

1. काव्य-भाषा सटीक, दो टूक और विवरण प्रधान
2. अनावश्यक शब्दों के प्रयास से बचाव
3. तद्भव (देशज) शब्दों और क्रियाओं का प्रयोग
4. बिम्बों और प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग
5. मुक्त छन्द और छन्दबद्ध कविताऐं
6. व्यग्यात्मक भाषा
7. कथा या वृतान्त का प्रयोग
8. खड़ी बोली

मृत्यु - 1990 में।

पाठ-6

रघुवीर सहाय

(क) वसन्त आया

मूलभावः इस कविता में कवि ने आधुनिक मानव के प्रकृति से संबंध टूटने पर प्रकाश डाला है। वसन्त ऋतु का आना अब अनुभव करने की अपेक्षा कैलेंडर और दफ्तर में छुट्टी के होने से जाना जाता है। कवि ने मनुष्य की आधुनिक जीवनशैली को व्यंग्य का निशाना बनाया है कि उसका प्रकृति से संबंध नहीं रह गया है। यह उसके जीवन की विडम्बना है।

प्रसंग सहित व्याख्या : और कविताएँ पढ़ते ..... कि वसन्त आया।

प्रसंग : कवि - 'रघुवीर सहाय'

कविता - 'वसंत आया'

सन्दर्भ : कवि को वसन्त का आना कैलेंडर से ज्ञात होता है। प्रकृति का सौंदर्य अब उसे आकर्षित नहीं करता। प्रकृति की उपेक्षा पर कवि व्यंग्य करते हुए कहता है कि:-

व्याख्या : वसन्त के आने का पता उसे कैलेंडर से चल गया है। कविताएँ पढ़ते रहने से उसे यह तो पता था कि वसन्त ऋतु के आने पर वनों में पलाश के वृक्ष लाल-लाल फूलों से लद जाते हैं। ये पलाश वृक्ष लाल फूलों से लदे ऐसे लगते हैं, मानों वन धधक-धधक कर लपट के साथ जल रहे हों। वसन्त में आम के वृक्ष बौर के भार से लदकर झुकने लगते हैं। वसन्त के आने पर केवल पृथ्वी के ही सभी उद्यानों में नहीं, बल्कि इन्द्र के नन्दन वन में भी विभिन्न प्रकार के सुगन्धित फूल खिल जाते हैं। फूलों का रस पीकर भँवरे व कोयल मस्त होकर अपने-अपने कार्यों का प्रदर्शन करते हैं। कवि कहता है कि मुझे नहीं पता था कि ऐसा भी दिन आएगा जब वसन्त के आने का पता कैलेंडर देखकर व कार्यालय में छुट्टी होने से लगेगा।

विशेष : यह कविता आधुनिक जीवन शैली पर व्यंग्य है।

काव्य सौन्दर्य

1. वसन्त ऋतु के समय प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन है।

2. पुनरूक्तिप्रकाश अलंकार- दहर-दहर, रंग-रस, अपना-अपना।

3. अनुप्रास अलंकार - दहर-दहर दहकेंगें, अपना-अपना।

4. बिम्बों और प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग।

5. नई कविता।

6. छन्द मुक्त रचना।

7. खड़ी बोली

8. देशज शब्दों व क्रियाओं का प्रयोग।

काव्य सौंदर्य :-

ऊँचे तरूवर से गिरे ..... फिरकी सी आई, चली गई।

काव्य सौंदर्य

(क) भाव सौंदर्य - कवि कहता है कि वसन्त के आने पर सड़कों पर ऊँचे-ऊँचे वृक्षों से बड़े-बड़े पीले पते गिरे हुए हैं। इन सूखे पत्तों पर जब पाँव पड़ते हैं, तो चरमराने की आवाज आती है। सुबह छः बजे की हवा में ऐसी ताजगी है कि जैसे वह अभी-अभी गरम पानी से स्नान करके आई हो और प्रसन्नता से खिल उठी हो। ऐसी ताजगी भरी हवा फिरकी की तरह गोल-गोल घूमती हुई आई और चली गई।

(ख) शिल्प-सौंदर्य

1. कवि - रघुवीर सहाय

2. कविता -वसन्त आया

3. भाषा - खड़ी बोली

4. शैली - भावात्मक

5. छन्द - मुक्त छन्द

6. शब्दावली - तद्भव (देशज)

7. अलंकार

    1. पुनरुक्तिप्रकाश - 'बड़े-बड़े'

    2. उपमा - 'फिरकी-सी'

3. अनुप्रास अलंकार – 'पियराए पत्ते' 'हुई हवा'

8. बिम्बयोजना – सफल बिम्बयोजना

9. छन्दकविता – अतुकान्त

10. विशेषणों का सटीक प्रयोग

11. सार – नयी कविता का प्रभाव

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : 'और कविताएँ पढ़ते रहने से ..... आम बौर आवेंगे' – में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कवि व्यंग्य करता है कि आज लोगों की जीवन-शैली ऐसी हो गई है कि मनुष्य का प्रकृति से नाता ही टूट गया है। ऋतु के बदलने पर प्रकृति में आए परिवर्तन से पता ही नहीं चलता है। वसन्त ऋतु का ज्ञान उसे कैलेंडर या छुट्टी होने पर हुआ। पुस्तकीय ज्ञान से उसे वसन्त ऋतु के सौंदर्य के बारे में पता चला। उसने कभी पलाश के फूलों का सौंदर्य नहीं देखा और न ही आम के पेड़ पर आते बौरों को देखा।

प्रश्न 2 : 'वसन्त आया' कविता में कवि की चिन्ता क्या है? उसका प्रतिपाद्य लिखिए?

उत्तर : कवि की चिन्ता यह है कि आज के मनुष्य का प्रकृति से नाता ही टूट गया है। अब ऋतुओं का आना अनुभव की बजाय कैलेंडर से जाना जाता है। कवि को वसन्त ऋतु का आना भी कैलेंडर से पता चलता है। हमारी आधुनिक जीवन शैली ने प्रकृति से प्राप्त होने वाले आनन्द से हमें दूर कर दिया है। व्यस्तता के कारण मनुष्य को प्रकृति में होने वाले परिवर्तन पता ही नही चलते। वृक्षों से गिरते पत्ते, कूकती कोयल, फूलों के खिलने, शीतल वायु के बहने व पलाश के जंगलों से मानव को कोई मतलब नहीं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : 'वसन्त आया' कविता में कवि ने मनुष्य की किस जीवन शैली को व्यंग्य का निशाना बना है और क्यों?

प्रश्न 2 : वसन्त के आगमन का प्रकृति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(ख) तोड़ो

मूलभाव : 'तोड़ो' कविता सृजन पर आधारित है। इसमें कवि सृजन के लिए चटटानों को और बंजर भूमि को तोड़ने का आह्वान करता है। वह भूमि की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने के लिए भूमि को समतल करने की बात कहता है। कवि के अनुसार जिस प्रकार पथरीली भूमि सृजन में रूकावट उत्पन्न करती है, उसी प्रकार व्यर्थ के बन्धन मानव जीवन में बाधा उत्पन्न करते हैं। कवि सृजन के पक्षधर हैं, वह कहता है कि पृथ्वी को बार-बार खोदो, तभी वह फल देगी, सृजन कार्य में लगो, तभी विकास होगा।

प्रसंग सहित व्याख्या : तोड़ो तोड़ो तोड़ो ..... गोड़ो गोड़ो गोड़ो।

प्रसंग : कवि - रघुवीर सहाय

कविता - 'तोड़ो'

सन्दर्भ : इसमें कवि मनुष्य को कहता है कि वह उपजाऊ भूमि में वृद्धि करने के लिए बंजर भमि को तोड़े। पशुओं के चरागाह के लिए छोड़ी भूमि पर खेती करे। बंजर भूमि को उपजाऊ भूमि में बदलें।

व्याख्या : कवि कहता है कि भूमि के बंजरपन को उपजाऊ पन में बदलो। पशुओं को चराने के लिए जो भूमि छोड़ी है, उसे भी खेती योग्य बनाओ। चट्टानों को तोड़-तोड़ कर भूमि को समतल करो और उस भूमि पर खेती करो। कवि कहता है कि मिटटी में रस होता है, मिटटी में बीज पड़ने पर वह उसे अंकुरित अवश्य करेगी। इसलिए चरती परती भूमि और बंजर भूमि उपजाऊ बना, उस पर खेती करो। जिस प्रकार मनुष्य तोड़-तोड़ कर बंजर भूमि को उपजाऊ बनाता है, उसी प्रकार मनुष्य को अपने मन की उदासीनता व खीज को खत्म कर सृजन कार्य में लगना है। पृथ्वी को बार-बार खोदोगे तो वह तभी फल देगी, उसी प्रकार मनुष्य अपने मन को बार-बार कुरेदेगा तभी विकास होगा।

विशेष : कवि बंजर भूमि को तोड़कर उपजाऊ भूमि में बदलने का आहवान कर रहा है तथा मनुष्य को सृजन कार्य में लगाना चाहता है।

काव्य सौंन्दर्य

1. पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार : 'गोड़ो-गोड़ो'
2. प्रयोगवादी कविता
3. सरल, सरस व सुबोध भाषा

4. खड़ी बोली

5. छन्दमुक्त रचना

6. क्रान्तिकारी विचारों की अभिव्यक्ति

7. सृजन, श्रम व पुनर्निर्माण का आह्वान

8. प्रतीकात्मक कविता

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कविता का आरम्भ 'तोड़ो तोड़ो तोड़ो' से हुआ है और अन्त 'गोड़ो गोड़ो गोड़ो' से- विचार कीजिए कि कवि ने ऐसा क्यों किया?

उत्तर : कविता का प्रारम्भ 'तोड़ो तोड़ो तोड़ो' से इसलिए हुआ है क्योंकि कवि सृजन हेतु भूमि को तैयार करने के लिए चट्टानों व बंजर भूमि को तोड़ने का आह्वान कर रहा है। कवि के अनुसार उपजाऊ भूमि को बढ़ाने के लिए हमें बंजर भूमि व चट्टानों को तोड़कर भूमि को समतल करना होगा। इसलिए कवि ने कविता का प्रारम्भ तोड़ो तोड़ो तोड़ो' से किया है। कविता का अन्त 'गोड़ो गोड़ो गोड़ो' से इसलिए किया है कि तोड़कर भूमि को समतल किया जा चुका है। अब सृजन के लिए भूमि तैयार है, इसलिए हे मानव अब श्रम करो और भूमि को खोद कर उसमें बीज डालो। सृजन के बाद ही विकास संभव है। इसलिए भूमि को खोदो।

प्रश्न 2. 'आधे आधे गाने' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर : कवि यह कहना चाह रहा है कि यदि मनुष्य के मन में अब और खीज होगी तो उसके सृजन कार्य आधे-अधुरे रह जाएंगे। मन यदि प्रसन्न होगा, उसमें कोई उदासीनता नहीं होगी, तभी मनुष्य के सभी कार्य पूर्ण होंगे। 'आधे अधूरे' कार्यों से मुक्ति पाने के लिए मनुष्य को अपने मन की खीज को दूर करना होगा।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न : 'तोड़ो' कविता में कवि को धरती और मन की भूमि में क्या-क्या समानताएँ दिखाई देती हैं?

——— • ——— • ——— • ——— • ———

पाठ-7

तुलसीदास

जीवन परिचय

जन्म व जन्म स्थान : तुलसीदास सचमुच हिन्दी साहित्य के सूर्य हैं। इनका काव्य हिन्दी साहित्य का गौरव है। तुलसीदास रामभक्ति साहित्य के प्रतिनिधि कवि हैं। इनका जन्म सन् 1532 ई. में राजापुर गांव (उत्तर प्रदेश) में हुआ था।

शिक्षा : तुलसीदास मूल नक्षत्र में पैदा हुए इसी कारण इनके माता-पिता ने इन्हें त्याग दिया। इनका बचपन परेशानी से भरा था। बाबा नरहरिदास ने बालक तुलसीदास का पालन पोषण किया और उन्हें शिक्षा-दीक्षा दी।

रामभक्ति की दीक्षा उन्होंने स्वामी रामानंद से ली और उन्हें अपना गुरु माना।

लेखन कार्य : उन्होंने चित्रकूट और काशी में रहकर अनेक काव्यों की रचना की। उन्होंने भ्रमण भी खूब किया।

रचनाएँ

1. **सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य :** रामचरित मानस
2. **सूक्ति शैली की रचना :** दोहावली
3. **सुन्दर और सरस रचनाएँ :** 1. कवितावली, 2. श्रीकृष्ण गीतावली, 3. गीतावली
4. **दार्शनिक रूप व उच्चकोटि की रचना :** विनय पत्रिका
5. रामलला नहछू
6. वैराग्य संदीपनी
7. बरवै रामायण
8. पार्वती मंगल
9. जानकी मंगल
10. रामाज्ञा प्रश्नावली

साहित्यिक विशेषताएँ : तुलसीदास जी ने अपने काव्य के द्वारा दार्शनिक, पारिवारिक, सामाजिक आदर्शों को इतनी सुन्दरता के साथ प्रतिपादित किया है कि सभी ने उन्हें 'सबसे बड़ा लोकनायक' मान लिया।

तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के माध्यम से सम्पूर्ण हिन्दू जाति और भारतीय समाज को रामभक्त बना दिया। तुलसी के काव्य में सगुण और निर्गुण का समन्वय है।

भाषा शैली : तुलसी ने अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं में रचना की है।

तुलसीदास के काव्य में कलापक्ष बहुत सुन्दर है। हिन्दी में प्रचलित सभी काव्यशैलियों का प्रयोग किया है। उन्होंने प्रबन्ध काव्यशैली और मुक्तक काव्यशैली दोनों का प्रयोग किया है।

छंद शैली : उन्होंने सभी छंद शैलियों का प्रयोग किया है, जैसे- दोहा चौपाई शैली, सोरठा, बरवै, कवित्त, सवैया शैली, छप्पय शैली आदि।

अलंकार एवं रस : अलंकारों की दृष्टि से भी उनका काव्य उच्च कोटि का है। उन्होंने सांगरूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है।

भक्ति, वीर, श्रृंगार, करुण, वात्सल्य, वीभत्स, शांत, अद्‌भुत, भयानक, रौद्र, हास्य आदि सभी रसों की धारा उनके काव्य में बही है।

मृत्यु : सन् 1623 ई. को श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन काशी के असीघाट पर तुलसीदास ने अपने प्राण त्यागे थे।

संवत् सोलह सौ असी, असि गंग के तीर।
श्रवण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तजौ शरीर।।

तुलसीदास

सप्रसंग व्याख्या

जननी निरखति ..... प्रीति सिखी सी।

प्रसंग : कवि - तुलसीदास

कविता- गीतावली।

सन्दर्भ : इसमें कवि ने राम के वन-गमन के बाद माता कौशल्या की हृदय-वेदना का सुन्दर चित्रण किया है। माँ कौशल्या राम की विविध वस्तुओं को देखकर पुत्र राम को याद करती है और दु:खी हो जाती है।

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास द्वारा रचित गीतावली से हैं। जब राम वन में चले गये तो माता कौशल्या का दु:ख और पीड़ा के कारण कैसा हाल हो गया है इसका बहुत मार्मिक चित्रण किया गया है। राम के बचपन की चीजों को देखकर उन्हें राम की याद आती है और उनकी वेदना इससे बढ़ जाती है। राम के बचपन की जूतियों और छोटे-छोटे धनुष बाण को देखकर उनका दु:ख बढ़ जाता है। वे उन्हें अपने हृदय और नेत्रों से बार-बार लगाती है। माता कौशल्या भूल जाती हैं कि राम अयोध्या में नहीं हैं, इसी भूलवश वे राम के कमरे में जाकर उन्हें प्रेमपूर्वक जगाती हैं कि उनके भाई और मित्र तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं। कभी वे कहती हैं, कि तुम अपने भाईयों और मित्रों के साथ जो भोजन तुम्हें अच्छा लगता है, वह खा लो। जब माता कौशल्या को अचानक से याद आता है कि राम तो यहाँ पर नहीं हैं, वे तो वन को निकल गये हैं, तो इस दु:ख के कारण वह एकदम से हैरान हो जाती हैं तथा उस समय उनकी स्थिति एक चित्र की तरह हो जाती है। माता कौशल्या की स्थिति उस मोरनी के समान है, जो खुश होकर नाचती है, परन्तु जब उसे अपने पैर दिखाई देते हैं तो वह दु:ख और निराशा में डूब जाती है। इस दु:ख और पीड़ा को शब्दों के माध्यम से नहीं कहा जा सकता।

विशेष : माता कौशल्या की अर्धविक्षिप्तावस्था का सुन्दर चित्रण किया गया है।

काव्य सौन्दर्य

1. ब्रज भाषा का सुन्दर प्रयोग किया गया है।
2. वात्सल्य रस का प्रयोग है।

3. 'चकि चित्रलिखी', 'जाइ जगावति', 'ज्यों जाई' में अनुप्रास अलंकार है।

4. बार-बार में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

5. 'चित्रलिखी सी', सिखी-सी' में उपमा अलंकार है।

6. इन पंक्तियों में प्रवाहमेयता व गेयता का गुण विद्यमान है।

काव्य सौन्दर्य

मातु मंदि मैं साधु सुचाली .... संबुक काली।।

भाव सौन्दर्य : भरत इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि उन्हें यह अच्छा नहीं लग रहा कि वे यह कहें कि कौन अच्छे स्वभाव का है और कौन अच्छे स्वभाव का नहीं हैं। इसका निर्णय दूसरे लोग करते हैं। अर्थात् वे अपनी माता कैकयी के लिए अपशब्दों का प्रयोग करे और स्वयं को अच्छे स्वभाव का कहें, ऐसी बातें मन में लाना भी सबसे बड़ा अपराध है। भरत स्वप्न में भी किसी को दोष नहीं देना चाहते। इसे वे उदाहरण से स्पष्ट करते हैं कि कोदव (निम्न श्रेणी का अनाज) की बाली से उत्तम अनाज प्राप्त नहीं हो सकता और काली धोंधी में भी उत्तम कोटि का मोती नहीं मिल सकता। वास्तव में मेरे दुर्भाग्य से ही मुझे यह दु:ख मिला है।

शिल्य सौन्दर्य

1. कवि - तुलसीदास

2. कविता - भरत राम का प्रेम

3. भाषा - अवधी

4. शेली - दोहा-चौपाई शैली

5. रस - करुण रस

6. छन्द - छन्दबद्ध (चौपाई-दोहा)

7. अलंकार - 1. 'मातु मंदि', 'साधु सुचाली', 'कोटि कुचाली' -अनुप्रास अलंकार।

2. मुकुता ..... काली - दृष्टांत अलंकार।

8. शब्द चयन : लाक्षणिकता प्रधान।

9. छंद कविता - तुकान्त।

10. गुण - माधुर्य गुण।

11. सार - भ्रातृ प्रेम की आदर्श प्रस्तुति।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'महि सकल अनरथ कर मूला' पंक्ति द्वारा भरत के विचारों, भावों का स्पष्टीकरण कीजिए?

उत्तर : इस पंक्ति से यह स्पष्ट होता है कि इस पृथ्वी पर होने वाले सभी गलत कार्यों के लिए वह (भरत) स्वयं को दोषी स्वीकार करते हैं। उन्होंने राम के वनवास के लिए अपनी माँ कैकयी को जिम्मेदार माना था किन्तु बाद में इसके लिए उन्हें पश्चाताप होता है। उन्हें लगता है कि माँ के लिए जो कठोर वचनों का प्रयोग किया है, वह गलत है। इसके लिए वह स्वयं को अपराधी मानते हैं और खेद प्रकट करते हैं। इससे पता चलता है कि भरत कितने विशाल हृदय वाले हैं।

प्रश्न 2. 'रहि चकि चित्रलिखी सी' पंक्ति का मर्म अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस पंक्ति का अर्थ यह है कि जब माता कौशल्या को राम की याद आती है तो उनकी स्थिति एक चित्र के समान हो जाती है जो हिलती-डुलती नहीं है। एक फोटो के समान माता कौशल्या दिखाई देती है। वे राम की वस्तुओं को देखकर हैरान थी किन्तु जैसे ही उन्हें राम के वन जाने की बात याद आती है वैसे ही एक चित्र की भांति खड़ी रह जाती है।

प्रश्न 3. गीतावली से संकलित पद 'राधौ एक बार फिरि आवौ' में निहित करुणा और संदेश को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस पंक्ति में माता कौशल्या की करुणा और संदेश निहित है। इसके माध्यम से माँ के मन की पुकार दिखाई देती है। वे अपने लिए नहीं बल्कि घोड़ों के लिए राम को अयोध्या लौटने के लिए कहती हैं। घोड़े राम के वियोग में दुर्बल होते जा रहे थे जो माँ से देखा नहीं जा रहा था। वो चाहती हैं कि राम वापिस आयें और घोड़ों को एक बार छू लें, जिससे उनमें जीने की शक्ति आ जाये।

इस पद में 'राघौ' राम के लिए प्रयोग किया गया है। इससे यह संदेश भी मिलता है कि हमें पशुओं के प्रति दया व करुणा का भाव रखना चाहिए और उन्हें किसी भी तरह पीड़ा नहीं पहुंचानी चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. 'मैं जानऊँ निज नाथ सुभाऊ' में राम के चरित्र की किन किन विशेषताओं का उल्लेख है?

प्रश्न 2. राम के प्रति अपने श्रद्धा भाव तथा अनन्य भक्ति को भरत ने किस प्रकार व्यक्त किया है?

प्रश्न 3. सब के दु:ख का कारण भरत किसे मानते हैं और क्यों?

प्रश्न 4. राम वन गमन के उपरान्त राम के शैशव काल की वस्तुओं को देखकर कौशल्या (माता) की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

अन्य महत्वपूर्ण व्याख्या

प्रश्न 1. पुलकि समीर ..... पिआसे नैन।

प्रश्न 2. भूपति मरन ..... सहावइ काहि।

अन्य महत्वपूर्ण काव्य सौंदर्य

प्रश्न 1. फरह कि कोदव ..... संबुक काली।

प्रश्न 2. पुलकि समीर ..... नेह जल बाढ़े।

प्रश्न 3. कबहुं समुझि ..... प्रीति सिखी सी।

प्रश्न 4. राघौ एक ..... बार-बार चुचकारी।

पाठ-8

मलिक मुहम्मद जायसी

जन्मः 1492 में उत्तर प्रदेश के जायस ग्राम में।

जीवन परिचय :- जायस में रहने के कारण जायसी कहलाए। हिन्दी साहित्य में मलिक मुहम्मद जायसी का नाम प्रसिद्ध है। ये भक्तिकाल के निर्गुण शक्ति धारा के सूफी शाखा के प्रतिनिधि कवि है। ये शारीरिक दृष्टि से कुरूप थे, इनका आधा शरीर टेढ़ा था।

रचनाएँः- 12 ग्रंथ बताए जाते हैं। परन्तु 7 ही उपलब्ध है।

प्रमुख रचना- 'पदमावत' - महाकाव्य

'अखरावट'

'आखिरी कलाम'

'चित्ररेखा'

'कहरनामा'

'मसलनामा'

'कन्रावत'

साहित्यिक परिचयः- जायसी सूफी काव्य धारा के प्रमुख कवि है। प्रसिद्धि का आधार 'पदमावत' महाकाव्य है। यह एक अध्यात्मिक काव्य है। इसमें लौकिक कथा के माध्यम से अलौकिक कथा का उल्लेख है। समन्वय शैली में लिखी रचना है। यहाँ हिन्दू और मुस्लिम काव्य शैली का समन्वय है। पद्मावत में रत्नसेन 'आत्मा' का पद्मावती 'परमात्मा' का हीरामन तोता 'गुरू' का, नागमती 'सांसारिक मोह-माया' का प्रतीक है।

भाषा शैली : आमबोल-चाल की लोक प्रचलित अवधी भाषा। फारसी की मसनवी शैली।

भाषा में अन्योक्ति, समासोक्ति, उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक, अनुप्रास, अलंकारों का प्रयोग।

करूण व श्रृगांर रस के दोनों पक्ष संयोग व वियोग का प्रयोग है। गाभींर्य भाव है।

मृत्युः 1542 में मृत्यु।

पाठ-8

मलिक मुहम्मद जायसी
बारहमासा

पाठ परिचय : जायसी द्वारा रचित महाकाव्य 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खंड' का एक भाग हैं इसमें नागमती के विरह का वर्णन है। नागमती चित्तौड़ के राजा रत्नसेन की पत्नी है। राजा सिंहल द्वीप की राजकुमारी 'पद्मावती' की सुन्दरता पर मुग्ध होकर उससे शादी करने के लिए नागमती को छोड़कर चला जाता है। राजा को पद्मावती के बारे में हीरामन तोते ने बताया है। यह तोता पद्मावती का तोता है। इस काव्य में कवि ने लौकिक प्रेम कथा के माध्यम से अलौकिक प्रेम को अभिव्यक्ति दी है। प्रेम द्वारा ईश्वर प्राप्ति पर बल दिया है। यहाँ रत्नसेन 'आत्मा' का प्रतीक है जो गुरु (हीरामन तोता) ज्ञान द्वारा ईश्वर की प्राप्ति के लिए (पद्मावती) चल देता है। परन्तु ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बहुत कठिन है; अतः मार्ग में सांसारिक मोह-माया (नागमती) रास्ता रोकने का प्रयास करती हैं। इस काव्य पर हिन्दी और फारसी की मसनवी शैली का प्रभाव दिखाई देता है।

प्रश्न : प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

अगहन देवस घटा ..... धुआं हम लाग।

प्रसंग : कवि - 'मलिक मुहम्मद जायसी'।

कविता - 'पद्मावत' (महाकाव्य) से 'बारहमासा'।

सन्दर्भ : इसमें कवि ने नागमती के विरह का वर्णन किया है। जिसे उसका पति पद्मावती से शादी करने के लिए छोड़कर चला जाता है।

व्याख्या : कवि नागमती के माध्यम से अगहन मास में उसके विरह का वर्णन करते हुए कहता है कि इस मास में दिन छोटा और रातें लम्बी हो गई हैं, जिससे नागमती की विरह वेदना भी लम्बी हो गई है। वह विरह में रात और दिन ऐसे जलती है, जैसे दीपक में बाती जल रही है। सर्दी में उसके लिए विरह वेदना असहनीय है। घर-घर में सब सर्दी से बचने के लिए गर्म वस्त्रों की तैयारी कर रहे हैं। अर्थात् सर्दी से बचने के लिए कपड़े सिलवा रहे हैं। पर नागमती को कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। वह शृंगार नहीं करती है, क्योंकि उसे

लगता है कि उसका रंग, रूप सौंदर्य उसके पति के साथ चला गया है और उसका पति उसे एक बार छोड़कर ऐसा गया कि वापिस नहीं आया, यदि वह वापिस आ जाता है तो उसकी खुशियाँ उसका रूप सौन्दर्य भी वापिस आ जायेगा। सर्दी भी उसकी विरह की अग्नि को शांत करने की बजाए उल्टा और बढ़ा रही है। वह विरह में ऐसे जल रही है, जैसे लकड़ी धीरे-धीरे सुलगती है और उसका यह दु:ख उसका पति नहीं जानता क्योंकि वह उसका यौवन रूपी जीवन भस्म कर रहा है।

नागमती भंवरे और कौवे के माध्यम से अपने पति को संदेश भेजती है कि यदि तुम्हें रास्ते में मेरे पति मिलें तो उनसे यह कहना कि उनकी पत्नी विरह में जल-जल कर मर रही है। उसके शरीर से जो विरह की अग्नि निकल रही है, उससे हम भी काले पड़ गए हैं।

काव्य सौन्दर्य

1. नागमती की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण है।
2. 'दूभर दुख', 'किमि काढ़ी', 'रूप-रंग', 'दु:ख-दग्ध' में अनुप्रास अलंकार है।
3. 'जरै बिरह ज्यों दीपक बाती'-उत्प्रेक्षा अलंकार।
4. भाषा - अवधी।
5. छंद - दोहा-चौपाई।
6. शैली - उदाहरण और चित्रात्मक।
7. रस - वियोग श्रृंगार।
8. फारसी की मसनवी शैली का प्रभाव।

सप्रसंग व्याख्या

फागुन पवन झकौरे ..... कंत धरै जहँ पाउ।

प्रसंग : कवि - मलिक मुहम्मद जायसी।

कविता - 'पदमावत' (महाकाव्य) से बारहमासा।

सन्दर्भ : इसमें कवि ने फागुन मास में नागमती की विरह वेदना का मार्मिक वर्णन किया है।

व्याख्या : नागमती अपनी वेदना का वर्णन करते हुए कहती है कि फागुन मास में तेज और ठंडी हवाएँ चल रही है, जिससे सर्दी चार गुना बढ़ गई है। वह वियोग के कारण बहुत

कमजोर और पीली पड़ गई है, जिससे इस माह में चलने वाली तेज हवाएँ भी वह सहन नहीं कर पा रही है। प्रकृति में पुराने पत्ते गिर गए हैं, ढाख के वन पत्ते रहित हैं। वहीं दूसरी ओर पेड़ों पर नयी कोपलें फूट रही हैं। नये पत्ते और फूल आ रहे हैं। चारों ओर वनस्पति और लोगों में फिर से उल्लास भर आया है। सब इस मास में आनन्द के साथ चाचर (फाग के माह में केवल दम्पत्ति द्वारा किया जाने वाला नृत्य) खेल रहे हैं। परन्तु नागमती को यह सब दु:ख दे रहा है क्योंकि उसका पति उसके साथ नहीं है। अत: वह किसके साथ होली खेले। वह कहती है कि यदि उसके प्रेम को उसका विरह में इस प्रकार जलना अच्छा लगता है तो वह उसकी खुशी के लिए कोई शिकायत नहीं करेगी ऐसे ही विरह में मर जाएगी। बस उसकी यही एक अन्तिम इच्छा है कि उसका पति कहाँ है, वह मरने से पहले एक बार उसके हृदय से लगना चाहती है।

उसकी एक ही इच्छा बची है कि उसका शरीर विरह की अग्नि से जलकर राख बन जाए और उसकी शरीर रूपी राख को पवन उड़ाकर उस मार्ग में ड़ाल दे, जहाँ उसके पति चरण रखें। इस प्रकार वह अपने पति को स्पर्श कर लेगी।

काव्य सौन्दर्य

1. नागमती की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण किया हैं
2. भाषा – अवधी
3. छंद – दोहा चौपाई
4. रस – वियोग श्रृंगार
5. अलंकार – उपमा, रूपक, अनुप्रास
6. प्रकृति प्रेम का सजीव चित्रण
7. प्रेम की उत्सर्ग भावना, पूर्ण समर्पण का भाव है।

प्रश्न : काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

(क) रक्त ढरा मांसू ..... आई समेटहु पंख।

भाव सौन्दर्य : कवि ने नागमती की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण किया है। विरह में उसका सारा रक्त आंसू बनकर बह रहा है। सारा मांस गल कर गिर रहा है और हड्डियाँ सूखकर शंख के समान हो गई हैं। अर्थात् वह मृत्यु को प्राप्त होने वाली है। वह सारस पक्षी

के समान मरने से पहले बस एक बार अपने पति से मिलना चाहती है कि उसका पति सारस बनकर आए उसे सम्भाल ले।

शिल्प सौन्दर्य

1. कवि – जायसी
2. कविता – बारहमासा
3. भाषा –अवधी
4. शैली – मसनवी
5. रस – वियोग श्रृंगार
6. छंद – दोहा चौपाई, वीभत्स
7. अलंकार – अतिशयोक्ति
8. छंद कविता – तुकान्त
9. गुण – माधुर्य
10. शब्द चयन – तत्सम्, तद्भव शब्दावली।
11. सार – लौकिक के माध्यम से अलौकिक का वर्णन।

(ख) नैन चुवहि ..... सर चीरू।

भाव सौन्दर्य : नागमती वियोग में तड़प रही है। वह अपने पति को दिन रात याद करते हुए रोती रहती है। उसकी आँखों से आँसू ऐसे टपक रहे हैं, जैसे माघ के महीने में होने वाली वर्षा जिसे माँहुट बोला जाता है। यह वर्षा उसे शीतलता देने की बजाए उसके विरह को ओर बढ़ा रही है। अर्थात् उसे अपने पति की ओर अधिक याद आने लगी है।

शिल्प सौन्दर्य

1. कवि – जायसी
2. कविता – बारहमासा
3. भाषा –अवधी
4. शैली – मसनवी

5. रस – वियोग शृंगार, करुण

6. छंद – दोहा चौपाई

7. अलंकार – उपमा, रूपक अतिश्योक्ति

8. छंद कविता – तुकान्त

9. गुण – प्रसाद, माधुर्य

10. शब्द चयन – तत्सम्, तद्भव शब्दावली।

11. सार – लौकिक के माध्यम से अलौकिक का वर्णन।

प्रश्न : 'जीयत खाइ मुँह नहिं छाँड़ा।'' पंक्ति के सन्दर्भ में नायिका की विरह दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर : नागमती अपने पति रत्नसेन से दूर है। वह पद्मावती से शादी करने के लिए सिंहलद्वीप चला गया है, और वापिस नहीं आया। अब उसकी केवल यही इच्छा है कि वह आकर उससे एक बार मिल ले क्योंकि उसे लगता है कि वह अब जीवित नहीं रहेगी। वियोग के कारण बहुत जल्दी मर जाएगी। उसे लगता है कि उसका यह विरह बाज पक्षी बन गया है। बाज तो मरने के बाद माँस खाता है, परन्तु उसका यह विरह रूपी बाज उसे जीते-जी खा जाएगा। यह विरह की चरमावस्था का वर्णन है, जिसमें मिलन असम्भव सा लग रहा है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न : चकवा और चकवी के उदाहरण से नागमती की किस व्यथा की अभिव्यक्ति हुई है?

पाठ-9

विद्यापति

जन्म : जन्म को लेकर मतभेद है। अधिकांश विद्वानों ने 1380 माना है।

जीवन परिचय : विद्यापति को संधिकाल का कवि माना जाता है। ये बिहार के मधुबनी जिले के बिस्पी गांव में जन्में थे। इनका परिवार विद्या और ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। ये मिथिला नरेश शिव सिँह के दरबार में राजकवि थे।

शिक्षा : ये बचपन से बहुत कुशाग्र बुद्धि के थे। ये साहित्य, संगीत, ज्योतिष, दर्शन, इतिहास, न्याय, भूगोल के विद्वान थे। इसके अलावा इन्हें कई समकालीन भाषा-उपभाषाओं का ज्ञान था।

रचनाएँ : उनकी प्रमुख रचनाएँ - 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका, 'पुरुष परीक्षा', 'भू-परिक्रमा', 'लिखनावली', 'विद्यापति पदावली'।

साहित्यिक विशेषताएँ : इन्हें संस्कृत, अपभ्रंश, मैथिली भाषाओं का ज्ञान था। ये आदिकाल और भक्तिकाल के संधि कवि हैं। इन्होंने राधाकृष्ण के प्रेम को आधार बनाकर लौकिक प्रेम को अभिव्यक्ति दी है। इनकी 'कीर्तिकला' और 'कीर्तिपताका' दरबारी संस्कृति और अपभ्रंश काव्य परम्परा के रूप में देखने को मिलती है। पदावली के पद में भक्ति और श्रृंगार है और ये पद इनकी प्रसिद्धि का आधार है। आज भी तीज-त्योहार पर इनके ये पद गाए जाते हैं।

भाषा शैली : मैथिली, अपभ्रंश और संस्कृत भाषा का प्रयोग।

अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति अलंकारों का प्रयोग करते हैं।

मुहावरेदार भाषा का प्रयोग, मिथिला, क्षेत्र के लोक व्यवहार और सांस्कृतिक अनुष्ठानों के पदों का प्रयोग किया है।

मृत्यु : 1460

पाठ-9

विद्यापति

पाठ परिचय : इस पाठ में राधा की विरह वेदना का वर्णन है। कृष्ण राधा को छोड़कर मथुरा में जा बसे हैं और एक बार उनसे मिलने गोकुल नहीं आए हैं। राधा उनके वियोग में व्याकुल हैं, उनसे अब कृष्ण के बिना रहा नहीं जाता है। उनकी विरह व्यथा का अलग-अलग पद के द्वारा वर्णन किया गया है।

प्रश्न : प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

(क) के पतिआ लए ..... कातिक मास।

सन्दर्भ : इस पद में कवि कहता है कि वर्षा ऋतु आ गई है और नायिका को अपने नायक की याद सता रही है। वह अपने प्रियतम को संदेश भेजना चाहती है।

व्याख्या : इस पद में सावन मास में नायिका की विरह वेदना का वर्णन है। कृष्ण गोकुल को छोड़कर मथुरा जा बसे हैं। राधा अपनी सखी से पूछ रही है कि ऐसा कोई नहीं है जो उसका पत्र कृष्ण के पास पहुँचा दे, जिसमें उसने अपनी विरह वेदना का वर्णन किया है कि अब उससे इतने बड़े भवन में अकेले नहीं रहा जाता है। वह कहती है कि श्रीकृष्ण जाते समय मेरा मन भी अपने साथ ले गए, इसीलिए अब यहाँ उनका मन नहीं लगता है। कृष्ण गोकुल छोड़कर मथुरा बस गए हैं और एक बार भी मुड़कर नहीं देखा, इससे उनकी बहुत बदनामी हो रही है। वह अब ओर वियोग का दुख सहन नहीं कर पा रही है।

ऐसे में कवि विद्यापति राधा को धीरज और आशा रखने को कहते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि तुम्हारा प्रेमी कार्तिक मास तक जरूर आ जाएगा।

काव्य सौन्दर्य

1. नायिका की विरह वेदना का वर्णन है।
2. रस - वियोग शृंगार।
3. भाषा - मैथिली
4. 'हरि हर' में यमक अलंकार।

5. 'धनि धरू' 'मोर मन' में अनुप्रास अलंकार।

6. छंद कविता - तुकान्त।

7. गुण - माधुर्य प्रसाद।

(ख) कुसुमित कानन ..... लखिमादेइ रमान।

प्रसंग : कवि - विद्यापति।

कविता - विद्यापति की पदावली।

सन्दर्भ : इसमें नायिका की विरह अवस्था का वर्णन है। वह विरह में दिन-प्रतिदिन कमजोर होती जा रही है।

व्याख्या : राधा की सखी कृष्ण के सामने राधा की विरह अवस्था का वर्णन करते हुए कहती है कि कमल के समान रूपवती राधा खिले हुए फूलों को देखकर अपनी आँखें बंद कर लेती है। अर्थात् ये मिलन के प्रतीक थे, जो अब विरह में उसे दु:ख पहुँचा रहे हैं। हे माधव हमारी बात सुनो, तुम्हारे प्रेम को याद करके वह बहुत दुर्बल, कमजोर हो गई है, कि यदि वह धरती पर बैठ जाती है तो उससे उठा भी नहीं जाता। वह अपनी व्याकुल दृष्टि से चारों दिशाओं में देखती रहती है, कि शायद तुम आ जाओ और निराश होकर रोने लग जाती है। तुम्हारे विरह में वह क्षण-क्षण इतनी क्षीण दुर्बल होती जा रही है, जैसे चौदस का चाँद।

विद्यापति राजा शिवसिँह के आश्रय कवि थे, अत: वे उनकी प्रशंसा में कहते हैं, कि राजा शिवसिँह विरह के प्रभाव को जानते हैं। अत: वे अपनी पत्नी लखिमादेवी के साथ रमण करते हैं।

काव्य सौन्दर्य

1. नायिका की विरह वेदना का सुन्दर चित्रण है।

2. भाषा - मैथिली।

3. रस - वियोग श्रृंगार।

4. 'धरनी धरि धनि' में अनुप्रास अलंकार है।

5. 'गुनि गनि', 'छन-छन' में वीप्सा अलंकार है।

6. विरह का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन है।

7. गुण - माधुर्य

8. शैली – चित्रात्मक।

9. भाषा सरल व सरस है।

प्रश्न : काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

(क) जनम अबधि हम ..... पथ परस न गेल।

भाव सौन्दर्य : विद्यापति नायिका के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि सच्चे प्रेम में कभी भी तृप्ति नहीं मिलती है। नायिका की सखि के पूछे जाने पर नायिका उसे बताती है कि वह जन्म-जन्मांतर से अपने प्रेमी को निहारती चली रही है, परन्तु अभी तक उसके नेत्रों को उसे देखने की इच्छा है। वह अपने प्रियतम के मीठे बोलो को सुनती आ रही है, फिर भी वह उसके लिए नवीन है। अर्थात् वह कहना चाहती है कि सच्चे प्रेम में मिलन के बाद भी अतृप्ति बनी रहती है।

काव्य सौन्दर्य

1. कवि – विद्यापति

2. कविता – विद्यापति की पदावली

3. छन्द कविता – तुकान्त

4. गुण – माधुर्य

5. भाषा – मैथिली।

6. रस – वियोग श्रृंगार।

7. 'स्रवनहि सूनल स्रुति' व 'पथ परस' में अनुप्रास अलंकार है।

8. शैली – चित्रात्मक, बिम्बात्मक।

9. प्रेम के उदात्त रूप का वर्णन है।

10. भाषा में रसात्मकता है।

प्रश्न 1 : कवि 'नयन न तिरपित भेल' के माध्यम से विरहिणी नायिका की किस मनोदशा को व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर : कवि यहाँ यह बताना चाहता है, कि सच्चे प्रेम में व्यक्ति कभी भी तृप्त नहीं होता है। नायिका भी जन्म-जन्मांतर से नायक के साथ है, फिर भी वह उससे एक क्षण के लिए भी अलग नहीं होना चाहती है और यही प्रेम का आदर्श रूप भी है। प्रेम हमेशा नवीन

रहता है। उससे तृप्त होना संभव नहीं है। यही नायिका की भी मनोदशा है।

प्रश्न 2. 'सेह पिरित अनुराग बरखानिअ बरवानिअ तिल – तिल नूतन होए' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर : कवि का आशय यह है कि प्रेम स्थिर नहीं है और यह अनुभव की चीज़ है, वर्णन की नहीं। प्रेम में प्रतिपल नवीनता आती रहती है, अर्थात् प्रेम प्रतिपल और मजबूत, गहरा और नवीन होता रहता है। अतः इसका वर्णन सम्भव नहीं है। इसे तो केवल महसूस किया जा सकता है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न : विद्यापति की विरहिणी नायिका की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

पाठ-10

केशवदास

जीवन परिचय : जन्म सन् 1555 ई. में बेतवा नदी के तट पर स्थित ओड़छा नगर में।

कार्य : केशवदास साहित्य और संगीत, धर्मशास्त्र और राजनीति, ज्योतिष और वैधक सभी विषयों के ज्ञाता थे। केशवदास की रचनाओं में उनके तीन रूप देखने को मिलते हैं।

1. आचार्य
2. महाकवि
3. इतिहासकार

आचार्य : केशवदास राजाओं के पुत्रों को शिक्षा देते थे इसलिए इन्हें आचार्य का आसन प्राप्त हुआ। आचार्य का आसन प्राप्त करने पर इन्हें संस्कृत की शास्त्रीय पद्धति को हिन्दी में प्रचलित करने की चिन्ता हुई।

महाकवि : केशवदास ने ही हिन्दी में संस्कृत की परम्परा की स्थापना की थी। केशवदास रीतिकालीन कवि (रीतिबद्ध) थे। इन्होंने एक ही रात में 'रामचंद्रचंद्रिका' रामचरितमानस की होड़ में लिख डाली थी।

इतिहासकार : उनके पहले भी रीतिग्रंथ लिखे गए थे पर व्यवस्थित और सर्वांगपूर्ण ग्रंथ सबसे पहले प्रस्तुत कर इन्होंने इतिहास बना डाला जो आने वाले कवियों के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

रचनाएँ : उनकी प्रमुख प्रमाणिक रचनाएँ हैं :

1. रसिक प्रिया
2. कवि प्रिया
3. रामचंद्र चंद्रिका
4. वीर चरित्र
5. वीर सिहं देव चरित

6. विज्ञान गीता

7. जहाँगीर जसचंद्रिका आदि।

'रतनबावनी' का रचनाकाल ठीक से पता नहीं है लेकिन उसे सबसे पहली रचना माना जाता है।

भाषा शैली : केशवदास ने ब्रज भाषा में काव्य रचना की है। बुंदेल के रहने वाले होने के कारण इनकी रचनाओं में बुंदेली शब्दों का प्रयोग हुआ है। साथ ही संस्कृत का प्रभाव भी है। इसी कारण केशव की भाषा संस्कृत के बोझ से दबी हुई दिखाई पड़ती है।

इनकी भाषा में बुंदेली शब्दों के साथ-साथ मुहावरों का प्रयोग भी हुआ है। संज्ञा सर्वनाम के रूप, कारक-चिन्हों में भी बुंदेली रूप दिखाई देता है।

केशवदास ने अलंकारों का भी बहुत अधिक प्रयोग किया है। केशव ने काव्य शैली के मुक्तक और प्रबन्ध दोनों रूपों का प्रयोग किया है। संवाद योजना के प्रयोग में माहिर है।

काव्य शास्त्रीय नियमों का कठोर पालन उनकी रचनाओं में असहज, अस्वाभाविकता और बनावटीपन की स्थिति पैदा कर देती है। इसी कारण इन्हें कठोर काव्य का प्रेत भी कहा जाता है।

मृत्यु : इनकी मृत्यु सन् 1617 ई. में हुई।

पाठ-10

केशवदास

रामचंद्रचंद्रिका
दंडक

सप्रसंग व्याख्या :

बानी जगरानी ..... तदपि नई नई।

प्रसंग : 1. कवि -केशवदास,

2. कविता - रामचंद्र चंद्रिका (दंडक)

सन्दर्भ : इसमें माँ सरस्वती की उदारता और वैभव का गुणगान किया गया है।

व्याख्या : कवि कहता है कि माँ सरस्वती की उदारता और वैभव का बखान शब्दों के द्वारा नहीं किया जा सकता। वह सदैव नयापन लिए हुए है। देवता, सिद्ध पुरुष, ऋषि-मुनि तथा तपस्वी सभी ने माँ सरस्वती की महिमा का वर्णन करना चाहा परन्तु कोई भी इसमें सफल नहीं हो सका है। आज तक कोई उसका गुणगान न कर सका है, न कर सकता है और न कोई कर सकेगा। चार मुख वाले ब्रह्मा (पत्ति), पाँच मुख वाले शिव (पुत्र) और छह मुख वाले कार्तिकेय (नाती) भी उनकी महिमा का बखान नहीं कर पाये। माँ सरस्वती की उदारता प्रतिक्षण बदलकर नया रूप धारण कर लेती है। अतः उनकी महिमा का वर्णन करना संभव नहीं है।

विशेष : माँ सरस्वती की उदारता का वर्णन प्रभावी रूप से किया गया है।

काव्य सौन्दर्य

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है।
2. इस पद में शांत रस है।
3. प्रसाद गुण का प्रयोग हुआ है।

4. केसीदास केहू ..... अनुप्रास अलंकार

'कहि-कहि', 'नई-नई' ..... पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

5. सरस्वती की उदारता के वर्णन में अतिशयोक्ति अलंकार है।

6. भाषा में प्रवाहमेयता और गेयता का गुण है।

7. भाषा सरल व सहज है।

काव्य सौन्दर्य

पति बने ..... तदपि नई न्ई।

भाव सौन्दर्य : इन पंक्तियों के द्वारा कवि ने माँ सरस्वती की उदारता और महिमा का बखान करते हुए कहा है कि माँ सरस्वती की उदारता और महिमा का बखान करना इस मुख के माध्यम से संभव नहीं है। ब्रह्मा अपने चार मुख से शिव अपने पाँच मुख से तथा कार्तिकेय अपने छह मुख द्वारा इसकी महिमा का वर्णन पूर्ण रूप से नहीं कर सके हैं। इसका कारण यह है कि माँ सरस्वती की उदारता और महिमा नित्य नया रूप धारण कर लेती है अर्थात् बढ़ती ही जाती है।

शिल्प सौन्दर्य

1. कवि -केशवदास
2. कविता - रामचंद्रचंद्रिका (दंडक)
3. भाषा - ब्रज भाषा
4. रस - शांत रस
5. छन्द छंदबद्ध (दंडक)
6. अलंकार - 1. 'नई-नई' - पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

   2. अतिश्योक्ति अलंकार

   3. ब्याजस्तुति अलंकार
7. शब्द चयन - लाक्षणिकता प्रधान।

8. छन्द कविता – तुकान्त।

9. गुण – प्रसाद

10. सार – माँ सरस्वती की उदारता और महिमा का गुणगान किया गया है। जो नित्य बढ़ती ही जाती है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न : माँ सरस्वती की उदारता किसी से भी क्यों नहीं बखानी गई?

प्रश्न : चार मुख, पाँच मुख और षटमुख किन्हें कहा गया है? उनका देवी सरस्वती से क्या सम्बन्ध है।

लक्ष्मण

सप्रसंग व्याख्या :

जब जाति फटी ..... जटी पंचवटी।

प्रसंग : 1. कवि – केशवदास

2. कविता : रामचंद्र चंद्रिका (लक्ष्मण)

सन्दर्भ : इसमें कवि ने पंचवटी के महत्व व सौन्दर्य का सुन्दर वर्णन किया है।

व्याख्या : इस छंद में कवि ने लक्ष्मण और उर्मिला के संवाद द्वारा पंचवटी के सात्विक वातावरण का चित्रण किया है। कवि कहता है कि पंचवटी के नजदीक पहुँचते ही व्यक्ति के सभी दु:ख समाप्त हो जाते हैं। इसकी अपार शोभा के कारण छल कपट वाला व्यक्ति भी सात्विक बन जाता है। यहाँ पहुँचकर व्यक्ति में से मृत्यु के प्रति डर भी समाप्त हो जाता है। यहाँ पर जीव की सभी इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं और बाधाओं का अंत हो जाता है। यहाँ योग साधना के समान आनंद प्राप्त होता है तथा सभी प्रकार के पाप खत्म हो जाते हैं। गुरु के ज्ञान की प्राप्ति होती है जिसके चारों ओर मुक्ति नटी बनकर नाच रही है। मुक्ति से जो आनंद प्राप्त होता है वह आनंद पंचवटी में चारों ओर मिलता है। इन्हीं गुणों के कारण पंचवटी शिव की जटाओं के समान कल्याणकारी है।

विशेष : पंचवटी की शोभा और पवित्रता का सुन्दर चित्रण किया गया है।

काव्य सौन्दर्य

1. ब्रज भाषा का सुन्दर प्रयोग हुआ है।
2. शांत रस का प्रयोग है।
3. प्रसाद गुण है।
4. घटी हूँ घटी ..... में यमक अलंकार।

   गुरु ज्ञान गटी ..... में रूपक अलंकार।

   मोक्ष–नदी ..... में रूपक अलंकार।
5. भाषा में प्रवाहमेयता का गुण है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : कविता में पंचवटी के किन गुणों का उल्लेख किया गया है?

उत्तर : कविता के माध्यम से पंचवटी के पवित्र सौंदर्य और महिमा का वर्णन किया है।

1. पंचवटी का प्रमुख गुण यह है कि यहाँ पहुँचते ही जीव के सभी दुःख समाप्त हो जाते हैं।
2. जिस व्यक्ति में छलकपट की भावना होती है, पंचवटी के प्रभाव से वह समाप्त हो जाती है और जीव सात्विक बन जाता है।
3. पंचवटी की अपार शोभा को देखकर लोगों के सुखों में वृद्धि होती है।
4. यहाँ पहुँचकर व्यक्ति के पाप समाप्त हो जाते हैं और मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

   इन्हीं गुणों के कारण पंचवटी शिव के समान कल्याणकारी है।

प्रश्न 2 : निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए।

अध ओध ..... गुरुज्ञान गटी।

उत्तर : इस पंक्ति के द्वारा पंचवटी की महिमा और सौंदर्य का वर्णन किया गया है। इस पंक्ति में कहा गया है कि पंचवटी में इतनी पवित्रता है कि यहाँ आकर हर व्यक्ति पापों के बंधन से छुटकारा प्राप्त करता है और मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। यहाँ ज्ञान का भंडार

है और यहाँ का पवित्र वातावरण पापों का नाश करके पुण्य को जगाने वाला है। पंचवटी शिव के समान कल्याणकारी है।

अंगद

सप्रसंग व्याख्या :

सिंधु तरयो ..... जराइ जरी।

प्रसंग : 1. कवि – केशवदास ।

2. कविता – रामचंद्रचंद्रिका (अंगद)

सन्दर्भ : इस पद में रावण की पत्नी मंदोदरी रामचन्द्र के गुणों का वर्णन करती है।

व्याख्या : इन पंक्तियों में मंदोदरी (रावण की पत्नी) ने राम की महिमा का वर्णन किया है। वे रावण को समझाते हुए कहती हैं कि राम का दूत (हनुमान) लंका तक आ गया पर तुम लक्ष्मण रेखा तक पार नहीं कर सके। राम के वानरों ने समुद्र पर पुल बाँध दिया और तुम हनुमान को नहीं बाँध सके। मंदोदरी ने रावण से कहा कि तुमने हनुमान की पूँछ में कपड़ा बाँधकर और तेल में भिगोकर उसे जलाने की कोशिश की किन्तु वो तो नहीं जला बल्कि उसी आग से हनुमान ने सोने की लंका को जला दिया। मंदोदरी के कहने का भाव यह है कि रावण श्रीराम की महिमा को पहचाने और सीता को वापस श्रीराम के पास भेज दें।

विशेष : राम की प्रशंसा के बहाने रावण की निंदा की गई है।

काव्य सौन्दर्य

1. ब्रज भाषा का सुन्दर प्रयोग है।
2. वीर रस की प्रधानता है।
3. ओज गुण का प्रयोग हुआ है।
4. भाषा प्रवाहमय है।
5. जरी न जरी ..... यमक अलंकार।
   बाँधोई बाँधत ..... अनुप्रास अलंकार।
6. छंदबद्ध कविता है।
7. व्यंजना शक्ति का प्रयोग हुआ है।

काव्य सौन्दर्य : श्री रघुनाथ प्रताप ..... जराइ जरी।

भाव सौन्दर्य : इन पंक्तियों के माध्यम से रावण को हर क्षेत्र में मिली हार का अहसास कराया गया है। रावण श्रीराम के दूत हनुमान का कुछ भी नहीं बिगाड़ पाया जबकि हनुमान ने रावण द्वारा पूँछ में लगवाई आग से उसी की सोने की लंका को जला डाला। रावण देखता ही रह गया, कुछ भी नहीं कर सका। हनुमान की वीरता का बहुत सुन्दर वर्णन किया गया है।

शिल्प सौन्दर्य

1. कवि – केशवदास
2. कविता – रामचंद्रचंद्रिका (अंगद)
3. भाषा – ब्रज भाषा
4. रस – वीर रस
5. छन्द – छन्दबद्ध (सवैया)
6. अलंकार – 1. 'तेलनि तूलनि', 'जराई जरी', अनुप्रास अलंकार।
   2. (जरी–जली, जरी–जड़ी हुई) – यमक अलंकार।
7. शब्द शक्ति – व्यंजना
8. शब्द चयन – लाक्षणिकता प्रधान।
9. छन्द कविता – तुकान्त
10. गुण – ओज।
11. सार – राम की प्रशंसा के बहाने रावण की निंदा की गई है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : 'तेलनि तूलनि पूंछि जरी न जरी, जरी लंक जराई–जरी' के साथ कौन सी घटना जुड़ी है?

महत्वपूर्ण काव्य सौन्दर्य

सिंधु तर्‌यो ..... बाट करी।

पाठ-11

घनानंद

कवित्त - सवैया

जन्म : रीतिकालीन स्वच्छंद अथवा रीतिमुक्त काव्य धारा के श्रेष्ठ कवि घनानंद का जन्म सन् 1673 ई. में हुआ।

जाति व कार्य : ये जाति के कायस्थ थे तथा मुगल सम्राट मुहम्मद शाह रंगीला के मीर मुंशी थे। कहा जाता है कि ये दरबार की एक वेश्या सुजान से प्रेम करते थे।

इन्होंने उसी के नाम से अपने काव्य की रचना की। दरबारी इनके प्रेम और दरबार में व्याप्त प्रभाव के कारण इनसे ईर्ष्या करते थे। उन्होंने इन्हें दरबार से निकलवाने की योजना बनाई। उन्होंने राजा से घनानंद का गाना दरबार में सुनने का आग्रह किया। राजा के कहने पर इन्होंने गाना नहीं सुनाया पर सुजान के कहने पर इतनी तन्मयता से गाया कि सारा राज परिवार मंत्रमुग्ध हो गया। राजा ने इसे अपना अपमान समझकर इन्हें अपने दरबार से नहीं अपितु दिल्ली से भी निकल जाने का आदेश दिया।

दीक्षा : घनानंद सांसारिक मोह त्यागकर वृंदावन चले गये थे और निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित हो गये।

उपाधि : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इन्हें 'साक्षात रसमूर्ति' की उपाधि से अलंकृत किया है।

रचनाएँ

काव्य : सुजानहित, कृपाकंद, वियोग बेलि, इश्कलता, ब्रज विलास आदि।

इनकी रचनाओं को तीन संग्रहों में विभाजित किया गया है।

1. घनानंद कवित्त
2. संग्रह

3. घनानंद ग्रंथावली।

काव्यगत विशेषताएँ

1. प्रेमानुभूति।
2. भक्ति भावना
3. विरहानुभूति।
4. प्रकृति चित्रण।
5. रस निरुपण।
6. 'प्रेम की पीड़ा' तथा प्रेमजन्य विरह वेदना।

भाषा शैली : घनानंद की भाषा ब्रज है। वे कवित्त और सवैया छंद के अद्‌भुत कवि हैं। घनानंद के काव्य में दास्य, संख्य एवं मधुरा भक्ति का अद्‌भुत मिश्रण हैं। इनके काव्य में अभिधा, लक्षणा और व्यंजना की अधिकता है।

मृत्यु : सन् 1760 में।

पाठ–11

घनानंद

कवित्त / सवैया का सार

पाठ्यक्रम में घनानंद द्वारा रचित दो कवित्त तथा सवैये दिये गए हैं। प्रथम कवित्त में कवि ने अपनी प्रेमिका सुजान को सम्बोधित करते हुए कहा है कि वह उससे मिलने के लिए व्याकुल है। उसकी इच्छा है कि उसकी प्रेमिका एक बार अवश्य ही उसे दर्शन दे क्योंकि उसके प्राण इसी आस में अटके हुए हैं। रीतिकालीन कवि अपनी कविताओं के माध्यम से श्रीकृष्ण और राधा का वर्णन करते हैं। इस कवित्त में भी दूसरा अर्थ यही निकलता है कि सुजान शब्द यहाँ कृष्ण के लिए आया है। अर्थात् घनानन्द चाहते हैं कि मेरी भक्ति सफल हो जाये अगर प्राण निकलने से पहले सुजान (कृष्ण) उसे दर्शन दे दें।

प्रथम सवैये में कवि ने संयोग और वियोग की परिस्थितियों का वर्णन किया है। संयोग के समय में सुखद पल वियोग के क्षणों में दुखदायी बन जाते हैं। दूसरे सवैये में कवि कहते हैं कि उसने हृदय के समस्त प्रेमभावों से युक्त ऐसा प्रेम पत्र लिखा था, जो पहले कभी किसी ने नहीं लिखा था। परन्तु उसकी प्रेमिका सुजान ने उसे पढ़ा ही नहीं बल्कि उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

सप्रसंग व्याख्या : बहुत दिनान ..... सँदेसो लै सुजान को।

प्रसंग : कवि – घनानन्द।

कविता – कवित्त।

सन्दर्भ : इसमें कवि चाहता है कि उसके प्राण निकलने से पहले सुजान उसे दर्शन दे दें ताकि वह इस संसार से विदा ले सके।

व्याख्या : कवि घनानंद जी कहते हैं कि बहुत समय बीत गया है लेकिन सुजान अब भी उससे मिलने नहीं आई है। अब मेरे प्राण निकलने के लिए व्याकुल हो रहे हैं। मेरी दयनीय दशा का संदेश मेरी सुंदर व मन को भाने वाली प्रेमिका तक पहुँचा दिया जाता है और वह भी उन संदेशों को सम्मानपूर्वक अपने पास रख लेती है। परन्तु मुझसे मिलने नहीं आती है। उसकी इन झूठी बातों पर विश्वास करके कवि घनानंद उदास हो गये हैं।

घनानंद जी कहते हैं कि उपचार करने वाले आनन्द रूपी बादल अब घिरते ही नहीं हैं अर्थात् जिसको देखकर उसकी बीमारी दूर हो सके वह प्रियतम सुजान अब आती ही नहीं है। अब मेरे प्राण अधरों तक आ गये हैं और किसी भी समय निकल सकते हैं। ऐसे समय में मैं अपनी प्रेमिका सुजान तक यह संदेसा पहुँचाना चाहता हूँ कि उसके दर्शनों की अभिलाषा में ही उसके प्राण अब तक अटके हुए हैं। इसलिए वह आकर उसे दर्शन दे दें।

विशेष : 1. कवि के हृदय की व्याकुलता और वियोग का सजीव चित्रण किया गया है। 2. कवि अपनी प्रेमिका के वियोग में मरणासन्न स्थिति में पहुँच गया है।

काव्य सौन्दर्य

1. ब्रज भाषा का सुन्दर प्रयोग
2. कवित्त छंद
3. वियोग श्रृंगार रस
4. 'कवि-कवि', 'दै दै' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग हुआ है।
5. 'घिरत घन', 'कहि के', 'पयान प्रान' तथा 'चाहत चलन' में अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न : काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

(क) तब तौ छबि ..... महादुख दोष भरे।

भाव सौन्दर्य : कवि घनानंद विरहावस्था में अपनी प्रेमिका सुजान के साथ बिताए पलों को याद करते हैं कि उन संयोग के दिनों में तो मैं तुम्हारी सुन्दर छवि को देखता रहता था, परन्तु अब जब मैं उस पल के बारे में सोचता हूँ तो मेरी आँखों में आँसू निकल जाते हैं, जिनसे मुझे ऐसा लगता है कि मेरी आँखें जल रही हो। पहले केवल इसी बात से मैं जीवित था, कि तुम मेरे साथ हो और पास हो परन्तु अब मैं तुम्हारे वियोग में बिलबिला (तड़प) रहा हूँ। संयोग के वे पल आज मेरे दु:ख का कारण हैं।

शिल्प सौन्दर्य

1. कवि - घनानंद
2. कविता - सवैया
3. भाषा - ब्रज भाषा
4. शैली - भावात्मक
5. रस - वियोग श्रृंगार।
6. छंद - सवैया

7. शब्द शक्ति – व्यंजना 8. छंद कविता – तुकान्त

9. शब्द चयन – सटीक व सार्थक

10. गुण – माधुर्य

11. संयोग व वियोग का तुलनात्मक चित्रण है।

(ख) ऐसो हियो हितपत्र ..... बाँचि न देख्यौ।

भाव सौन्दर्य : कवि ने अपनी प्रेमिका सुजान को हृदय रूपी पत्र लिखा, अर्थात् यह पत्र घनानंद ने अपने हृदय की पवित्र भावनाओं से लिखा था। घनानंद सुजान से बहुत प्रेम करते थे और उनके मन में सुजान की बहुत पवित्र छवि थी। इसी पवित्र छवि को उन्होंने पत्र में लिखा था कि वे उसे कितना सच्चा प्रेम करते हैं और उनके हृदय में सुजान का क्या स्थान है। परन्तु कठोर सुजान ने ऐसे हृदय से लिखे सच्चे पत्र को एक बार पढ़ा तक नहीं अपितु बिना पढ़े ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। कवि ने यहाँ सुजान की कठोरता प्रकट की है।

शिल्प सौन्दर्य

1. कवि – घनानंद

2. कविता – सवैया

3. छंद – सवैया

4. भाषा – ब्रज

5. रस – वियोग शृंगार।

6. 'हियो हित पत्र' – रूपक अलंकार

7. घन आनन्द व सुजान – श्लेष अलंकार

8. शब्द शक्ति – व्यंजना।

9. छंद कविता – तुकान्त

10. गुण – माधुर्य

11. शैली – भावात्मक।

प्रश्न : कवि घनानंद ने किस प्रकार की पुकार से 'कान खोलि है' की बात कही है?

उत्तर : कवि ने अपनी 'कूक भरी मूकता' अर्थात् वैसी प्रकार जो बहुत करुण, मार्मिक और सीधे हृदय पर प्रभाव डालने वाली पुकार हो, उस पुकार द्वारा सुजान के कान खोलने की बात की है। कवि कहता है कि कब तक तुम बहरे बने रहने का नाटक करती रहोगी, कभी ना कभी तो मेरी दर्द भरी पुकार तुम्हें बोलने को बाध्य (विवश) करेगी।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न : घनानंद के 'हियौ हितपत्र' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताइए कि पत्र के साथ प्रेमपात्र ने क्या किया और क्यों किया?

प्रश्न : प्रथम सवैये के आधार पर बताइए कि प्राण पहले कैसे पल रहे थे और अब क्यों दु:खी हैं?

——— • ——— • ——— • ——— • ———

गद्य खंड

1.	**रामचन्द्र शुक्ल**	–	प्रेमघन की छाया स्मृति
2.	**पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी**	–	सुमिरिनी के मनके
3.	**ब्रजमोहन व्यास**	–	कच्चा चिट्ठा
4.	**फणीश्वरनाथ रेणु**	–	संवदिया
5.	**भीष्म साहनी**	–	गांधी नेहरू और यास्सेर अराफात
6.	**असगर वजाहत**	–	शेर, पहचान, चार हाथ, साझा
7.	**निर्मल वर्मा**	–	जहाँ कोई वापसी नहीं
8.	**राम विलास शर्मा**	–	यथास्मै रोचते विश्वम्
9.	**ममता कालिया**	–	दूसरा देवदास
10.	**हजारी प्रसाद द्विवेदी**	–	कुटज

पाठ-1

प्रेमघन की छाया स्मृति

लेखक : आचार्य रामचंद्र शुक्ल।

जन्म / स्थान : 1884 उत्तर प्रदेश अगोना गांव।

शिक्षा : आरम्भिक शिक्षा उर्दू, अंग्रेजी और फारसी में हुई मगर इंटरमीडिएट तक ही विधिवत पढ़ सके। बाद में स्वयं के प्रयासों से संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला और हिन्दी के प्राचीन तथा आधुनिक साहित्य का गहन गंभीर अध्ययन किया।

कार्य 1. अध्यापन कार्य : काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक रहे। हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर रहे।

2. सम्पादक कार्य : काशी नागरी प्रचारिणी सभा में हिन्दी शब्द सागर के निर्माण कार्य में सहायक सम्पादक का कार्य किया।

रचनाएँ : 1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, 2. रस-मीमांसा, 3. जायसी ग्रंथावली, 4. चिंतामणि, 5. भ्रमरगीतसार।

साहित्यिक विशेषताएँ : 1. हिन्दी साहित्य को सम्यक ढ़ंग से व्यवस्थित करना। 2. आलोचनात्मक, भावात्मक तथा मनोविकार संबंधी निबंध लिखना, सम्पादन, अनुवाद लेखन।

भाषा शैली : शुक्ल जी की गद्य शैली विवेचनात्मक है। तत्सम् तथा उर्दू शब्दों का सहज व सरल प्रयोग है। विचार प्रधान, सारगर्भित, तर्क योजना इनकी भाषा की विशेषता है।

मृत्यु : 1941

विधा : संस्मरणात्मक निबंध (स्मृति के आधार पर लिखा गया निबंध)।

मूल संवेदना : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन के आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का एक ऐसा रेखाचित्रात्मक संस्मरण उकेरना चाहते हैं जिससे पाठकों के मनोमस्तिष्क पर प्रेमघन की छवि, व्यवहार, रहन-सहन, खानपान, अभिरूचि, पहनावा,

बातचीत की शैली, चाल ढ़ाल, विनोद प्रियता तथा हिन्दी भाषा के प्रति उनके विचार आदि का सजीव चित्र अंकित हो सके।

पाठ का सार

शुक्ल जी के बचपन का साहित्यिक वातावरण : शुक्ल जी को बचपन से घर में साहित्यिक वातावरण मिला क्योंकि उनके पिता फारसी भाषा के अच्छे ज्ञाता थे तथा पुरानी हिन्दी कविता के प्रेमी थे। वे प्राय: रात्रि में घर के सब सदस्यों को एकत्रित करके 'रामचरित मानस' तथा 'रामचंद्रिका' को पढ़कर सुनाया करते थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक उन्हें अत्यंत प्रिय थे। बचपने के कारण शुक्ल जी 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक के नायक राजा हरिश्चंद्र तथा भारतेंदु हरिश्चंद्र में अन्तर समझ नहीं पाते थे।

चौधरी प्रेमघन के प्रथम दर्शन : पिता की बदली मिर्जापुर में होने पर अपने घर से प्रेमघन के घर की निकटता रहने के कारण शुक्ल जी को अपनी मित्र मंडली के साथ उन्हें प्रथम दर्शन हुए जिसमें लता-प्रतान के बीच मूर्तिवत खड़े, कंधों पर बाल बिखेरे और एक हाथ बरामदे के खम्बे पर था।

शुक्ल जी की साहित्य के प्रति बढ़ती रूचि : पं. केदारनाथ के पुस्तकालय से पुस्तकें लाकर पढ़ते-पढ़ते शुक्ल जी की रूचि हिन्दी के नवीन एवं आधुनिक साहित्य के प्रति बढ़ गई व उनकी गहरी मित्रता केदारनाथ जी से भी हो गई। अपनी युवावस्था तक आते-आते शुक्ल जी को समव्यस्क 'हिन्दी प्रेमी लेखकों' की मंडली भी मिल गई। जहाँ शुक्ल जी रहते थे वह उर्दूभाषी वकीलों मुख्तारों आदि की बस्ती थी। लेखक अपनी मित्र मंडली के हाथ जब भी कोई बातचीत करते तो उस बातचीत में 'निस्संदेह' शब्द का बहुत बार प्रयोग होता था जिसे सुन-सुनकर उस बस्ती के लोगों ने इस लेखक मंडली का नाम 'निस्संदेह मंडली' रख दिया था।

चौधरी प्रेमघन की व्यक्तिगत विशेषता : प्रेमघन जी को खासा हिन्दुस्तानी रईस बताया गया है। उनकी हर बात में तबीयतदारी टपकती थी। बसंत-पंचमी होली आदि त्यौहारों पर उनके घर में खूब नाच-रंग और उत्सव हुआ करते थे। उनकी बातें विलक्षण वक्रता (व्यंग्यात्मकता) लिए रहती थी। चौधरी साहब प्राय लोगों को बनाया करते थे। अर्थात् उनका उल्लू बनाया करते थे। वे प्रसिद्ध कवि होने के साथ-साथ भाषा के विद्वान भी थे।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : शुक्ल जी की मित्र मंडली को देखकर उर्दूभाषी लोग उन्हें किस नाम से

पुकारते थे तथा क्यों?

उत्तर : शुक्ल जी की मित्र मंडली को देखकर उर्दूभाषी लोग उन्हें 'निस्संदेह-मंडली' के नाम से पुकारने लगे थे। क्योंकि उन्हें लेखक मंडली की बोली अनोखी लगती थी। जिसमें 'निस्संदेह' शब्द का प्रयोग बहुत होता था जबकि वहाँ रहने वाले वकील, मुख्तार तथा कचहरी के अफसरों की भाषा उर्दू थी। इसलिए लेखक मंडली का नाम उन्होंने 'निस्संदेह मंडली' रख दिया था।

प्रश्न 2 : लेखक का रूझान और रूचि साहित्य की ओर कैसे बढ़ती गई?

उत्तर : शुक्ल जी की अभिरूचि हिन्दी के नवीन एवं आधुनिक साहित्य के प्रति बढ़ गई क्योंकि उन्होंने पंडित केदारनाथ के पुस्तकालय से पुस्तके ला लाकर पढ़ना आरम्भ किया। लेखक जैसे जैसे बड़ा होता गया वैसे वैसे हिन्दी के नूतन साहित्य की ओर उनका झुकाव बढ़ता गया। उनके घर में जीवन-प्रेस की पुस्तकें आती थी जिन्हें वे बड़े चाव से पढ़ते थे। ऐसे ही उनका रूझान व रूचि साहित्य के प्रति बढ़ती गई।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. लेखक के पिता की कौन-कौन सी विशेषताओं और गुणों को याद किया गया है?
2. लेखक बचपन में भारतेन्दु हरिश्चंद्र की समानता राजा हरिश्चंद्र के साथ क्यों नहीं समझ पाते थे?
3. शुक्ल जी ने प्रेमघन के व्यक्तित्व का वर्णन किस प्रकार किया है?
4. 'चौधरी साहब एक हिन्दुस्तानी रईस थे।' पाठ के उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

सप्रसंग व्याख्या : चौधरी साहब तो ..... अक्सर लगा रहता था।

प्रसंग : लेख - प्रेमघन की छाया स्मृति।

लेखक - पं. रामचंद्र शुक्ल।

सन्दर्भ : इन पंक्तियों में लेखक ने चौधरी प्रेमघन जी के घर के वातावरण का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में हिन्दुस्तानी संस्कार ही बसते थे।

व्याख्या : शुक्ल जी का आना जाना प्रेमघन जी के घर में एक लेखक के रूप में होने लगा था। प्रेमघन जी को देखकर शुक्ल जी उन्हें कौतुहल की दृष्टि से देखा करते थे। क्योंकि वे प्रेमघन जी को प्राचीन कवियों के रूप में देखते थे। वे हिन्दुस्तानी रईसों की भाँति जीवन व्यतीत करते थे। अर्थात् उनके घर में होली, वसंत पंचमी के उत्सव पूरे जोश और उल्लास के साथ मनाए जाते थे। जिसमें भारतीय संस्कृति की झलक साफ दिखाई पड़ती थी। उनकी बातचीत का ढ़ंग नौकरों के साथ अनूठा होता था।

भाषा विशेष

1. **भाषा :** खड़ी बोली, बोलचाल की भाषा शैली अपनाई है।
2. **शब्द भंडार :** तत्सम्, तद्भव शब्द चयन किया है जिसका सटीक प्रयोग किया गया है।
3. **लोकोक्ति/मुहावरा :** तबीयतदारी टपकना, काँट छाँट करना।
4. **शब्द शक्ति :** अमिधा शब्द शक्ति
5. **गुण :** प्रासाद गुण
6. **भाषा प्रवाह :** संवादों के संयोजन से विचारों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया गया है।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

पाठ-2

सुमिरिनी के मनके

लेखक : पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी।

जन्म / स्थान : 1884 राजस्थान जयपुर।

शिक्षा : उनकी रूचि बचपन से ही पढ़ने लिखने में थी। गुलेरी जी को संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, अवधी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, बंगला, अंग्रेजी, लैटिन तथा फ्रैंच भाषाओं का अच्छा ज्ञान था।

कार्य : अध्यापन कार्य : अजमेर के मेयो कॉलेज में पहले अध्यापक और फिर प्रधानाध्यापक बने। बाद में ओरिएंटल कॉलेज के प्रधानाचार्य भी रहे।

उपाधि : उन्हें 'इतिहास-दिवाकर' की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

रचनाएँ : *कहानी :* घंटाघर, सुकन्या, बुद्ध का काँटा, हीरे का हार, सुखमय जीवन तथा उसने कहा था।

साहित्यिक विशेषताएँ : संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रकांड पंडित थे। 'उसने कहा था' एक अद्‌भुत और नितांत भिन्न एवं मौलिक कहानी लिखकर एक विशिष्ट ख्याति अर्जित की थी। गुलेरी जी एक प्रतिष्ठित निबंधकार थे।

भाषा शैली : इनकी भाषाशैली अत्यंत सरल एवं सहज है। साथ ही विषय को बड़ी गंभीरता से पाठक के सामने प्रस्तुत करती है। गुलेरी जी बहुभाषा ज्ञानी थे।

विधा : *निबंध :* बालक बच गया।

मूल संवेदना : वर्तमान समाज में बच्चे रट-रट कर उत्तीर्ण हो तो जाते हैं किन्तु व्यवहारिक जीवन में उस शिक्षा को उतार नहीं पाते।

पाठ का सार

बालक की विद्वता का प्रदर्शन : विद्यालय के वार्षिकोत्सव में प्रधानाध्यापक का ठीक

पुत्र अपनी विद्वता का प्रदर्शन करता दिखता है जिसे देख पिता और अध्यापक फूले नहीं समा रहे हैं।

वृद्ध महाशय द्वारा बालक के 'बचपन' के बचने की संतुष्टि : वृद्ध महाशय द्वारा इनाम माँगने पर बच्चे के चेहरे पर एक रंग आता है एक रंग जाता है। जब 'लड्डू' शब्द उस बच्चे के मुख से सुनते हैं तब निश्चिंत होते हैं। लेखक को महसूस होता है कि 'बालक बच गया' अर्थात् उसके बचपन का भाव अभी उसमें ही निहित है क्योंकि 'लड्डू' की मांग उसके बालपन की स्वाभाविक मांग है।

दूषित शिक्षा प्रणाली की ओर संकेत : वर्तमान शिक्षा पद्धति को गुलेरी जी राष्ट्र के लिए घातक मानते हैं। धर्म हो या विज्ञान प्रकृति हो या पौराणिकता – ठोस शिक्षा बच्चे के व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है। लेखक, बचपन को जीवित रखते हुए ही बच्चों को शिक्षित करने के पक्षधर हैं।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : निबंध 'बालक बच गया' हमारी किस मानसिकता की ओर संकेत करता है?

उत्तर : इस निबंध के माध्यम से लेखक बताना चाहता है कि हम सब शिक्षा देने के नाम पर बच्चों पर कठिन से कठिन ज्ञान को उनके कच्चे मन पर थोपना चाहते हैं। उसे हम केवल प्रदर्शन का माध्यम बना देते हैं जबकि शिक्षा वास्तव में बोझ की भांति थोपी हुई नहीं होनी चाहिए। लेखक बच्चों के भीतर उनके बचपन को जीवित रखते हुए ही उन्हें शिक्षित करना चाहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. लेखक को यह कैसे अहसास हुआ कि अभी भी बालक में बचपना बचा हुआ है?
2. 'मैं यावज्जन्म लोक सेवा करूंगा।' किसने कहा था और क्यों कहा था?
3. इनाम माँगने के लिए कहने पर विलक्षण रंगों का परिवर्तन उसकी किस मन:स्थिति को प्रकट करता है?

सप्रसंग व्याख्या : उसके बचने की आशा ..... वाली खड़खड़ाहट नहीं।

प्रसंग : लेख – बालक बच गया।

लेखक – पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी।

सन्दर्भ : इन पंक्तियों में लेखक ने शिक्षा को जबरदस्ती बच्चे पर थोपने की प्रवृत्ति का विरोध करते हुए उसकी तुलना सूखी और हरी लकड़ी से की है।

व्याख्या : बालक के लड्डू माँगने पर लेखक ने राहत की साँस ली और पाया कि बच्चों में बचपन की स्वाभाविकता अभी भी शेष बची है। उसके द्वारा लड्डू की माँग वास्तव में जीवित और हरे पेड़ के पत्तों की जीवतं ध्वनि के समान है जो सभी को संगीतमय लगती है। शांति और मधुरता का आभास देती है जबकि बच्चे को कठिन से कठिन प्रश्नों का उत्तर रटवाना सूखी लकड़ी की कर्कश चरमराहट की ध्वनि समान है जिसकी चौखट बना दी जाती है और खडखड़ाहट कानों को चुभती है।

भाषा विशेष

1. भाषा – खड़ी बोली, विषयानुकूल भाषा प्रयोग।
2. शब्द भंडार – तत्सम्, तद्भव शब्दों का सटीक प्रयोग।
3. शब्द शक्ति – लक्षणा शब्द शक्ति।
4. गुण – प्रासाद गुण
5. भीष्म प्रवाह : विचारों को गति पदान करने वाली भाषा है।

घड़ी के पुर्जे

मूल संवेदना : लेखक ने घड़ी के पुर्जों के माध्यम से धर्म-विषयक बखान या उपदेश करने वालों पर व्यंग्य किया है। धर्मोपदेशक धर्म के रहस्यों को स्वयं नहीं मानते पर लंबे-लंबे उपदेश देकर धर्म रहस्यों को अपनी सम्पत्ति मानते हैं।

पाठ का सार

धर्म का प्राचीन स्वरूप : धर्माचार्य अपने पूर्वजों से प्राप्त धर्म संबंधी ज्ञान को अपने तक ही सीमित रखना चाहते हैं तथा लंबे लंबे उपदेश देकर अपनी विद्वता आम लोगों पर थोपना चाहते हैं। धर्म से जुड़ी बातों में कुछ भी नया या वैज्ञानिक नहीं लाना चाहते हैं अपितु अपने प्राचीन ज्ञान से ही जनता पर अपनी प्रतिष्ठा बनाना चाहते हैं।

घड़ी के पुर्जों के माध्यम से धर्म के रहस्य की व्याख्या : लेखक ने घड़ी के पुर्जों

को केवल समय बताने तक ही सीमित नहीं रखा है। अपितु वे साधारण व्यक्तियों को भी घड़ी को खोलकर देखने, उसके कल-पुर्जे साफ करके फिर से जोड़ने का अधिकार देना चाहते हैं। अर्थात् धर्म के गूढ़ रहस्य भी धर्मोपदेशकों तक ही सीमित न रहें, जन-सामान्य का भी उसके गहरे अर्थों को समझने का अधिकार देना चाहिए।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए घड़ी के पुर्जे का ही दृष्टांत क्यों चुना?

उत्तर : लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए घड़ी के पुर्जे का उदाहरण लिया है क्योंकि उन्होंने घड़ी को केवल समय बताने वाली मशीन समझने तक ही सीमित न रखने को कहा। घड़ी को खोलकर देखने, उसकी साफ-सफाई, कल-पुर्जों के विषय में जानकारी हासिल करने का अधिकार सबका होना चाहिए। इसी प्रकार धर्म से संबंधित बातें धर्मोपदेशकों तक ही सीमित न रहें। सभी को उसके अर्थों का बोध (ज्ञान) कराया जाना चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. घड़ीसाजी का इम्तेहान पास करने से लेखक का क्या तात्पर्य है?
2. धर्माचार्यों ने धर्म के बारे में समाज में जो धारणा फैला रखी है उसे स्पष्ट करते हुए बताइए कि आपकी दृष्टि में यह कितना उचित है?

सप्रसंग व्याख्या : धर्म का रहस्य जानने ..... कई बाते निकल आवें।

प्रसंग : लेख - घड़ी के पुर्जे।

लेखक - पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी।

सन्दर्भ : लेखक का मत है कि धर्म कुछ व्यक्ति विशेष तक ही सीमित न रहे अपितु आम लोग भी उसका भला बुरा समझ सके, जिससे समाज का समग्र विकास हो सके।

व्याख्या : धर्माचार्यों के अनुसार उनके द्वारा बताई गई धर्म की व्याख्या समाज के लिए पर्याप्त है। लेखक घड़ी का उदाहरण देकर समझाता है कि घड़ी का कार्य केवल समय बताने तक ही सीमित नहीं है। घड़ी देखना यदि नहीं आता तो किसी से भी समय पूछ सकते हो। इसी तरह धर्म की जानकारी नहीं है तो भी केवल धर्माचार्यों से ही पूछकर संतुष्ट हो जाओ।

उसकी बारीकियों में जाने की कोशिश मत करो। जिस प्रकार घड़ी से केवल समय देखने का काम करो उसके पुर्जे ठीक करने की कोशिश मत करो। उसी प्रकार धर्म की भी गहरी छानबीन मत करो।

भाषा विशेष

1. भाषा : सरल सुबोध खड़ी बोली।
2. शब्द भंडार : तत्सम, तद्भव शब्दों का प्रयोग।
3. शब्द शक्ति : लक्षणा शब्द-शक्ति।
4. गुण : प्रासाद गुण।
5. भाषा प्रवाह : विषयानुकूल भाषा प्रवाह है।

ढेले चुन लो

मूल संवेदना : यह निबंध लोक-जीवन में व्याप्त अंधविश्वासों पर व्यंग्य करता है जो हमारे समाज की गहन तथा गंभीर समस्या है। लेखक का मत है कि अपनी आँखों से देखें सत्य को ही सत्य मानना चाहिए। भविष्य की झूठी कल्पना पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

पाठ का सार

समाज में व्याप्त अंधविश्वास : अपने जीवनसाथी को चुनने के लिए सोने चाँदी तथा लोहे की पेटियाँ अथवा विभिन्न स्थानों की मिट्टी के ढ़ेलों पर विश्वास एक अंधविश्वास मात्र है, जिसका कोई वैज्ञानिक तथ्य नहीं है जो समाज के सहायक न होकर घातक सिद्ध होते हैं।

वर्तमान पर विश्वास : लेखक, मोर, कबूतर, मोहर पहाड़, चक्की इत्यादि विभिन्न उदाहरण देकर अपने विचार पुष्ठ करते हैं कि भविष्य की नींव कल्पना मात्र पर न टिकाकर सत्य की मतबूत धरती पर खड़ी करनी चाहिए। वर्तमान के सत्य को नकारना नहीं चाहिए तथा भविष्य की कल्पना को सत्य मान स्वीकारना नहीं चाहिए।

प्रश्न 1 : 'ढेले चुन लो' पाठ में किस अंधविश्वास की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर : इस पाठ में जिस विवाह-रीति का वर्णन किया गया है, वह अंधविश्वास की प्रतीक है जिसमें मिट्टी के ढेलों के आधार पर वधु को चुना जाता है। लड़की के सामने

खेत की, हवन की, चारागाह की व श्मशान की मिट्टी के ढ़ेले रखे जाते थे। लड़की जिसे उठा ले उसका भविष्य उसी के आधार पर निर्धारित होता था। यह अंधविश्वास ही था कि श्मशान की मिट्टी के ढेले उठाने पर अपशगुन होगा।

सप्रसंग व्याख्या : आज का कबूतर ..... तेजपिंड से।

प्रसंग : लेख - ढेले चुन लो।

लेखक - पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी।

सन्दर्भ : लेखक ने लोक-जीवन में व्याप्त अंधविश्वास से भरी हुई मान्यताओं का खंडन किया हैं।

व्याख्या : लेखक का मत है कि हमें वर्तमान पर विश्वास करते हुए जीना चाहिए। जो आज उपलब्ध है वही सत्य है और अपना है। कल की कल्पना में आशा करते हुए जीना व्यर्थ है। लेखक उदाहरण देकर समझा रहे हैं कि यदि आज कबूतर उपलब्ध हैं तो भविष्य में मिलने वाले मोर की कल्पना करते-करते कबूतर भी मत छोड़ देना। आज यदि पैसा हाथ में है कल स्वर्ण-मोहर की कल्पना से उन पैसों को मत छोड़ो क्योंकि आँखों देखा ही सत्य है। लाखों कोस दूर मंगल, बुद्ध, शनि ग्रह पर विश्वास न कर वर्तमान की स्थिति और सच्चाई पर विश्वास करो।

भाषा विशेष

1. भाषा - आम बोलचाल की सरल व सहज भाषा है।
2. शब्द भंडार - तद्भव शब्द प्रधान खड़ी-बोली।
3. शब्द भक्ति - लक्षणा शब्द-शक्ति।
4. गुण : प्रासाद गुण।
5. भाषा प्रवाह : विचारों को स्पष्टता देने वाली भाषा है।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

पाठ-3

कच्चा चिट्ठा

लेखक : ब्रजमोहन व्यास।

जन्म / स्थान : सन् 1886, इलाहाबाद।

शिक्षा : इन्होंने पं. गंगानाथ झा और पं. बालकृष्ण भट्ट से संस्कृत का ज्ञान प्राप्त किया। आरंभिक शिक्षा इलाहाबाद में ही प्राप्त की।

कार्य / नौकरी : नगर पालिका के कार्यपालक अधिकारी रहे। समाचार पत्र समूह 'लीडर' के जनरल मैनेजर भी रहे। इलाहाबाद में पुरातत्व संबंधी प्रयाग संग्रहालय का निर्माण किया। अनुवाद कार्य भी किया।

रचनाएँ

अनुवाद : जानकरी हरण (कुमारदास कृत)।

जीवनी : पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. मदन मोहन मालवीय।

आत्मकथा : मेरा कच्चा चिट्ठा।

साहित्यिक विशेषताएँ : उनकी इतिहास और पुरातत्व में गहरी रूचि थी जिससे संग्रहकारी प्रवृत्ति और खोजशील वृत्ति के कारण वे देश और समाज को इलाहाबाद का विशाल और प्रसिद्ध संग्रहालय भेंट कर पाए।

भाषाशैली : रोचकता, सहजता, संस्कृतनिष्ठता, लोकोक्ति और मुहावरेदार शैली का प्रयोग है। उनकी रचना के माध्यम से उनका ऐतिहासिक और सामाजिक ज्ञान सहज ही पकट होता है।

मृत्यु : सन् 1963

विधा : आत्मकथात्मक शैली।

मूल संवेदना : लेखक ने पुरातत्व संबंधी संग्रहालय का निर्माण विभिन्न ऐतिहासिक संकलन कम खर्च, ईमानदारी व मेहनत से किया है।

पाठ का सार

लेखक की पुरातत्व में संग्रहकारी प्रवृत्ति : लेखक अपनी संग्रहकारी प्रवृत्ति के कारण कहीं भी जाता था तो खाली हाथ नहीं लौटता था। पसोवा जाने पर भी लेखक को पुरातत्व से संबंधित चीजें मिली और उन्होंने उन सबको काफी कम कीमत पर खरीद लिया। इसके लिए उन्हें चाहे कोई चाल चलनी पड़ती। वे स्वयं को रोक नहीं पाते थे। जैसे चंद्रायण का व्रत करती बिल्ली को यदि चूहा दिख जाए तो उसे अपना धर्म निभाना ही पड़ता था।

लेखक का ईमानदार व्यक्तित्व : मथुरा के लाल पत्थर की बनी आठ फुट लम्बी मूर्ति (जिसका सिर नहीं था) लेखक ने खेत में काम कर रही बुढ़िया से दो रूपए में खरीदी। फ्रांस के एक व्यक्ति द्वारा जब उसका मूल्य दस हजार रूपए आंका गया तब भी लेखक का ईमान नहीं डोला क्योंकि उन्होंने पुरातत्व संबंधी वस्तुओं का संग्रह संग्रहालय के लिए किया था, व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं। ठीक इसी प्रकार शिव की मूर्ति का उठाना किंतु गांव वालों के रोष प्रकट करने पर चुपचाप वापिस भी कर देना लेखक के ईमानदार व्यक्तित्व को प्रकट करता है।

संग्रहालय का शिलान्यास : विभिन्न शिलालेख, ताम्र-मूर्तियाँ तालपत्र पर हस्तलिखित पुस्तकों के गट्ठर, सिक्के, कई हजार चित्र, मनके, मोहरें एकत्रित करने पर उनको रखने का स्थान छोटा पड़ने लगा। फलस्वरूप 'म्यूनिसिपेलिटी एक्ट' के तहत हर्जाना एकत्र कर कम्पनी बाग में एक भूखंड भवन के लिए मिल गया। बंबई के प्रसिद्ध इंजीनियर 'मास्टर साठे और भूता' उन दोनों ने मिलकर संग्रहालय के भवन का नक्शा तैयार किया। डॉ. ताराचंद ने भवन के शिलान्यास का पूरा कार्यक्रम निश्चित किया तथा प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संग्रहालय भवन का शिलान्यास किया।

लेखक संग्रहकर्ता आशिक नहीं : लेखक को पुरातत्व संबंधी पुस्तकों को खोजने का शौक है। संग्रहालय के लिए लेखक विभिन्न हथकंडे अपनाकर उन वस्तओं को औने-पौने में खरीदते थे। उसे संग्रहालय में जमा कर निश्चिंत हो जाते थे। किसी आशिक की तरह वे वस्तुएँ पाने के लिए कोई भी कीमत चुकाने को तैयार नहीं होते थे।

आभार प्रकट : लेखक अपने संग्रहालय निर्माण में, विभिन्न लोगों का आभार व्यक्त करते हैं जिसमें हैं डॉ. पन्नालाल जिन्होंने भूखंड में सहायता की, डॉ. ताराचंद, जिन्होंने शिलान्यास का पूरा कार्यक्रम निश्चित किया मास्टर साठे और भूता जिन्होंने संग्रहालय का नक्श बनाया राय बहादुर कामता प्रसाद कक्कड़, हिज हाइनेस श्री महेन्द्र सिंहजू देव नागौद नरेश तथा उनके सुयोग्य दीवान लाल भागवेन्द्र सिंह के साहयोग और सहानुभूति से संग्रहालय बन सका। उनका स्वामी भक्त अर्दली जगदेव का आभार प्रकट करते हैं।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : पसोवा की प्रसिद्धि का क्या कारण था?

उत्तर : पसोवा कौशाम्बी के पास एक बड़ा जैन-तीर्थ है। प्राचीन समय से ही वहाँ प्रतिवर्ष जैनों का एक बड़ा मेला लगता है। जिसमें दूर-दूर से आने वाले हजारों जैन यात्री शामिल होते हैं। माना जाता है कि इसी स्थान पर एक छोटी सी पहाड़ी थी जिसकी गुफा में भगवान बुद्ध व्यायाम करते थे। सम्राट अशोक ने इसी के पास एक स्तूप बनवाया था जिसमें गौतम बुद्ध के नख-खण्ड व केश रखे थे।

प्रश्न 2 : 'चंद्रायण-व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी को अपना कर्तव्य पालन करना ही पड़ता है' लेखक ने यह वाक्य किस सन्दर्भ में कहा और क्यों?

उत्तर : लेखक ने यह वाक्य स्वयं के लिए कहा है क्योंकि कौशाम्बी जाते हुए पुरातत्व संबंधी महत्वपूर्ण वस्तुएँ लेखक को मिली। लेकिन कोई व्यक्ति नहीं मिला जिससे पूछ कर वह ले लेते। वे महत्वपूर्ण वस्तुएँ लेखक को ललचा रही थी क्योंकि संग्रहालय की दृष्टि से वे अत्यंत महत्वपूर्ण थी। इसलिए लेखक चतुर्मुख शिव की मूर्ति को उठाने का मोह छोड़ नहीं पाया। लेखक का मन उस मूर्ति को देखकर ललचा गया था। ठीक उसी प्रकार जैसे बिल्ली के सामने चूहा आ जाए तो वह उसे खा ही लेती है। भले ही उसने चद्रायण-व्रत रखा हो जो अत्यंत कठिन होता है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. गुलजार मियाँ कौन थे? उन्होंने लेखक की मदद किस प्रकार की?
2. 'मैं कहीं जाता हूँ तो छूंछे हाथ नहीं लौटता'- लेखक ने ऐसा क्यों कहा?
3. पंडित ब्रजमोहन व्यास की सबसे बड़ी देन क्या है?
4. लेखक किस प्रकार की खोज में लगा रहता था?
5. श्रीनिवास जी कौन थे? उनके पास किस प्रकार की वस्तुओं का संग्रह था?
6. लेखक ने संग्रहालय का शिलान्यास नेहरू जी से किस प्रकार करवाया?

सप्रसंग व्याख्या : मैं तो केवल निमित्त मात्र ..... मैंने संन्यास ले लिया।

प्रसंग : लेख - कच्चा चिट्ठा

लेखक – ब्रज मोहन व्यास।

सन्दर्भ : लेखक द्वारा प्रयाग संग्रहालय का निर्माण करते करते इस तरह उससे जुड़ गए कि उन्हें वह अपने पुत्र के समान प्रतीत होने लगा।

व्याख्या : लेखक अपना आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि वे तो एक साधन मात्र थे, केवन बहाना भर थे। इस महान कार्य को सम्पन्न करने में जिस प्रकार सूर्य के उगने से पूर्व आकाश में फैली लालिमा (अरुण) संकेत देती है कि सूर्योदय होने वाला है वैसे ही मेरे कार्यों की सहायता से यह महान कार्य सम्पन्न हो सका। ये संग्रहालय मेरे पुत्र के समान था जिसे मैंने जन्म दिया उसका पालन पोषण कर बड़ा किया तथा उसके रहने की व्यवस्था की। अर्थात् संग्रहालय की एक-एक वस्तु का संग्रह किया उसका निर्माण कर उसके लिए विशाल भवन बनवा दिया। उसके संरक्षण हेतु अभिभावक को सौंप कर स्वयं उस कार्य से मुक्ति ली।

भाषा विशेष

1. भाषा – सरल सुबोध तथा प्रभावपूर्ण भाषा है।
2. शब्द भंडार – तत्सम् शब्दों का प्रयोग किया गया है।
3. शब्द शक्ति – लक्षणा शब्द शक्ति
4. गुण – प्रासाद गुण
5. भाषा प्रवाह – विचारों की अभिव्यक्ति हेतु सुगम भाषा का प्रयोग।

अन्य महत्वपूर्ण गद्यांश

1. मैं कहीं भी जाता हूँ ..... कर्तव्य पालन करना ही पड़ता है।
2. दूसरे की मुद्रा की झनझनाहट ..... बात ही और होती है।
3. सब कुछ सहन कर सकता ..... वह नितांत असत्य है।

पाठ-4

संवदिया

लेखक : फणीश्वर नाथ 'रेणु'।

जन्म / स्थान : सन् 1921, बिहार - पूर्णिया जिला हिंगना गांव।

शिक्षा : रेणु जी की आरम्भिक शिक्षा नेपाल में हुई।

कार्य : लेखन कार्य : 1953 से वे साहित्य सृजन के क्षेत्र में आ गए। उन्होंने कहानी, उपन्यास तथा निबंध आदि विविध साहित्यिक विधाओं में लेखन कार्य किया।

रचनाएँ : मैला आंचल, परती परिकथा, कितने चौराहे, ठुमरी, अग्निखोर, मारे गए गुलफाम, ऋण, जल-धन जन, नेपाली क्रांति।

साहित्यिक विशेषताएँ : 1. लेखक आंचलिक कथाकार है। 2. उनके साहित्य में अभावग्रस्त जनता की बेबसी एवं पीड़ा का सशक्त वर्णन है। 3. ग्रामीण समाज को नई सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की है।

भाषाशैली : 1. इनकी भाषा संवेदनशील, संप्रेषणीय और भाव प्रधान है। 2. आंचलिक शब्दों और मुहावरों का सुन्दर प्रयोग है। 3. देशज शब्दों के प्रयोग से मानवीय संवेदना की गहरी अभिव्यक्ति की है।

मृत्यु : 1977

विधा : कहानी।

मूल संवेदना : इस कहानी में मानवीय संवेदनाओं की गहन अभिव्यक्ति हुई है। जिसमें विपन्न बेसहारा तथा सहनशील बड़ी बहुरिया की असहाय स्थिति, मानसिक यातना तथा पीड़ा का मार्मिक चित्रण हुआ है।

पाठ का सार

संवदिया की विशेषता : संवदिया अर्थात संदेशवाहक जो बिना लालच के संवाद

पहुँचाने का काम करता है। संवाद के प्रत्येक शब्द, भावना, स्वर का ध्यान रखते हुए उसी ढ़ंग से जाकर सुनाना संवदिया की विशेषता है। गांव के लोग उसे निठल्ला, कामचोर तथा पेटू समझते हैं।

बड़ी बहुरिया की सामाजिक, आर्थिक व मानसिक स्थिति : बड़ी बहुरिया की सामाजिक व आर्थिक स्थिति पहले बहुत अच्छी थी। हवेली में नौकर चाकरों की भीड़ लगी रहती थी। तब बड़ी बहुरिया के हाथों में मेहंदी लगा कर ही नाइन अपने परिवार का पेट पालती थी। किंतु अब उनकी आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो चली थी कि वह अपना गुजारा उधार लेकर ही चला रही थी। इसी दुख से वह अपने मायके हरगोविन के हाथ संदेश भेजना चाहती थी क्योंकि वह इसी कारण मानसिक यातना झेल रही थी।

बड़ी बहुरिया का संदेश : अपने आर्थिक दुख के कारण वह अपने मायके हरगोविन के हाथों संदेश भेजना चाहती है कि भाई आकर उसे लिवा ले जाए। नहीं तो वह पोखरे में डूबकर जान दे देगी। बथुआसाग खा-खाकर कब तक जीऊँ? किसके लिए जीऊँ? किसलिए जीऊँ?

हरगोविन की मानसिक स्थिति : बड़ी बहुरिया के संवाद का एक-एक शब्द हरगोविन के मन में काँटे की तरह चुभ रहा था तथा वह बड़ी बहुरिया की वेदना, बेबसी, पीड़ा और दु:ख समझ रहा था जिससे उसे स्वयं मानसिक पीड़ा हो रहीथी। वह उसके मायके में कैसे संवाद सुनाएगा। गांव वाले उस पर थूकेंगे। कैसा गांव है-जहाँ लक्ष्मी जैसी बड़ी बहुरिया दु:ख भोग रही है। उसके मन में अपने गाँव तथा बड़ी बहुरिया की बहुत इज्जत थी। वह बड़ी बहुरिया को गांव छोड़कर नहीं जाने देगा।

हरगोविन का संकल्प : अपने गांव वापिस पहुँचने पर उसने बड़ी बहुरिया के पांव पकड़ लिए। माफी मांगते हुए उसका संदेश न पहुंचाने की बात कही। साथ ही स्वयं को उसका बेटा बताते हुए संकल्प लेता है कि वह उसकी माँ समान है पूरे गांव की माँ समान है। वह आग्रह करता है कि वह गांव छोड़कर न जाए। साथ ही संकल्प लेता है कि अब वह निट्ठला नहीं बैठा रहेगा। उस गांव में कोई कष्ट नहीं होने देगा। उसके सभी काम करेगा।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : बड़ी बहुरिया अपने मायके संदेश क्यों भेजना चाहती थी?

उत्तर : बड़ी बहुरिया अपने मायके संदेश इसलिए भेजना चाहती थी क्योंकि पति की मृत्यु के पश्चात् तथा भाईयों के द्वारा बंटवारा हो जाने पर वह आर्थिक रूप से असहाय व मानसिक रूप से अकेला महसूस करने लगी थी। अब कोई भी उसका ख्याल रखने वाला

नहीं था जिससे उसे ससुराल में रहने का कोई कारण समझ नहीं आ रहा था। इसलिए वह डाकखाना होते हुए भी हरगोविन के हाथ संदेश अपने मायके भेजना चाहती थी।

प्रश्न 2 : बड़ी बहुरिया का संवाद हरगोविन उसके मायके तक क्यों नहीं पहुँचा सका?

उत्तर : बड़ी बहुरिया की मानसिक पीड़ा और यातना को हरगोविन अच्छी तरह समझ रहा था। उसके मायके पहुँचकर वहाँ का खुशनुमा वातावरण व आवभगत देखकर उसकी हिम्मत नहीं हुई क्योंकि इससे हरगोविन को अपने गांव की इज्जत भी मिट्टी में मिलती दिख रही थी तथा लग रहा था कि फिर गांव की लक्ष्मी सदा के लिए गांव छोड़कर चली जाएगी। उसकी वेदना का समाचार वह किस मुँह से सुनाएगा।

प्रश्नोत्तर

1. संवदिया का शाब्दिक अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि एक अच्छे संवदिया में किन-किन गुणों का होना अनिवार्य है।
2. बड़ी हवेली से बुलावा आना संवदिया के लिए अप्रत्याशित क्यों था?
3. हवेली पहुँचने पर संवदिया ने बड़ी बहू को किस स्थिति में देखा?
4. बड़ी बहुरिया की स्थिति देखकर संवदिया की क्या हालत हुई?
5. 'संवदिया डटकर खाता है और अफर कर सोता है' से क्या तात्पर्य है?
6. जलालगढ़ पहुँचने के बाद हरगोविन ने बड़ी बहुरिया से माफी क्यों मांगी तथा उसके सामने क्या संकल्प किया?

सप्रसंग व्याख्या : बड़े भैया के मरते ही जैसे सब ..... बेचारी बड़ी बहुरिया।

प्रसंग : लेख - संवदिया

लेखक - फणीश्वर नाथ 'रेणु'

सन्दर्भ : इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक ने बड़ी बहुरिया की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण पति की मृत्यु के पश्चात् उसके भाईयों में परस्पर गृह क्लेश को बताया है।

व्याख्या : बड़ी बहुरिया के पति की मौत के बाद घर की रौनक ही चली गई। परिवार बिखर गया क्योंकि सारी सम्पत्ति का बंटवारा सभी भाईयों ने आपस में कर लिया और गांव छोड़कर चले गए। बड़ी बहुरिया के पास मायके जाने के अतिरिक्त और कोई स्थान नहीं है। बड़े भईया की मृत्यु के पश्चात् घर का जो हाल हुआ वह बहुत कष्टदायी था। वह केवल एक 'बेचारी' बनकर रह गई। उसकी भावनाओं की किसी ने कद्र नहीं की।

भाषा विशेष

1. भाषा – लोकजीवन से जुड़ी आंचलिक भाषा का प्रयोग किया है।
2. शब्द भंडार – आंचलिक शब्दों का प्रयोग।
3. लोकोक्ति/मुहावरा – खेल खत्म हो जाना, दावा करना, लीला करना।
4. शब्द शक्ति – अभिधा शब्द–शक्ति।
5. गुण – प्रासाद गुण।
6. भाषा प्रवाह – मन की पीड़ा, यातना का मार्मिक वर्णन करने की भाषा सहायक सिद्ध हुई है।

अन्य महत्वपूर्ण गद्यांश

1. संवाद पहुँचाने का काम सभी ..... मर्द को भी भूला मर्द कहेंगे।
2. संवदिया डटकर खाता है ..... एक कोने में पड़ी रहेगी।
3. हरगोविन होश में आया ..... चली तो नहीं जाओगी? बोलो।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

पाठ-5

भीष्म साहनी

लेखक परिचय : भीष्म साहनी

जन्म / स्थान : सन् 1915, रावलपिंडी।

शिक्षा : प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए., पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

कार्य : *अध्यापन कार्य* - दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन कॉलेज में, खालसा कॉलेज, अमृतसर में अध्यापन कार्य किया।

अनुवादक : विदेशी भाषा प्रकाशन गृह मास्को में अनुवादक के पद पर कार्यरत रहे वहाँ रूसी पुस्तकों का अनुवाद किया।

संपादन : नयी कहानियाँ का संपादन किया प्रगतिशील लेखक तथा अफ्रो-एशियाई लेखक संघ से संबद्ध रहे।

रचनाएँ : कहानी संग्रह : भाग्यरेखा, पहला पाठ, भटकती राख, पटरियाँ, शोभा यात्रा, निशाचर, पाली, डायन, वाडचू।

उपन्यास : झरोखे, कडियाँ, तमस, वसंती, कुंतो, नीलू, नीलिमा, नीलोफर।

नाटक : माधवी, कबीरा खड़ा बाजार में, मुआवजे, हानूश।

बाल कहानी : गुलेल का खेल।

धारावाहिक लेखन : बूँद-बूँद।

पुरस्कार : 'तमस' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार। हिन्दी में 'साहित्यिक अवदान' के लिए श्लाका सम्मान प्राप्त किया।

साहित्यिक विशेषताएँ : आम आदमी की संवेदनशीलता को और आम आदमी के चरित्र को उकेरा है। समाज के यथार्थ को चित्रित किया है।

भाषाशैली : छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग, संवादों का प्रयोग वर्णन में ताजगी ला देता है। भाषा में उर्दू और पंजाबी शब्दों की सौंधी महक भी है।

मृत्यु : सन् 2003

गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफात (भीष्म साहनी)

विधा : आत्म कथा (संस्मरण)

पाठ की मूल संवेदना : भीष्म साहनी द्वारा रचित संस्मरण गांधी, नेहरु और यास्सेर अराफात, उनकी आत्मकथा 'आज के अतीत' का एक अंश है। इसमें लेखक ने किशोरावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक अपने अनुभवों को स्मृति के आधार पर शब्दबद्ध किया है। जहाँ एक ओर गांधी और नेहरू के साथ बिताए निजी क्षणों का मार्मिक उल्लेख है वहीं यास्सेर अराफात के साथ बिताए निजी क्षणों को अंतर्राष्ट्रीय मैत्री जैसे मूल्यों के रूप में देखा जा सकता है।

गांधी जी

लेखक का गाँधी जी के साथ पहला अनुभव : लेखक अपने भाई के साथ सेवाग्राम आया हुआ था। वहीं पर गांधी जी से उनकी प्रथम मुलाकात हुई। लेखक ने जैसा चित्रों में देखा था वह हूबहू वैसे ही लग रहे थे। वह तेजी से चलते हुए लेखक से धीमें स्वर में हंसते हुए बातचीत कर रहे थे।

सेवाग्राम का वातावरण : लेखक तीन सप्ताह तक सेवाग्राम में रहा। रोज शाम को प्रार्थना होती थी। वहाँ का वातावरण देशभक्तिपूर्ण था। कस्तूरबा गांधी लेखक को अपनी माँ जैसी प्रतीत होती थी। लेखक को वहाँ कई देशभक्तों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। जैसे पृथ्वीसिंह आज़ाद, मीरा बेन, खान अब्दुल गफ्फार खान, राजेन्द्र बाबू आदि।

रोगी बालक और गांधी जी : आश्रम के किनारे एक खोखे में रहने वाले बालक के पेट में असहनीय दर्द हो रहा था। वह निरंतर गाधीजी को ही बुला रहा था। बापू ने उसका फूला हुआ पेट देखा और सारा माजरा समझ गए कि इसने गन्ने का रस अधिक मात्रा में पी लिया है। बापू ने उसे तब तक उल्टी कराई जब तक उसे आराम नहीं हो गया। इसी प्रकार वे तपेदिक के मरीज की देखभाल व उसका हालचाल भी लेते रहते थे।

जवाहरलाल नेहरु जी

नेहरू जी का व्यक्तित्व : नेहरू जी का व्यक्तित्व उदार और विनम्र तथा सरल स्वभाव था। वे देर रात तक काम करते और सुबह चरखा कातते थे। हर विषय पर उनकी पकड़ मजबूत थी। नेहरू जी के हृदय में सभी के लिए सम्मान की भावना थी। वह हर व्यक्ति के साथ नरमी से पेश आते थे। उदाहरण के लिए जब लेखक ने वार्तालाप के बहाने उन्हें

अनदेखा करते हुए अखबार नहीं दिया तब कुछ देर चुप खड़े रहने के बाद नेहरू जी ने विनम्रता से कहा कि ''यदि आपने देख लिया हो तो क्या मैं एक नज़र देख सकता हूँ?'' यह वाक्य पंडित जी के बड़प्पन का सूचक है।

धर्म के प्रति नेहरु जी के विचार : धर्म के प्रति नेहरु जी के विचार बहुत उदार थे। उनका मानना था कि अमीर-गरीब के भेदभाव के बिना ईश्वर की आराधना का अधिकार सभी को है। वे धर्म के संकीर्ण रूप के खिलाफ थे।

यास्सेर अराफात

यास्सेर अराफात का आतिथ्य प्रेम : आमंत्रण मिलने पर लेखक अफ्रो-एशियाई लेखक संघ के सम्मेलन में टयूनिस गया हुआ था। राजधानी पहुँचने पर यास्सेर अराफात अपने दो एक साथियों के साथ उनकी अगवानी करने के लिए स्वयं आए। खाने की मेज पर स्वयं फल छील-छीलकर खिला रहे थे तथा शहद की चाय भी बनाई। जब लेखक हाथ धोने गुसलखाने गया तो अराफात स्वयं तौलिया लेकर बाहर खड़े हो गए। ये घटनाएँ उनके आतिथ्य प्रेम को दर्शाती हैं।

गांधी जी के बारे में अराफात के विचार : गांधी जी अहिंसक आंदोलन के जन्मदाता थे। इसी कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी प्रसिद्धि थी। फिलीस्तीन के प्रति साम्राज्यवादी शक्तियों के अन्यायपूर्ण रवैये को अहिंसक आंदोलन द्वारा समाप्त करने में अराफात ने गांधी जी को अपना आदर्श माना। अराफात गांधी जी को भारत का ही नहीं वरन् अपना भी नेता मानते थे।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : रोगी बालक के प्रति गांधी जी का व्यवहार उनके व्यक्तित्व की किस खूबी को दर्शाता है?

उत्तर : गांधी जी बहुत ही दयालु और सहृदय व्यक्ति थे। रोगियों की सेवा करना वो अपना धर्म समझते थे। बालक के पेट में जब दर्द असहनीय हो गया तो वह सिर्फ बापू को ही बुलाने की बात कर रहा था। बापू के स्नेह और सेवा से वह ठीक हो गया। गांधी जी रोगियों की मन:स्थिति को भांपकर उनसे प्रेम का व्यवहार करते थे। जिन रोगियों के पास लोग जाने से कतराते थे जैसे तपेदिक का रोगी, वे स्वयं उनके पास जाते और देखभाल करते थे। इन उदाहरणों से गांधी जी के उच्च व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।

प्रश्न 2. फिलीस्तीन के प्रति भारत का रवैया बहुत ही सहानुभूति पूर्ण एवं समर्थन भरा क्यों था?

उत्तर : साम्राज्यवादी शक्तियाँ कई देशों पर अन्याय कर रही थी और उन्हें अपने में मिलाना चाहती थीं। भारत स्वयं फिलीस्तीन की तरह साम्राज्यवादी शक्तियों के अन्याय का शिकार था। इस अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वालों के साथ वह सहानुभूति रखता था। भारतवासी फिलीस्तीन के लोगों को सही मानते थे तथा उन्हें भी आन्दोलन के लिए समर्थन देना चाहते थे। इसी संघर्ष में यास्सेर अराफात ने गांधी जी को अपना आदर्श माना हुआ था।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. लेखक का सेवाग्राम में बिताए हुए दिनों का अनुभव लिखिए।
2. अखबार वाली घटना से लेखक पानी-पानी क्यों हो गया?
3. अराफात के आतिथ्य प्रेम की दो घटनाएँ लिखिए।
4. अराफात के आतिथ्य प्रेम से क्या प्रेरणा मिलती है। अपने अतिथि का सत्कार आप किस प्रकार करेंगे।
5. गांधी जी के बारे में अराफात के विचार लिखिए।
6. नेहरू जी द्वारा सुनाई कहानी अपने शब्दों में लिखिए।

सप्रसंग व्याख्या : मैं साथ चलने लगा ..... मुझे सूझ गया।

प्रसंग : पाठ का नाम : गांधी, नेहरु और यास्सेर अराफात

लेखक - भीष्म साहनी।

सन्दर्भ : प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने गांधी जी के साथ बिताए अपने निजी क्षणों का उल्लेख किया है। सेवाग्राम में बिताए दिनों तथा गांधी जी के साथ प्रथम अनुभव को दर्शाया है।

व्याख्या : लेखक गाँधी जी की एक झलक देखने के लिए एवं उनसे बातचीत करने के लिए प्रातः ही उनकी टोली में सम्मिलित हो जाता है। लेखक भीड़ में एक दो लोगों को पहचान लेता है। वह सबकी आँख बचाकर गांधी जी को निहार रहा था। उनके सरल स्वभाव से वह प्रभावित था। गांधी जी की धूल भरी चप्पल इस बात का परिचायक थी कि वो इतने प्रसिद्ध होने पर भी अपनी ओर ध्यान नहीं देते थे। एक साधारण जन की तरह रहते थे।

लेखक खुद को उस महान व्यक्तित्व के सामने बौना मान रहा था।

भाषा विशेष

1. गांधी जी के सरल और सहज व्यक्तित्व का प्रभावशाली चित्रण है।
2. भाषा सरल, सुबोध और सजीव है।
3. चित्रात्मक वर्णन है।
4. वर्णनात्मक शैली का सुन्दर प्रयोग है।

अन्य महत्वपूर्ण गद्यांश

1. अरे मैं उन दिनों ..... याद करने लगे थे।
2. धीरे धीरे बातों का सिलसिला ..... आदरणीय जितने आपके लिए।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

पाठ-6

असगर वजाहत

लेखक परिचय : असगर वजाहत

जन्म / स्थान : सन् 1946, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : आरंभिक शिक्षा फतेहपुर में तथा विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से हुई।

कार्य : सन् 1955-56 से ही असगर वजाहत ने लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया था। प्रारंभ में उन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य किया, बाद में वे दिल्ली में जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगे।

रचनाएँ : कहानी संग्रह : दिल्ली पहुंचना है, स्विमिंग पूल, सब कहाँ कुछ , आधी बानी, मैं हिन्दू हूँ।

नाटक : फिरंगी लौट आए, इन्ना की आवाज़, वीरगति, समिधा, जिन लाहौर नई देख्या, अकी।

नुक्कड़ नाटक : सबसे सस्ता गोश्त (संग्रह)

उपन्यास :रात में जागने वाले, पहर दोपहर, सात आसमान, कैसी आगि लगाई।

पुरस्कार / सम्मान : साहित्यकार सम्मान हिन्दी अकादमी से, सन् 2000 में सृजनात्मक लेखन के लिए संस्कृति पुरस्कार।

साहित्यिक विशेषताएँ : इन्होंने अपने लेखन में समाज के यथार्थ को जगह दी है। मजदूरों, आम जनता के शोषण को और शोषकों के अत्याचार को दर्शाया है। इन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक तथा लघुकथा तो लिखी ही है। साथ ही फिल्मों एवं धारावाहिकों के लिए पटकथा लेखन का कार्य भी किया है।

भाषाशैली : भाषा में व्यंग्य की तीक्षणता के साथ-साथ गंभीरता और सहजता के दर्शन होते हैं। मुहावरों और तद्भव शब्दों के प्रयोग के कारण सहज और सादगी से परिपूर्ण है। व्यंग्य का सहारा लेते हुए समाज, राजनीति और अव्यवस्था की सत्यता को उद्घाटित किया है।

शेर, पहचान, चार हाथ, साझा

विधा : लघु कथाएँ।

पाठ की मूल संवेदना : इन चार लघु कथाओं में लेखक ने व्यवस्था, शासन तंत्र शोषण और मजदूरों किसानों की समस्या पर करारी चोट की है।

शेर-व्यवस्था का प्रतीक

'शेर' असगर वजाहत की प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक लघु कथा है। शेर **व्यवस्था का प्रतीक** है। जो तभी तक खामोश रहती है जब तक सारी जनता उसके खिलाफ नहीं बोलती। जैसे ही व्यवस्था के खिलाफ ऊँगली उठती है, सत्ता उसे कुचलने का प्रयास करती है। सत्ता में बैठे लोग जनता को विभिन्न प्रलोभन देकर उसे अपनी ओर मिलाने का प्रयास करते हैं जबकि सच्चाई यह है कि वह केवल अपना उल्लू सीधा कर रहे होते हैं। शेर द्वारा दिए गए प्रलोभनों से गधा, लोमड़ी उल्लू और कुत्तों का समूह बिना कुछ सोचे विचारे उसके मुँह में जा रहे थे।

प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण विश्वास : भोली भाली जनता प्रमाण को अधिक महत्व न देते हुए विश्वास के आधार पर शोषक वर्ग, सत्ता वर्ग की बात मानती है। यह जानते हुए भी कि शेर एक मांसाहारी जीव है जो सभी को खाता है, सभी जानवरों को यह विश्वास दिला दिया जाता है कि अब शेर अहिंसा और सह-अस्तित्ववाद का समर्थक हो गया है और वह जानवरों का शिकार नहीं करेगा। अत: जानवर उनकी बात मानकर शेर के मुँह में स्वयं प्रवेश कर लेते हैं किन्तु लेखक जैसे कुछ लोग हैं जो प्रमाण को ही अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं जिन्हें सत्ता कुचलने का प्रयास करती है।

पहचान

राजा द्वारा दिए गए हुक्म : राजा ने अपने राज्य में उत्पादन बढ़ाने के लिए खैराती, रामू, छिद्दू आदि आम जनता को यह आज्ञा दी कि अपनी आँखें बंद करके काम करें। अपने-अपने कानों में पिघला सीसा डलवा ले, अपने होंठ सिलवा लें, क्योंकि बोलना उत्पादन में सदा बाधक रहा है। फिर उन्हें कई तरह की चीजें कटवाने और जुड़वाने का हुक्म दिया गया। इससे राजा आश्चर्यजनक रूप से रातदिन प्रगति करने लगा।

राजा की निरंकुशता का परिणाम : इस कहानी में शासनतंत्र की निरंकुशता ओर लालच को दर्शाया गया है। यदि जनता राज्य की स्थिति को अनदेखा करती है तो शासक

वर्ग निरंकुश हो जाता है। प्रगति के नाम पर समस्त साधनों को हड़प कर अपना भला करता है। ऐसे शासकवर्ग को बहरी, गूंगी और अंधी जनता पसन्द आती है जो केवल उनकी आज्ञा का पालन करे। खैराती, रामू और छिद्दू ऐसी जनता के प्रतीक हैं जो आँख मूंदकर अपने राजा पर विश्वास करती है पर जब तक वह अपनी आँखें खोलती है तब तक राजा अत्यधिक बलशाली हो चुका होता है। उसका विरोध करने की हिम्मत उनमें नहीं होती।

चार हाथ

'चार हाथ' पूंजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। मिल-मालिकों का लालच मजदूरों के शोषण का कारण बनता है। मिल-मालिक मजदूरों को मात्र एक कलपुर्जे के रूप में लेता है जो उसको लाभ देंगे। वह हर संभव प्रयास करता है कि उन मजदूरों का अस्तित्व समाप्त हो जाए और वह विरोध की स्थिति में न रहें ताकि उसके इशारे पर चलते हुए वह दुगुना काम कर सके। अधिक उत्पादन के चक्कर में वह मजदूरों के लोहे के हाथ लगाता है जिससे सारे मजदूर मर जाते हैं। अंत में उसे समझ आ जाता है कि यदि अधिक उत्पादन और मुनाफा चाहिए तो मजदूरी आधी कर दो और दुगुने मजदूर रख लो।

साझा

साझा में आजादी के बाद किसानों की बदहाली का वर्णन किया गया है। पूँजीपतियों व गाँव के प्रभुत्वशाली वर्ग की नज़र किसानों की जमीन और उत्पाद पर है। वह हर संभव प्रयास द्वारा उसे हासिल करना चाहता है। हाथी समाज के अमीर और प्रभुत्वशाली वर्ग का प्रतीक है जो किसानों की सारी मेहनत और कमाई धोखे से हड़प लेता है और किसानों को पता भी नहीं चलता। किसान सक्षम होते हुए भी लाचार रह जाता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : 'प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण है विश्वास' कहानी के आधार पर टिप्पणी करो।

उत्तर : लप्पुकथा 'शेर' से ली गई इन पंक्तियों में लेखक ने भोली-भाली जनता और धूर्त सत्ता के बारे में बताया है। लेखक यह मानने को तैयार नहीं है कि शेर के मुँह में रोजगार का दफ्तर है किंतु उसे बार-बार यह विश्वास दिलाने का प्रयास किया जाता है कि शेर का मुँह ही सब दु:खों का अंत है। शेर का मुँह हिंसा का प्रतीक है, यह सभी जानवर मानते हैं

किंतु केवल विश्वास दिलाने पर वह स्वेच्छा से उस मुँह के अंदर जा रहे हैं। आज का सत्ताधारी एवं राजनैतिक वर्ग भी सर्वप्रथम लोगों का विश्वास हासिल करता है उसके पश्चात् उनका शोषण करता है जिसका पता जनता को नहीं चलता। वह अंत तक यही सोचती हे कि सत्ता पक्ष उसके हित के लिए काम करती है।

प्रश्न 2 : गाँधी जी के तीन बंदर, आँख, कान, मुँह बंद करते थे। किंतु उनका उद्देश्य अलग था। 'पहचान' कहानी में राजा भी प्रजा को यही आदेश देता है। दोनों में क्या अंतर है - तुलना कीजिए।

उत्तर : गाँधी जी अहिंसावादी एवं परोपकारी व्यक्ति थे। उनका उद्देश्य लोगों में सद्‌गुणों का विकास करना था इसलिए बुरा मत देखो, बुरा मत बोलो और बुरा मत सुनो - ये सिद्धांत उन्होंने अपनाने की सलाह दी जिससे लोगों में, समाज में सद्‌भावना रहे। वहीं दूसरी ओर 'पहचान' कहानी का राजा निरंकुश, स्वार्थी व लालची है। वह जनता को उल्लू बनाने के लिए, सारे साधनों पर अपना एकाधिकार करने के लिए, अपनी प्रगति के लिए ये आदेश देता है। इस प्रकार के आदेश से लोगों की एकता समाप्त हो जाएगी और उनमें सोचने-समझने की शक्ति नष्ट हो जाएगी। एक देश को उन्नत और विकासशील बनाने के लिए गांधी जी का सिद्धान्त ही सही है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. सभी जानवर स्वेच्छा से शेर के मुँह में क्यों जा रहे थे?
2. राज्य की स्थिति की ओर से जनता यदि आँखें बंद कर ले तो राज्य पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा?
3. मिल मालिक किस प्रकार अपने मजदूरों का शोषण कर रहा था?
4. 'साझा' लघुकथा किस पर व्यंग्य करती है?
5. 'शेर' कहानी में हमारी व्यवस्था पर जो व्यंग्य किया गया है उसे स्पष्ट करो।
6. आप यदि मिल मालिक होते तो उत्पादन दुगुना करने के लिए क्या करते?

सप्रसंग व्याख्या : अगले दिन मैंने कुत्तों का एक ..... रोजगार का दफ्तर है।

प्रसंग : पाठ का नाम - शेर (लघुकथा)

लेखक - असगर वजाहत

सन्दर्भ : इन पंक्तियों में शेर को व्यवस्था का प्रतीक बताया गया है। लेखक ने दिखावा करने वालों, सत्ता का साथ देने वालों और चापलूसों पर भी व्यंग्य किया है।

व्याख्या : लेखक कहता है कि छोटे-छोटे जानवरों को विभिन्न प्रलोभनों में फंसकर शेर के मुँह में जाते हुए देखा है। कुत्तों का समूह जो कभी सत्ता के विरोध में नारे लगा रहा था, कभी हंस और गा रहा था, वह भी व्यवस्था से डरकर शेर के मुँह में जा रहा है अर्थात् व्यवस्था का विरोध करने वालों का ये समूह व्यवस्था की शक्ति के आगे विवश है। उनका समर्थन करने तथा उनकी आज्ञा मानने के लिए विवश है। लेखक के अनुसार ये छद्म क्रांतिकारी है जो दिखावा तो सत्ता का विरोध कर रहे हैं। किंतु भीतर ही भीतर वे दुम दबाकर उसका समर्थन भी कर रहे हैं। शेर को अहिंसावादी और सभी के अस्तित्व की रक्षा करने वाला घोषित कर दिया गया है। लेखक ने शेर के कार्यालय में जाकर उसके कर्मचारियों से रोजगार के दफ्तर के बारे में पूछा। कर्मचारी उन सुविधाभोगियों और चापलूसों का प्रतीक है जो केवल अपना ही स्वार्थ सिद्ध करते रहते हैं। कर्मचारियों के अनुसार जनता को यह विश्वास है या फिर यह विश्वास दिलाया गया है कि शेर का मुँह ही सारे सुखों को देने वाला है, अर्थात् व्यवस्था और सत्ता ही तुम्हारे सारे दुखों को दूर करेगी। सच्चाई यह है कि प्रमाण द्वारा यह सिद्ध होता है कि व्यवस्था के कारण सारी समस्याएँ हैं किन्तु लोगों ने प्रमाण से अधिक विश्वास को महत्व दिया है।

भाषा विशेष

1. लेखक ने प्रतीकों के माध्यम से व्यवस्था पर व्यंग्य किया है।
2. शेर व्यवस्था का प्रतीक है, कुत्तों का समूह झूठे क्रांतिकारियों का, कर्मचारी सुविधाभोगी चापलूसों का और छोटे जानवर आम जनता का प्रतीक है।
3. छोटे-छोटे संवादों में गहनता छिपी है।
4. भाषा सादगी से पूर्ण चिंतन प्रधान है।
5. व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग है।
6. लेखक लीक से अलग चलने वालों का प्रतीक है।

कुछ महत्वपूर्ण गद्यांश

2. मैंने देखा कि झाड़ी की ओट ..... होते-होते बचा।
3. हालाँकि खेती की हर बारीकी ..... रखवाली हो जाएगी।
4. जनता आँखें बंद ..... बढ़ गया।
5. आखिर एक दिन ..... नौकर रख लिया।

पाठ-7

निर्मल वर्मा

लेखक परिचय : निर्मल वर्मा

जन्म / स्थान : सन् 1929, शिमला (हिमाचल प्रदेश)

शिक्षा : इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से इतिहास में एम.ए. किया।

कार्य : चेकोस्लोवाकिया के प्राच्य-विद्या संस्थान प्राग के निमंत्रण पर सन् 1959 में वहाँ गए और चेक उपन्यासों तथा कहानियों का हिन्दी अनुवाद किया। हिन्दुस्तान टाइम्स तथा टाइम्स ऑफ इण्डिया के लिए यूरोप की सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समस्याओं पर लेख तथा रिपोर्ताज लिखे जो उनके निबंध संग्रहों में संकलित हैं। इसके पश्चात् (1970) भारत में आकर स्वतंत्र लेखन करने लगे।

रचनाएँ : कहानियाँ - परिंदे, जलती झाड़ी, तीन एकांत, पिछली गरमियों में, कव्वे और काला पानी, बीच बहस में, सूखा तथा अन्य कहानियाँ आदि।

उपन्यास : वे दिन, लाल टीन की छत, एक चिथड़ा सुख तथा अंतिम अरण्य। 'रात का रिपोर्टर' जिस पर सीरियल तैयार किया गया है, उनका उपन्यास है।

यात्रा संस्मरण : हर बारिश में, चीड़ों पर चाँदनी, धुंध से उठती धुन।

निबंध संग्रह : शब्द और स्मृति, कला का जोखिम, ढ़लान से उतरते हुए।

पुरस्कार : सन् 1985 में कव्वे और काला पानी पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। अन्य कई पुरस्कारों से भी इन्हें सम्मानित किया गया।

साहित्यिक विशेषताएँ : निर्मल वर्मा नई कहानी आंदोलन के अग्रज माने जाते हैं। इनके लेखों में विचारों की गहनता है। इन्होंने भारत ही नहीं यूरोप की सांस्कृतिक एवं राजनीतिक समस्याओं पर भी अनेक लेख लिखे।

भाषा शैली : भाषा शैली में अनोखी कसावट है जो विचार सूत्र की गहनता को विविध उदाहरणों से रोचक बनाती हुई विषय का विस्तार करती है। शब्द चयन में जटिलता होते हुए भी वाक्य रचना में मिश्र एवं संयुक्त वाक्यों की प्रधानता है। स्थान-स्थान पर उर्दू एवं अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग द्वारा भाषा शैली में अनेक नवीन प्रयोगों की झलक मिलती है।

मृत्यु : सन् 2005

जहाँ कोई वापसी नहीं

पाठ की विधा : यात्रा वृतांत।

मूल संवेदना : प्रस्तुत पाठ में लेखक ने पर्यावरण संबंधी सरोकारों के साथ-साथ विकास के नाम पर पर्यावरण विनाश से उत्पन्न मनुष्य की विस्थापन संबंधी समस्या को भी चित्रित किया है। लेखक ने यह बताना चाहा है कि यदि विकास और पर्यावरण संबंधी सुरक्षा के बीच संतुलन न बनाए रखा जाए तो हमेशा विस्थापन और पर्यावरण संबंधी समस्या सामने आती रहेंगी जिससे केवल मनुष्य ही अपनी जमीन और घर से अलग नहीं होता बल्कि उसका परिवेश व संस्कृति भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाती है।

पाठ का सार

अमझर शब्द का अर्थ : एक ऐसा गाँव जो आम के पेड़ों से घिरा रहता था, जहाँ आम झड़ते थे। जब से सरकारी घोषणा हुई कि अमरौली प्रोजेक्ट के तहत नवागाँव के अनेक गाँव उजाड़ दिए जाएंगे तब से आम के पेड़ सूखने लगे, उन पर सूनापन छा गया। ठीक ही तो है - आदमी उजड़ेगा तो पेड़ जीवित रह कर क्या करेंगे?

आधुनिक भारत के नए शरणार्थी : जिन लोगों को औद्योगिकरण की आँधी ने अपने घर-जमीन से हमेशा के लिए अलग कर दिया वही लोग आधुनिक भारत के नए शरणार्थी कहलाए।

प्रकृति एवं औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में अंतर : बाढ़ या भूकंप के कारण जब लोग अपने घर को छोड़कर कुछ समय के लिए सुरक्षित स्थान पर चले जाते हैं और स्थिति सामान्य होने पर वापिस अपने घर लौट आते हैं उन्हें प्रकृति के कारण विस्थापित कहा जाता है। जब लोगों को औद्योगीकरण व विकास के नाम पर निर्वासित (घर-जमीन से अलग) कर दिया जाता है और ये लोग फिर कभी अपने घर वापिस नहीं आ पाते, उन्हें औद्योगीकरण के नाम पर विस्थापित कहा जाता है।

यूरोप एवं भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ : यूरोप एवं भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ सर्वथा भिन्न हैं। यूरोप में मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखना पर्यावरणीय प्रश्न है जब कि भारत में यही संतुलन मनुष्य और संस्कृति के बीच बनाए रखने का है।

सिंगरौली की उर्वरा भूमि अपने लिए अभिशाप : सिंगरौली की भूमि इतनी उर्वरा और जंगल इतने समृद्ध थे कि उनके सहारे शताब्दियों से हजारों वनवासी और किसान अपना

भरण-पोषण करते थे। आज सिंगरौली की वही अतुलनीय संपदा उसके लिए अभिशाप बन गई, तभी तो दिल्ली के सत्ताधारियों और उद्योगपतियों की आँखों से सिंगरौली की अपार संपदा छुप नहीं पाई। सिंगरौली जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण बैकुण्ठ और अकेलेपन के कारण काला पानी माना जाता था अब प्रगति के मानचित्र पर राष्ट्रीय गौरव के साथ प्रतिष्ठित हुआ।

औद्योगीकरण के कारण पर्यावरण संकट : ये सच है कि औद्योगीकरण ने पर्यावरण संकट पैदा किया है। औद्योगीकरण के कारण गांव के गांव उजाड़ कर लोगों की जमीन ले ली गई। ऐसा करके वहाँ का परिवेश तो खराब हुआ ही साथ ही मनुष्य और उसका परिवेश भी उजड़ गया जिससे प्रकृति, मनुष्य व संस्कृति का संतुलन गड़बड़ा गया। औद्योगीकरण के कारण स्थापित उद्योगों ने धुएँ व कचरे से पर्यावरण संकट पैदा कर दिया। औद्योगीकरण ने मनुष्य, प्रकृति व संस्कृति के बीच संतुलन को नष्ट कर दिया है। हमें ऐसी योजनाएँ बनानी हैं जो इस संतुलन को बनाए रखकर विकास एवं प्रगति करें।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : आधुनिक भारत के नए शरणार्थी किन्हें कहा गया है?

उत्तर : औद्योगीकरण एवम् विकास के नाम पर जिन लोगों को अपने निवास स्थान से (अपने घर व जमीन) उखाड़कर हमेशा के लिए निर्वासित कर दिया जाता है। इन लोगों की जमीन को भी सरकार या औद्योगिक घरानों ने छीन लिया। ये लोग सदा के लिए बेघर हो जाते हैं और फिर कभी अपने घर नहीं लौट पाते, ऐसे लोगों को आधुनिक भारत के नए शरणार्थी कहा गया है।

प्रश्न 2 : लेखक के अनुसार स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी 'ट्रैजेडी' क्या है?

उत्तर : स्वतंत्रता के पश्चात् ट्रेजेडी यह नहीं कि हमने औद्योगीकरण का मार्ग चुना बल्कि दुख इस बात का है कि पश्चिम की देखादेखी और नकल में योजनाएँ बनाते हुए हमने प्रकृति-मनुष्य और संस्कृति के बीच का संतुलन नष्ट कर दिया। यदि हम पश्चिम की नकल किए बिना अपनी मर्यादाओं के आधार पर औद्योगिक विकास का ढ़ाँचा तैयार करते तो हम इस संतुलन को नष्ट होने से बचा सकते थे। इसका विचार भी हमारे शासकों को नहीं आया।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : अमझर से आप क्या समझते हैं? अमझर गाँव में सूनापन क्यों है?

प्रश्न 2 : प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में क्या अन्तर है?

प्रश्न 3 : औद्योगीकरण ने पर्यावरण संकट पैदा कर दिया है, क्यों और कैसे?

निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) मानव सुख की कसौटी ..... बनाने में असफल रहा था।

प्रसंग : पाठ का नाम - जहाँ कोई वापसी नहीं

लेखक : निर्मल वर्मा

सन्दर्भ : प्रस्तुत पाठ में लेखक ने औद्योगीकरण के कारण होने वाले दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला है। साथ ही भारतीय परिस्थितियों की विशेषताओं का वर्णन किया है।

व्याख्या : वर्तमान समय में मानव सुख की कसौटी जरूरतों के स्थान पर भौतिक सुखों पर आधारित है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत ने भी पश्चिम की देखा-देखी प्रकृति को नष्ट करके विकास का मार्ग चुना जबकि हम प्रकृति को बनाए रखकर भी विकास का रास्ता चुन सकते थे और भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के कारण यह मार्ग हमारे लिए उपयुक्त भी था। पश्चिमी देश इस विकल्प को खो चुके थे। भारत में भौतिकतावादी संस्कृति न होने के कारण ही अंग्रेज भारत को अपनी सांस्कृतिक कॉलोनी बनाने में असफल रहे।

विशेष : 1. औद्योगीकरण के दुष्परिणों पर प्रकाश डाला गया है। 2. भारतीय समाज की विशिष्टताओं का वर्णन करते हुए उसकी भूलों को स्पष्ट किया गया है।

सप्रसंग व्याख्या हेतु अन्य महत्वपूर्ण गद्यांश

1. आधुनिक औद्योगीकरण की आँधी ने ..... आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है।
2. कभी कभी किसी इलाके की ..... खनिज संपदा छिपी नहीं रही।
3. भारत की सांस्कृतिक विरासत ..... पारम्परिक संबंध बनाए रखने का हो जाता है।

पाठ-8

रामविलास शर्मा

लेखक परिचय - रामविलास शर्मा

जन्म / स्थान : सन् 1912 उन्नाव जिला (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा : अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. तथा पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

अध्यापन कार्य : लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विभाग में अध्यापन कार्य किया

निर्देशन कार्य : आगरा के के.एम.मुंशी विद्यापीठ के निदेशक रहे।

लेखन कार्य : वे दिल्ली में रहकर साहित्य समाज और इतिहास से संबंधित चिंतन और लेखन करते रहे।

रचनाएँ : भारतेन्दु और उनका युग, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, प्रेमचंद और उनका युग, निराला की साहित्य साधना (तीन खंड)

निबंध संग्रह : विराम चिह्न।

पुरस्कार : साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार, भारत भारती पुरस्कार, व्यास सम्मान, श्लाका सम्मान। उनके चरित्र का उज्ज्वल पक्ष यह है कि वे पुरस्कार राशि को लोकहित में व्यय करने के लिए लौटा देते थे।

साहित्यिक विशेषताएँ : अपने साहित्य में उन्होनें भारतीय समाज के जनजीवन की समस्याएँ और उनकी आकांक्षाओं को स्थान दिया। इनके निबन्ध विचार परक, व्यक्ति व्यंजक है।

भाषा शैली : निबन्धों में स्पष्ट कथन, विचार की गम्भीरता और भाषा की सहजता प्रमुख विशेषताएँ हैं। खड़ी बोली में तत्सम शब्दों की बहुलता है। निबन्ध में विचार और भाषा के स्तर पर एक जीवंतता मिलती है।

मृत्यु : सन् 2000 में।

यथास्मै रोचते विश्वम्

विधा : निबंध।

पाठ की मूल संवेदना : यह निबंध रामविलास शर्मा के निबंध संग्रह 'विराम चिह्न' से लिया गया है। इसमें उन्होंने कवि की तुलना प्रजापति से करते हुए उसके कर्म को महत्व दिया है तथा उसे उसके कर्म के प्रति सचेत किया है। सामाजिक प्रतिबद्धता ही साहित्य की कसौटी है। इसके बिना न तो सामाजिक परिवर्तन संभव है और न ही भावी विकास। साहित्य इन दोनों दिशाओं में कारगर हो सकता है बशर्ते साहित्यकार इसका ध्यान रखे।

पाठ का सार

कवि प्रजापति के रूप में : लेखक ने कवि की तुलना प्रजापति से की है। जिस प्रकार ब्रह्मा द्वारा संपूर्ण समाज का निर्माण किया गया ठीक उसी प्रकार कवि अपनी इच्छानुसार एक नवीन समाज को रचता है। उसके चित्रण में उसका निजी अनुभव और भविष्य के प्रति चिंताभाव समाहित रहता है। कवि जब अपनी रूचि के अनुसार विश्व को परिवर्तित करता है तो यह भी बताता है कि विश्व से उसे असंतोष क्यों है, विश्व में उसे क्या रूचता है जिसे वह फलता-फूलता देखना चाहता है।

साहित्य और समाज : 'साहित्य समाज का दर्पण होता है' - कवि ने इस प्रचलित धारणा का खंडन किया है। उसके अनुसार यदि साहित्य समाज का दर्पण होता है तो उसे समाज को बदलने की बात नहीं उठती और कवि केवल यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति में ही संलग्न रहता। कवि ईश्वर द्वारा निर्मित समाज का अध्ययन करता है और जो संकीर्णताएँ, रूढ़ियाँ उसे समाज की उन्नति में बाधक दिखती है उनसे असंतुष्ट होकर वह एक ऐसे नवीन, सुखमय एवं आदर्शमय भविष्य की कल्पना करता है जो वांछनीय है और उसे अपने साहित्य में उतारता है। कवि अपने साहित्य के चित्र यथार्थ से ग्रहण करता है अर्थात् समाज में जो भी घटित होता है वह उसके साहित्य का आधार बनता है। जहाँ एक और साहित्य में अतीत की रूढ़िवादी काली रेखाएँ होती हैं वहीं दूसरी ओर भविष्य की आशावादी चमकीली रेखाओं को भी चित्रित किया जाता है। कवि का मानना है कि साहित्य मूलतः समाज और समाज में बनती बिगड़ते मानव संबंधों पर आधारित होता है। समाज में असंतुष्टि का मूल कारण मानव संबंध है। विधाता पर साहित्य रचते हुए उसे भी मानव रूप में कवि चित्रित करता है। मानवीय संबंधों को सुधारने के लिए ही कवि ने प्रजापति का रूप ग्रहण किया है।

पांचजन्य शंख रूपी साहित्य : नाट्यशास्त्र भरतमुनि से लेकर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तक चली आ रही हमारे साहित्य की गौरवान्वित परंपरा व्यक्ति को भाग्यवादी न बनाकर जीवन रूपी युद्धभूमि में उतरकर कर्मठ बनने की प्रेरणा देती है। जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने पांचजन्य शंख का नाद कर अर्जुन की उदासीनता दूर कर उसे कर्म के लिए प्रेरित किया था ठीक उसी प्रकार साहित्य भी कायर एवं पराजित मानसिकता वाले मनुष्य को जीवन जीने एवं जीवन संग्राम से जूझने की प्रेरणा देता है। साहित्य का मूल धर्म कायरता, आलस्य, संकीर्णता, भाग्यवादिता दूर कर मानव को कर्मठता और संघर्ष की ओर प्रेरित करता है। मनुष्य साहित्य में अपने सुख-दुख की बात ही नहीं सुनता, वरन् वह उसमें आशा के स्वर को भी सुनता है।

मानव जीवन के विकास में साहित्य की भूमिका : मानव जीवन के विकास में साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पन्द्रहवीं-सौलहवीं शताब्दी मे जब वर्ण और धर्म के रूढ़िवादी बंधनों में मानव-जीवन सिसक रहा था तब हिंदी साहित्य में अनेक ऐसे कवि हुए जिन्होंने इन रूढ़ियों पर अपने काव्य द्वारा प्रहार किया और पीड़ित जनता की भावनाओं को वाणी दी, उन्हें आशा बंधवाई और संगठित किया। उन कवियों में सूर, तुलसी, मीरा, कबीर प्रमुख है। इसी प्रकार 17वीं और 20वीं सदी में अंग्रेजी राज और सामंती अवशेषों को दूर करने के लिए रवीन्द्रनाथ, भारतेन्दु, वीरेश लिंगम आदि ने जनता को अपने साहित्य द्वारा सुखी स्वाधीन जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए उन्हें उत्साहित किया।

साहित्यकार का कर्म : साहित्य स्रष्टा और द्रष्टा दोनों ही हैं। वह नवीन रचना तो करता ही है साथ ही उसकी दृष्टि भविष्य पर भी रहती है। साहित्यकार का कर्म है कि वह एक ऐसी भूमिका का निर्वाह करे जो युगों-युगों तक याद रहे। वह मनुष्य में एक नई उमंग, नए उत्साह का संचार करके समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों को समाप्त कर एक मार्गदर्शक बन कर खड़ा होता है। जिस प्रकार पुरोहित आगे-आगे चलकर पूजा की सारी विधियों को समझाता है उसी प्रकार कवि पुरोहित भी परिवर्तन चाहने वाली जनता के आगे चलकर उसे परिवर्तन की राह दिखलाए। एक अच्छे साहित्यकार का साहित्य जनता का रोष और असंतोष तो प्रकट करता है, उसे आत्मविश्वास भी देता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : कवि के लिए राम के साथ रावण का चित्रण क्यों आवश्यक हो जाता है?

उत्तर : कवि की रचना का आधार समाज होता है। समाज में सद्गुण और दुर्गुण चरित्र वाले दोनों ही प्रकार के पात्र होते हैं। चूंकि कवि को प्रजापति का दर्जा दिया गया है अत: उसके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करे। राम को वीर्यवान, गुणवान, कृतज्ञ, चरित्रवान आदि दुर्लभ गुणों से युक्त करके मर्यादा पुरुषोत्तम बना

दिया ताकि समाज उनसे सीख ले सके किंतु यदि राम के साथ बुरे गुणों वाले रावण का चित्रण न किया गया तो राम का ये रूप प्रकाशित नहीं हो पाएगा। जीवन के चमकदार रंगों में उभार तभी आता है जब पार्श्व भाग में काली छायाएँ होती हैं।

प्रश्न 2 : 'मानव संबंधों से परे साहित्य नहीं है।'' कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर : लेखक के अनुसार कवि के असंतोष का कारण मानव संबंध है। मानव संबंध और साहित्य एक दूसरे के पूरक हैं अर्थात् साहित्य की रचना का आधार मानव संबंध ही होते हैं। यदि समाज में मानव संबंध अच्छे होते तो कवि को प्रजापति न बनना पड़ता। यदि ईश्वर को भी अपने साहित्य का विषय बनाना है तो साहित्यकार ईश्वर को भी मानव संबंधों में बांध लेता है जिससे आम जनता ईश्वर से तादात्म्य स्थापित कर सके। रामचरितमानस में भगवान राम की मर्यादा का वर्णन, महाभारत में भगवान कृष्ण का वर्णन मानव संबंधों का ही उदाहरण है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. लेखक ने कवि को प्रजापति क्यों कहा है?
2. 'कवि-पुरोहित' के रूप में साहित्यकार की भूमिका स्पष्ट करो।
3. कवि गंभीर यथार्थवादी होता है-अर्थ स्पष्ट करो।
4. साहित्यकार के लिए स्रष्टा और द्रष्टा होना अनिवार्य है- क्यों और कैसे?
5. साहित्य थके हुए मनुष्य के लिए विश्रांति ही नहीं है, वह उसे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित भी करता है- स्पष्ट कीजिए।
6. पांचजन्य शंख और साहित्य में क्या समानताएँ हैं?

सप्रसंग व्याख्या : धिक्कार है उन्हें जो तीलियाँ तोड़ने के बदले ..... अहंवादी विकृतियाँ दिखाई देती हैं।

प्रसंग : पाठ का नाम - यथास्मै रोचते विश्वम्।

लेखक का नाम - रामविलास शर्मा।

सन्दर्भ : लेखक ने प्रस्तुत निबंध द्वारा कवि कर्म की व्याख्या की है। लेखक ने दिशाहीन और स्वार्थी साहित्यकारों को नवीन समाज के निर्माण में बाधक बताया है।

व्याख्या : रामविलास शर्मा कहते हैं कि आज भी मानव संबंध संकीर्णताओं के कारण

पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं है। आज भी मानव स्वच्छंद भाव से उड़ान भरने के लिए व्याकुल हो रहा है। ऐसे में कई साहित्यकार मानव बंधनों की संकीर्णताओं को तोड़ने के स्थान पर उन्हें मजबूत कर रहे हैं। ये साहित्यकार होने का दावा तो करते हैं किंतु अपने साहित्य द्वारा लोगों को पराजय और गुलामी का पाठ पढ़ाते हैं। ऐसे दिशाहीन और स्वार्थी तथा संकीर्ण विचारों वाले लेखक नवीन समाज की स्थापना नहीं कर सकते। वे अतीत में ही डूबे रहते हैं और समाज को न तो नई दिशा प्रदान कर पाते हैं, न ही भविष्य के प्रति आशावादी दृष्टिकोण दे पाते हैं। ऐसे साहित्यकार न तो स्रष्टा होते हैं और न ही द्रष्टा। इनके साहित्य में ही इनकी ये संकीर्ण सोच दृष्टिगोचर होती है। अतः ये साहित्यकार की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। लेखक उन्हें साहित्यकार मानने से इंकार करता है।

भाषा विशेष

1. लेखक स्वार्थी व दिशाहीन साहित्यकारों को समाज के लिए खतरा मानता है।
2. लेखक भारतीय मूल्यों को बचाने तथा साथ ही प्रगतिवादी होने की बात कह रहा है।
3. व्यंग्य की तीक्ष्णता का प्रयोग है।
4. तत्सम् प्रधान खड़ी बोली का प्रयोग है।
5. मुहावरेदार भाषा का प्रयोग है।
6. भाषाशैली विचार प्रधान और तार्किक है।

अन्य महत्वपूर्ण गद्यांश

1. कवि की सृष्टि निराधार ..... यथार्थ जीवन से ही लेता है।
2. ऐसे समय जब समाज के बहुसंख्यक ..... शक्ति भर देता है।
3. साहित्य का पांचजन्य ..... बुलावा देता है।
4. प्रजापति की अपनी भूमिका भूलकर ..... रक्षा कर सकेगा।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

पाठ-9

ममता कालिया

लेखिका परिचय : ममता कालिया।

जन्म / स्थान : 1940, मथुरा, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : उनकी शिक्षा के कई पड़ाव रहे जैसे नागपुर, पूणे, इंदौर, मुम्बई आदि। दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. किया।

कार्य : अध्यापन कार्य : दौलतराम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी प्राध्यापिका रही। एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय मुम्बई में अध्यापन कार्य, महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद में प्रधानाचार्या रही।

निदेशक कार्य : भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता में निदेशक रही।

स्वतंत्र लेखन कार्य : वर्तमान में नयी दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन कर रही हैं।

रचनाएँ : उपन्यास : बेघर, नरक दर नरक, एक पत्नी के नोट्स, प्रेम कहानी, लड़कियाँ, दौड़।

कहानी संग्रह : पच्चीस साल की लड़की, थिएटर, रोड़ के कौवे। इसके अतिरिक्त 12 कहानी संग्रह है जो 'संपूर्ण कहानियाँ' नाम से दो खंडों में प्रकाशित है।

एकांकी संग्रह : यहाँ रहना मना है, आप न बदलेंगे।

काव्य : खाँटी, घरेलू औरत, कितने प्रश्न करूँ।

अंग्रेजी काव्य संग्रह : Tribute to Papa and Other Poem

पुरस्कार : सरस्वती पत्रिका का कहानी पत्रिका सम्मान। अभिनव भारती का रचना सम्मान, कलकत्ता। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का कहानी सम्मान, साहित्य भूषण प्राप्त किया।

साहित्यिक विशेषताएँ : मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं को अपने लेखन में स्थान दिया है। लेखन में कहीं सटीक व्यंग्य है तो कहीं कल्पना और रूमानियत है। युवा मन के आकर्षण और संवेदनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

भाषा शैली : साधारण शब्दों को भी आकर्षक भाषा शैली में प्रस्तुत करना ममता

कालिया की विशेषता है। विषय के अनुरूप सहज भावाभिव्यक्ति, शब्दों की परखता, सजीवता, सरलता, सुबोधता, व्यंग्य की सटीकता और रोचकता उनकी कहानियों के प्राण हैं। तत्सम्, तद्भव, देशज शब्दों के साथ-साथ ग्रामीण अंचल के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

दूसरा देवदास (ममता कालिया)

विधा : कहानी

पाठ की मूल संवेदना : ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' प्रेम के महत्त्व और उसकी गरिमा को ऊँचाई प्रदान करती है। कहानी से यह सिद्ध होता है कि प्रेम के लिए किसी नियत व्यक्ति, स्थान और समय की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह स्वतः ही घटित हो जाता है। 21वीं सदी में भोग विलास की संस्कृति ने प्रेम का स्वरूप अधिकतर उच्छृंखल कर दिया है। ऐसी स्थिति में यह कहानी प्रेम के सच्चे स्वरूप को रेखांकित करती है और दूसरी तरफ युवा मन की संवेदना, भावना और कल्पनाशीलता को भी प्रस्तुत करती है।

पाठ का सार

हर की पौड़ी का मनोहारी दृश्य : हर की पौड़ी पर संध्या के समय गंगा की आतरी का रंग ही निराला होता है। भक्तों की भीड़ मनोकामना की पूर्ति के लिए फूल, प्रसाद आदि खरीदती है। उस समय पंडे और गोताखोर सक्रिय हो जाते हैं। चारों तरफ पूजा का वातावरण है। पंच मंजिली नीलांजलि में लगे, सहस्र दीप जल उठते हैं और आरती शुरु हो जाती है। मनौतियों के दिये लिए हुए फूलों के छोटे-छोटे दोने गंगा की लहरों पर इठलाते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। पूरे वातावरण में चंदन और धूप की सुगंध फैली हुई और भक्तजन संतोष भाव से भर उठते हैं।

गंगापुत्रों का जीवन परिवेश : गंगापुत्र उन गोताखोरों को कहते हैं जो गंगा में डुबकी लगाकर भक्तों द्वारा छोड़े गए पैसों को इकट्ठा करके अपनी आजीविका चलाते हैं। इनका जीवन गंगा पर ही निर्भर रहता है ये रेजगारी बटोरकर अपनी बहन या बीवी को कुशाघाट पर दे आते हैं जो इन्हें बेचकर नोट कमाती है। कभी-कभी इनके साथ हादसा भी हो जाता है किंतु बगैर परवाह किए ये अपने कार्य में लगे रहते हैं।

नायक-नायिका का प्रथम परिचय : कहानी का नायक संभव है और नायिका पारो है। संभव कुछ दिनों के लिए अपनी नानी के घर आया हुआ है। नास्तिक होते हुए भी अपने

माता-पिता के कहने पर गंगा का आशीर्वाद लेने आया हुआ है। नायक-नायिका का प्रथम परिचय गंगा किनारे के मंदिर में होता है। संभव मंदिर में पैसे चढ़ाने के उपरांत अपना हाथ कलावा बंधवाने के लिए आगे बढ़ाता है तभी एक नाजुक सी कलाई भी कलावा बंधवाने के लिए आगे बढ़ती है। संभव उस गुलाबी कपड़ों में भीगी लड़की को देखता है। पुजारी दोनों को दम्पत्ति समझकर आशीर्वाद देता है- 'सुखी रहो, फूलो फलो, जब भी आओ साथ ही आना, गंगा मैया मनोरथ पूरे करें।'' लड़की घबराहट में छिटककर दूर हो गई और तेजी से चली गई। इस प्रकार दोनों के बीच प्रथम आकर्षण हर की पौड़ी पर उत्पन्न होता है जो निरन्तर घटने वाली घटनाओं के तारतम्य से प्रेम में बदल जाता है। इसे प्रथम दृष्टि का प्रेम कहा जा सकता है।

संभव की मन:स्थिति (लड़की से मिलने के पश्चात्) : उस छोटी सी मुलाकात ने संभव के मन में कल्पना और सपनों के पंख लगा दिए। उसके अंदर पुन: मिलने की बेचैनी पैदा हो गयी। यह एक ऐसी निराली अनुभूति थी जो बेचैनी के साथ सुख भी प्रदान कर रही थी। वह मन ही मन उसके रूप को याद कर उससे बातचीत के बारे में साचने लगा। ऐसा आकर्षण उसे प्रथम बार महसूस हो रहा था।

लड़की का आँख मूंदकर अर्चना करना, माथे पर भीगे बालों की लट, कुरते को छूता गुलाबी आंचल और उसका सौम्य स्वर, संभव सारी रात इन्हीं ख्यालों में खोया रहा। यकायक उसे बिंदिया और श्रृंगार के अन्य साधन भाने लगे और 'मांग में तारे भरने' जैसे गीत अच्छे लगने लगे।

मनसा देवी पर मनोकामना की गाँठ : मनसा देवी पर सभी भक्तजन लाल-पीले धागे मनोकामना हेतु बाँध रहे थे। संभव ने भी पूरी श्रद्धा के साथ मनोकामना की गाँठ लगाई जिसमें पुन: उस लड़की से मिलने की इच्छा थी। अब प्रथम आकर्षण प्रेम में परिवर्तित हो गया था। दूसरी तरफ पारो ने भी इसी प्रकार की आशा लिए मनोकामना की गाँठ लगाई। दोनों ही एक-दूसरे से मिलने को आतुर थे। अचानक मंदिर के बाहर दोनों का पुन:मिलन हो जाता है। दोनों ने अपनी-अपनी मनोकामना की गाँठ के इतनी शीघ्र परिणाम की अपेक्षा नहीं की थी।

पारो की मनोदशा : पारो की मनोदशा भी संभव से भिन्न न थी, वह स्वयं भी उसके आकर्षण में बंध चुकी थी। युवा मन का निश्चल प्रेम केवल एक झलक देखने के लिए व्याकुल था। मनसा देवी पर लगी मनोकामना की गाँठ का परिणाम संभव से मिलने के रूप में आया तो वह आश्चर्यमिश्रित सुख में डूब गई। सफेद साड़ी में उसका चेहरा लाज से गुलाबी हो रहा था क्योंकि उसे भी इस बात की प्रतीक्षा थी। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और मन ही मन एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प लिया। मनोकामना पूरी होने से देवी पर

आस्था और संभव के प्रति प्रेम और अधिक दृढ़ और स्थायी हो गया।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : 'देवदास' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखिका ने कहानी का शीर्षक 'दूसरा देवदास' सोच समझकर रखा है जो कहानी के मूल कथ्य को स्पष्ट करने में समर्थ है। शरतचन्द्र की रचना 'देवदास' में नायक देवदास पारो पर अपना प्रेम लुटाता है और अंत तक यह प्रेम एक निश्चल रूप में जीवित रहता है। उसी प्रकार संभव भी पारो को प्राप्त करने के लिए बेचैन है। देवदास और पारो निश्चल प्रेम के प्रतीक है। इसलिए संभव के लिए लेखिका ने 'दूसरा देवदास' शीर्षक रखा।

प्रश्न 2 : संभव और पारो द्वारा लगाई मनोकामना की गाँठ का क्या परिणाम रहा। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : संभव और पारो की मुलाकात ने दोनों के ही हृदय में प्रेम का अंकुर उत्पन्न किया और दोनों ही कल्पना और सपनों के पंख सजाने लगे। प्रेम के प्रथम आकर्षण में बंध दोनों ही एक दूसरे को दोबरा देखने की कामना करने लगे। मंसादेवी पर मनोकामना का लाल-पीला धागा बांधते हुए उन्होंने मन ही मन एक दूसरे से मिलने की इच्छा प्रकट की। मंदिर से बाहर निकलते ही एक-दूसरे को सामने पाकर उन्हें आश्चर्य मिश्रित सुख का अनुभव हुआ। प्रथम दृष्टि का आकर्षण प्रेम में परिवर्तित हो चुका था। लड़की का नाम पारो सुनते ही संभव ने अपना नाम 'संभव देवदास' बताया जो इस बात का द्योतक था कि उसने जो प्रेम की गाँठ बाँधी थी वह और अधिक दृढ़ और स्थायी हो गयी है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. पाठ के आधार पर हर की पौड़ी पर होने वाली आरती का चित्रण कीजिए।
2. दिल्ली की भीड़ और हरिद्वार की भीड़ में संभव को क्या अंतर दिखाई दिया?
3. पुजारी द्वारा आशीर्वाद देने के बाद दोनों के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?
4. गंगापुत्रों के जीवन-परिवेश के बारे में लिखिए।
5. मंसादेवी के प्राकृतिक वातावरण व मंदिर के अंदर का वर्णन कीजिए।
6. लड़की से मुलाकात के बाद संभव में जो परिवर्तन आए, उसे लिखिए।

सप्रसंग व्याख्या : एकदम प्रकोष्ठ में चामुंडा ..... शीश नवाते।

प्रसंग : पाठ का नाम - दूसरा देवदास

लेखिता - ममता कालिया

सन्दर्भ : इस कहानी में लेखिका ने युवा मन के प्रेम के प्रति भावों, प्रथम आकर्षण और उससे उत्पन्न संवेदनाओं को व्यक्त करने के साथ-साथ धार्मिक स्थानों पर बढ़ती व्यापारिक वृत्ति का भी वर्णन किया है।

व्याख्या : इन पंक्तियों में लेखिका ने धार्मिक स्थलों पर बढ़ते व्यापार का वर्णन किया है। मंसा देवी में पहुँचने के बाद संभव ने चढ़ावा चढ़ाने के लिए एक थैली खरीदी। मंदिर के कक्ष में चामुंडा रूप में मंसादेवी विराजमान थी। आसपास का वातावरण भक्तिमय था किंतु मानव का ये स्वभाव है कि वह बिना लाभ की कामना के कोई कार्य नहीं करता। यहाँ तक की ईश्वर की भक्ति के पीछे भी अपने और अपनों के सुख की कामना रहती है। लोग भगवान के दर्शन बाद में करते हैं, पहले कामनापूर्ति की गाँठ बाँधते, लेन-देन की यह प्रवृत्ति भक्ति और पूजा में भी व्यक्ति का साथ नहीं छोड़ती। अन्य धार्मिक स्थलों की भाँति यहाँ भी व्यापार था। अर्थात् बड़े चढ़ावे वालों को पहले और अलग से दर्शन करने की सुविधा थी और आम लोगों को केवल दूर से ही दर्शन कराए जा रहे थे। यह पुजारियों की व्यापारिक वृत्ति की ओर संकेत करता है।

भाषा विशेष

1. मानव की स्वार्थ वृत्ति और व्यापार वृत्ति को व्यंगात्मक शैली में प्रस्तुत किया है।
2. धार्मिक स्थलों पर भक्ति के स्थान पर पैसे को अधिक महत्व दिया जाता है।
3. भाषा सरल, चित्रात्मक और सहज है।
4. तत्सम प्रधान खड़ी बोली का प्रयोग है।

अन्य महत्वपूर्ण गद्यांश

1. हर की पौड़ी पर साँझ ..... एक सौ इक्यावन रूपये वाली।
2. इस भीड़ में एक सूत्रता ..... आत्माराम और निर्मलानंद हैं।
3. उषा ब्रेको सर्विस..... तत्परता से हो रहे थे।

पाठ-10

हजारी प्रसाद द्विवेदी

लेखक परिचय : हजारी प्रसाद द्विवेदी।

जन्म / स्थान : सन् 1907, गांव आरत दुबे का छपरा, जिला बलिया, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : संस्कृत महाविद्यालय काशी से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। 1930 में काशी हिन्दु विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की।

कार्य : 1940-50 तक द्विवेदी जी हिन्दी भवन, शांति निकेतन के निदेशक रहे। सन् 1950 में वाराणसी के काशी हिन्दु विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बने। 1952-53 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष रहे। 1955 में वे प्रथम राजभाषा आयोग के सदस्य राष्ट्रपति के नामिनी नियुक्त हुए। 1960-67 तक पंजाब विश्वविद्यालय चंड़ीगढ़ में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर रहे। 1967 में काशी हिन्दु विश्वविद्यालय में रेक्टर नियुक्त हुए। यहाँ से अवकाश ग्रहण करने पर वे भारत सरकार की हिन्दी विषयक अनेक योजनाओं से संबद्ध रहे। जीवन के अंतिम दिनों में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष थे।

रचनाएँ : निबंध संकलन : अशोक के फूल, विचार और वितर्क, कल्पलता, कुटज तथा आलोक पर्व।

उपन्यास : चारूचंद्र लेख, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा तथा अनामदास का पोथा।

आलोचनात्मक निबंध : सूर साहित्य, कबीर, हिन्दी साहित्य की भूमिका, कालिदास की लालित्य योजना। द्विवेदी जी की सभी रचनाएँ हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली (के ग्यारह खंडों) में संकलित है।

पुरस्कार : आलोक पर्व पुस्तक पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। लखनऊ विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट् की मानद उपाधि दी। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण अलंकरण से विभूषित किया।

साहित्यिक विशेषताएँ : द्विवेदी जी का अध्ययन क्षेत्र बहुत व्यापक था। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बंगला आदि भाषाओं एवम् इतिहास, दर्शन, संस्कृति, धर्म आदि विषयों में उनकी विशेष रूचि थी। इसी कारण उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति की गहरी पैठ और

विषय वैविध्य के दर्शन होते हैं। वे परंपरा के साथ आधुनिक प्रगतिशील मूल्यों के समन्वय में विश्वास करते थे।

भाषा शैली : भाषा सरल एवं प्रांजल है। व्यक्तित्व व्यंजकता और आत्म परकता उनकी शैली की विशेषता है। व्यंग्य शैली के प्रयोग ने उनके निबंधों पर पाण्डित्य के बोझ को हावी नहीं होने दिया है। भाषा शैली की दृष्टि से उन्होंने हिंदी की गद्य शैली को एक नया रूप दिया।

मृत्यु : सन् 1979.

कुटज

पाठ की विधा : निबंध।

मूल संवेदना : कुटज हिमालय पर्वत की ऊँचाई पर सूखी शिलाओं के बीच उगने वाला एक जंगली पौधा है। इसमें सौन्दर्य व सुगंध न होते हुए भी मानव के लिए एक संदेश है। कुटज अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति, आत्म निर्भरता एवं विषम परिस्थितियों में भी शान से जीता है और मानव को भी यही संदेश देता है। इस निबंध का उद्देश्य यह बताना है कि सामान्य से सामान्य वस्तु में भी विशेष गुण हो सकते हैं।

पाठ का सार

हिमालय और कुटज : कहा जाता है कि पर्वत शोभा के निकेतन (घर) होते हैं। हिमालय को तो पृथ्वी का मानदण्ड कहा जाता है। लोग इसे शिवालिक शृंखला भी कहते है। अर्थात् शिव के जटाजूट का निचला हिस्सा प्रतीत होता है। यहाँ काली-काली चट्टानों और उनके बीच की शुष्कता को झेलकर भी कुछ ठिगने से पौधे मस्त मौला से दिख रहे हैं। ये भयंकर गर्मी की मार को झेलकर भी बेहया से जी रहे हैं। ये पौधे कठोर पत्थरों की छाती को चीरकर गहरी खाईयों से रस खींचकर सरस बने हुए हैं।

नाम से रूप की पहचान : हिमालय पर्वत पर लगे इन ठिगने से पेड़ों में एक पेड़ को लेखक पहचानता है किन्तु उसका नाम याद नहीं आता। नाम के बिना रूप की पहचान अधूरी रह जाती है। यूँ तो इसे अनेक नाम लेखक दे सकता था किन्तु नाम तो वह होना चाहिए जिसे समाज की स्वीकृति मिली हो। तभी लेखक को याद आता है कि इस ठिगने पौधे का नाम तो कुटज है।

गाढ़े का साथी : संस्कृत साहित्य का परिचित नाम 'कुटज' लेकिन कवियों ने इसकी

सदैव उपेक्षा की है। कालीदास ने यक्ष द्वारा मेघ की अभ्यर्थना कराते समय कुटज के फूलों की ही अंजलि दिलवाई थी। ऐसे समय में जब कोई फूल नहीं था, मुसीबत के समय इसी के द्वारा पूजा सम्पन्न होने के कारण इसे गाढ़े का साथी कहा गया।

अपराजेय जीवनी शक्ति : कुटज का पौधा नाम और रूप दोनों में ही अपराजेय जीवनी शक्ति की घोषणा करता है। ये भयंकर गर्मी की लू के थपेड़े खाकर भी हरा-भरा बना रहता है। यह पाताल की छाती चीरकर भी अपना प्राप्य वसूल लेता है, भोग्य खींच लेता है। यही प्रेरणा कुटज मानव को भी देता है कि उसे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी किसी के आगे गिड़गिड़ाना नहीं है, किसी के आगे घुटने नहीं टेकने, दाँत नहीं निपोरने वरन् संघर्ष करते हुए सफलता पानी है। मनुष्य को स्वयं के लिए नहीं बल्कि सर्व के लिए न्योछावर होना है।

स्वावलंबी कुटज : सुख और दु:ख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वश में है और दुखी वह है जिसका मन परवश है। परवश अर्थात् दूसरों की खुशामद करने, तलवे चाटना आदि। कुटज धन्य है क्योंकि वह तो अपने मन पर सवारी करता है, मन को अपने ऊपर सवारी नहीं करने देता।

कुटज शब्द के विभिन्न अर्थ : कुटज अर्थात् जो कुट से पैदा हुआ हो। कुट घड़े को भी कहते हैं और घर को भी कहते हैं। कुट अर्थात् घड़े से उत्पन्न होने के कारण प्रतापी अगस्त्य मुनि भी 'कुटज' कहे जाते हैं। घड़े से तो क्या उत्पन्न हुए होंगे। कोई और बात रही होगी। संस्कृत में 'कुटिहारिका' और 'कुटकारिका' दासी को कहते हैं। एक ज़रा गलत ढ़ंग की दासी को कुटनी भी कह दिया जाता है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : कुटज अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति की घोषणा किस प्रकार करता है?

उत्तर : कुटज में निश्चित रूप से अपराजेय जीवनी शक्ति है। यह नाम और रूप दोनों में ही इस जीवनी शक्ति की घोषणा करता है। यह अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति की घोषणा धधकती लू में भी हरा-भरा बना रहकर करता है। यह कठोर पत्थरों के बीच स्थित अज्ञात जल-स्तोत्र से अपने लिए रस खींचकर सदैव सरस बना रहता है। निर्जन पर्वतों पर यह ऐसा मस्ती में लहराता है कि इसे देखकर सभी को ईर्ष्या होने लगती है। इसकी यही जीवनी शक्ति हमें प्रेरणा देते हुए बताती है कि यदि जीना चाहते हों तो मेरी भांति कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती को चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो। वायुमंडल को चूसकर, झंझा, तूफान को रगड़कर अपना प्राप्य वसूल लो, आकाश को चूमकर अवकाश की लहरी में झूमकर उल्लास खींच लो।

प्रश्न 2 : कुटज क्या केवल जी रहा है – लेखक ने यह प्रश्न उठाकर किन मानवीय कमजोरियों पर टिप्पणी की है?

उत्तर : 'केवल जी रहा है' शब्दों से लगता है जैसे कोई मजबूरी में जी रहा है लेकिन कुटज के साथ ऐसा नहीं है। वह तो अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर जी रहा है और केवल जी ही नहीं रहा शान से, स्वावलंबन के साथ जी रहा है।

इस प्रश्न से मानव स्वभाव की इन कमजोरियों पर प्रकाश पड़ता है– बहुत से लोग 'जीना है' – केवल इसलिए विवशता पूर्वक जीते हैं। उनमें जिजीविषा (जीने की इच्छा) शक्ति की कमी होती है। ऐसे लोगों में संघर्ष का अभाव होता है। जो मिल जाता है, उसी में संतुष्ट हो जाते हैं। वे कठिन परिस्थितियों से टकराकर अपना प्राप्य वसूल नहीं कर पाते। वे मन से हार चुके हैं। जब तक वे अपनी इस प्रवृत्ति को नहीं त्यागेंगे। तब तक उनके जीवन में आनन्द नहीं आएगा।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. कुटज हम सभी को क्या उपदेश देता है?
2. कुटज के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है?
3. कुटज पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि 'दु:ख और सुख तो मन के विकल्प हैं।'
4. कुटज को गाढ़े का साथी क्यों कहा गया है?
5. नाम और रूप में कौन बड़ा है और क्यों?

निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

दुख और सुख तो मन ..... दूसरों को फँसाने के लिए जाल बिछाता है।

प्रसंग : पाठ का नाम – कुटज। लेखक – हजारी प्रसाद द्विवेदी।

सन्दर्भ : लेखक ने कुटज के जीवन को प्रेरणादायी बताते हुए सुखी और दुखी व्यक्ति की विवेचना की है।

व्याख्या : लेखक कहता है कि सुख और दुख तो मन के दो भाव हैं। व्यक्ति सुखी भी रह सकता है, दुखी भी। जिस व्यक्ति का मन अपने वश में है, वह सुखी है और जिस व्यक्ति का मन परवश होता है अर्थात् दूसरों के आधीन होता है, वह दु:खी रहता है। ऐसे

लोगों की संकल्प शक्ति क्षीण (कमजोर) होती है। परवश अर्थात् स्वयं को छोटा समझना, दूसरों की चापलूसी करना, दूसरों की हाँ में हाँ मिलाना अर्थात् ऐसे लोग कोई भी कार्य अपनी इच्छा से नहीं कर पाते, न ही शीघ्र कोई निर्णय ले पाते हैं। ऐसे लोग सदैव दूसरों को फँसाने, नीचा दिखाने के लिए चाल चलते हैं। अपने दोषों को छिपाने के लिए दूसरों के दोष निकालते हैं।

विशेष

1. दुख और सुख की समीक्षा की गई है।
2. विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।
3. खड़ी बोली का प्रयोग है।

अन्य महत्वपूर्ण गद्यांश

1. कुटज के ये सुन्दर फूल ..... रहीम को भी फेंक दिया गया था।
2. रूप की तो बात ही क्या है ..... सरस बना हुआ है।
3. व्यक्ति की आत्मा ..... कृपण बना देती है।
4. कुटज क्या केवल जी रहा है ..... शान से जीता है।

अंतराल

1. सूरदास की झोंपड़ी

2. आरोहण

3. बिस्कोहर की माटी

4. अपना मालवा : खाऊ-उजाडू सभ्यता में

पाठ-1

सूरदास की झोपड़ी

मुख्य बिन्दु

- सूरदास की झोपड़ी कथा एक अंधे भिखारी सूरदास को केन्द्र में रखकर लिखी गई है। वह अपने बेटे मिठुआ के साथ गाँव में रहता है।
- सूरदास ने भिक्षा माँग-माँग कर कुछ पैसे संचित किए हैं जिससे वह अपनी तीन अभिलाषाएँ पूरी करना चाहता है-

  (क) संचित धन से पितरों का पिंडदान करना।

  (ख) अपने पुत्र मिठुआ का ब्याह करना।

  (ग) गाँव के लिए एक कुँआ बनवाना।
- उसी गाँव में जगधर और भैरों भी रहते हैं जो इस कथा के खलनायक और उपखलनायक के पात्रों के रूप में उभरते हैं।
- भैरों अपनी पत्नी सुभागी को रोज नशे में पीटता है। भैरों की मार से बचकर सुभागी एक दिन सूरदास की झोपड़ी में शरण लेती है। भैरों के आने पर भी सूरदास बीच बचाव कर सुभागी को भैरों की मार से बचाता है। इस घटना का साक्षी पूरा गाँव होता है। इस घटना से भैरों की पूरे समाज में बहुत बदनामी होती है। सूरदास और सुभागी के चरित्र पर भी ऊँगलियां उठती है जिससे भैरों स्वयं को अपमानित अनुभव करता है और सूरदास से बदला लेने का निश्चय करता है।
- बदले की आग बुझाने के लिए एक रात भैरों सूरदास की झोपड़ी में आग लगाने घुसता है वहीं उसे सूरदास की जमा पूँजी एक पोटली में मिलती है। भैरों वह पोटली चुराकर झोपड़ी में आग लगा देता है।
- आग बुझाने पूरा गांव इकट्ठा होता है। सभी आग बुझाने तथा अपराधी का नाम सोचने का कार्य करते हैं किंतु सूरदास की मन:स्थिति उस समय निराशापूर्ण

होती है। वह आश्चर्यचकित, दु:खी तथा निराश था। उसके मन में केवल एक ही बात थी कि वह किसी प्रकार झोपड़ी में जाकर अपनी पोटली निकाल लाना चाहता था। उसे अपनी सभी मनोकामनाएँ पोटली के साथ जलती नज़र आ रही थीं।

- झोपड़ी के जल जाने पर सूरदास झोपड़ी में अपनी पोटली तलाशने जाता है। वहाँ पर चारों ओर फूस की राख थी। उसे महसूस होता है कि आग में केवल फूस ही नहीं उसकी तीनों अभिलाषाएँ भी जल गईं। ढूंढने पर भी उसे पोटली नहीं मिलती।
- जगधर सूरदास की झोपड़ी जलने के पीछे भैरों को जिम्मेदार समझ कर भैरों के पास जाता है। वहाँ उसे पता चलता है कि भैरों ने झोपड़ी जलाने से पहले सूरदास की पोटली भी चुराई थी।
- जगदार के मन में पैसों को देखकर ईर्ष्या का भाव जगता है कि भैरों को रातो रात बिना मेहनत किए पैसे मिल गए तो उसे भी ये प्राप्त होने चाहिए। इसी बात की धमकी वह भैरों को देता है कि यदि उसने आधे पैसे न दिए तो वह सूरदास को इस राज़ के बारे में बता देगा। भैरों पैसे देने से इंकार कर देता है।
- इसी ईर्ष्या की भावना में आकर जगधर सूरदास को भैरों की चोरी के विषय में बताता है किंतु सूरदास अपनी इस आर्थिक हानि को जगधर से गुप्त रखता है क्योंकि एक गरीब के पास इतने पैसे होना उसके लिए लज्जा की बात है।
- सुभागी जो जगधर और सूरदास की बातें सुन रही है वह सूरदास से सहानुभूति रखती है तथा पोटली वापस लाने का संकल्प लेती है।
- सूरदास अपनी दशा पर दुखी था किंतु अपने पुत्र और उसके मित्रों की यह बात सुनकर कि 'खेल में कोई रोता है?' वह इस जीवन को एक खेल मानता है। उसकी मनोदशा बदल जाती है तथा वह एक खिलाड़ी की भांति उत्साह और आत्मविश्वास से भर जाता है जो अगला खेल खेलने को तैयार होता है। सूरदास की हार न मानने की प्रवृत्ति उसमें विजय गर्व की तरंग भर देती है।

पाठ संबंधी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : भैरों ने सूरदास की झोपड़ी क्यों जलाई?

उत्तर : भैरों ने सूरदास की झोपड़ी बदला लेने के लिए जलाई। वह कई कारणों से

सूरदास से बदला लेना चाहता था।

1. **सुभागी को शरण देने के कारण :** भैरों अपनी पत्नी सुभागी को रोज नशे में पीटता था। एक दिन भैरों की मार से बचकर वह सूरदास की शरण में आई। सूरदास ने उसे शरण देकर भैरों की मार से बचाया जिसमें भैरों की जगहँसाई हुई।

2. **सूरदास के साथ सुभागी पर ऊँगलियाँ उठने के कारण :** इस घटना के बाद सूरदास और सुभागी के चरित्र पर ऊँगलियाँ उठने लगी। जिसके कारण भैरों स्वयं को समाज में अपमानित अनुभव करने लगा।

प्रश्न 2 : 'तो हम सौ लाख बार बनाएँगे' इस कथन के सन्दर्भ में सूरदास के चरित्र की विवेचना कीजिए।

उत्तर : सूरदास का इस वाक्य से एक सशक्त चरित्र उभर कर आता है जिसमें कई विशेषताएँ हैं–

1. **हार न मानने की प्रवृत्ति :** सूरदास जीवन की विषम तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता। पुनः परिश्रम करने को तैयार रहता है।

2. **कर्मशील / मेहनती :** सूरदास एक मेहनती व्यक्ति है। अंधा होने पर भी उसने इतने पैसे जमा किए तथा आगे भी मेहनत करने से नहीं कतराता।

3. **प्रतिशोध की भावना से मुक्त :** सूरदास किसी से भी प्रतिशोध लेने की भावना नहीं रखता। भैरों के विषय में पता चलने पर भी वह उसे नुकसान पहुँचाने की नहीं सोचता।

4. **निर्णय लेने की क्षमता :** सूरदास, किसी भी परिस्थिति को केवल मौन रहकर उसे स्वयं पर हावी नहीं होने देता। वह तुरंत सकारात्मक निर्णय लेकर जीवन में आगे बढ़ता है। झोपड़ी जलने पर उसने यही किया।

5. **सहृदय एवं परोपकारी :** सूरदास कोमल हृदय का है जिसने स्वयं पर संकट आने का अंदेशा होने पर भी सुभागी को शरण दी। अंत में भी सुभागी के बेघर होने का जिम्मेदार वह स्वयं को ही मानता है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न
(नैतिक मूल्यों पर आधारित)

प्रश्न 1 : 'चूल्हा ठंडा किया होता तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता।' इस कथन

के आधार पर सूरदास की मन:स्थिति बताइए।

प्रश्न 2 : जगधर के मन में किस तरह की ईर्ष्या का भाव जगा और क्यों?

प्रश्न 3 : सूरदास अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था?

प्रश्न 4 : 'यह फूस की राख न थी उसकी अभिलाषाओं की राख थी' इस कथन की पाठ के आधार पर विवेचना कीजिए।

प्रश्न 5 : ''सूरदास उठ खड़ा हुआ और विजय गर्व की तरंग में राख के ढेर तो दोनों हाथों से उड़ाने लगा।'' इस कथन के आधार पर सूरदास की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

पाठ-2

आरोहण - संजीव

'आरोहण' लेखक संजीव द्वारा रचित एक यात्रा वृतांत की भाँति लिखी कहानी है। इस कहानी में पात्रों के माध्यम से पर्वतीय प्रदेश के जीवन संघर्ष तथा प्राकृतिक परिवेश को उनकी भावनाओं और संवेदनाओं के माध्यम से चित्रित किया गया है। मैदानी और समतल स्थानों की तुलना में पर्वतीय प्रदेशों का जीवन अधिक कठिन, जटिल, कष्टप्रद, दु:खद और संघर्षमय होता है। इसी संघर्षशील जीवन का सुंदर विवरण इस कहानी में किया गया है।

प्रमुख पात्र

1. भूप सिंह - रूप सिंह का बड़ा भाई व महीप का पिता।
2. रूप सिंह - भूप सिंह का छोटा भाई।
3. शैला - महीप की माँ व भूपसिंह की पत्नी।
4. महीप - भूप सिंह व शैला का बेटा।
5. शेखर - गॉड फादर का बेटा व रूप सिंह का दोस्त।
6. त्रिलोक सिंह - गाँव का बूढ़ा आदमी।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- प्राय: लोग रोजगार की तलाश में अपना घर छोड़कर बाहर जाते ही रहते हैं और रोजगार पाकर, समय-समय पर अपने घर लौटते रहते हैं। तब उनके मन में हर्ष और गर्व का भाव होता है पर रूप सिंह को एक अजीब किस्म की लाज, अपनत्व और झिझक की भावना होने लगती है। वह पर्वतारोहण संस्थान में चार हजार रूपये महीने की अच्छी नौकरी पा गया था।
- ग्यारह साल पहले गाँव में भू-स्खलन हुआ, भूप सिंह के माँ, बाबा, खेत, घर सब मलबे में दब जाते हैं। किसी तरह भूप दादा बच जाते हैं। भूप शैला नाम की लड़की से विवाह करके अपने जीवन की एक नई शुरुआत करता है। दोनों

की मेहनत व लगन से खेती बढ़ती चली गई। फिर उन दोनों ने पहाड़ को काटकर बड़ी मेहनत से झरने को खेतों की तरफ मोड़ने में सफल हुए।

- सैलानी शेखर और रूप सिंह घोड़े पर चलते हुए उस लड़के के रोजगार के बारे में सोच रहे थे जिसने उनको घोड़े पर सवार कर रखा था और स्वयं पैदल चल रहा था। उसका नाम महीप था वह अपने पिता भूप सिंह से नाराज़ होकर स्वयं मेहनत मजदूरी करके अपना जीवन यापन कर रहा था। हम भी बाल मजदूरी के बारे में सोचते हैं। बच्चों की यह उम्र तो पढ़ने-लिखने की होती है।
- रूप सिंह ने पर्वतारोहण संस्थान में पहाड़ों पर चढ़ना भली प्रकार सीखा था। वहाँ वह आधुनिक उपकरणों की सहायता से पहाड़ों पर चढ़ता था। यहाँ सिर्फ पेड़-पत्थरों के नाममात्र सपोर्ट से शरीर का संतुलन बनाए रखना उसे कठिन प्रतीत हो रहा था। यही कारण था रूप सिंह थोड़ी ही देर में हांफ गया था। इसके विपरीत रूप का बड़ा भाई भूप सिंह न जाने वनमानुष थे या रोबोट। वे चढाई चढ़ते समय जिस धैर्य, आत्मविश्वास, ताकत और कुशलता से मांसपेशियों और अंगों का उपयोग कर रहे थे, वह रूप सिंह और शेखर के लिए हैरत की बात थी।
- रूप सिंह ने बूढ़े तिरलोक सिंह को यह बताया कि पर्वतारोहण संस्थान पहाड़ पर चढ़ने की नौकरी के लिए उसे चार हजार रूपये प्रतिमाह तनख्वाह देती है तब बूढ़े तिरलोक सिंह को पहाड़ पर चढ़ना जैसी नौकरी की बात सुनकर अजीब लगा क्योंकि पहाड़ पर चढ़ना आम बात है। तिरलोक सिंह को लगता है कि ये तो हमारा रोजमर्रा का काम है, इस काम के लिए नौकरी पर रखना और चार हजार रूपये खर्च करना सरकार की मूर्खता है।
- पहाड़ों का जीवन अत्यन्त कठिन होता है जैसे-पानी की समस्या, ईंधन की कमी, शिक्षा के लिए उचित साधनों की कमी रोजगार के साधनों में कमी, स्वास्थ्य सेवाओं में कमी, बिजली की पर्याप्त सुविधा नहीं। इन समस्याओं को दूर करके उनके जीवन स्तर को सुधारा जा सकता है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : रूप सिंह पहाड़ पर चढ़ना सीखने के बावजूद भूप सिंह के सामने बौना क्यों पड़ गया था?

उत्तर : जब ग्यारह वर्षों बाद रूप सिंह की मुलाकात अपने भाई रूप सिंह से हुई तो वह उन्हें ऊपर पहाड़ पर स्थित अपने घर चलने के लिए कहता है। लेकिन रूप सिंह व शेखर के लिए पहाड़ की सीधी चढ़ाई चढ़ना बड़ा मुश्किल हो रहा था। तब भूप सिंह नीचे आया ओर अपने मफलर को मजबूती से कमर में बाँधकर रूप सिंह को ऊपर ले गया। चूँकि रूप सिंह जो पिछले ग्यारह वर्ष से पहाड़ी क्षेत्र में रहने के बजाए समतल स्थान पर रह रहा था और उसके लिए पहाड़ की सीधी चढ़ाई चढ़ना आसान नहीं था और ऊपर से उसके पास पहाड़ पर चढ़ाई करने के संसाधन भी नहीं थे। लेकिन भूपसिंह के लिए पहाड़ पर चढ़ना रोज का काम था और यह उसके लिए सामान्य बात थी। उसमें रूप सिंह से कहीं अधिक धैर्य, आत्मविश्वास और शक्ति थी। इस प्रकार आज रूप सिंह पहाड़ पर चढ़ने की ट्रेनिंग लेने के बाद भी भूप सिंह के सामने बौना महसूस कर रहा था।

प्रश्न 2 : सैलानी (शेखर और रूप सिंह) घोड़े पर चलते हुए उस लड़के के रोजगार के बारे में सोच रहे थे जिसने उनको घोड़े पर सवार कर रहा था और स्वयं पैदल चल रहा था। क्या आप भी बाल मजदूरों के बारे में सोचते हैं?

उत्तर : बाल मजदूरी भारत वर्ष की एक सबसे बड़ी समस्या हैं लेकिन उसके बावजूद प्रत्येक क्षेत्र में बाल मजदूरी मिलना एक सामान्य बात हैं पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले लोगों की आर्थित स्थिति अच्छी न होने और वहाँ प्राकृतिक आपदाओं के कारण स्थिति अत्यन्त विकट बन जाती हैं साल के करीब 5-6 महीने पहाड़ी क्षेत्रों में बर्फ पड़ने के कारण उस क्षेत्र में सभी काम बंद हो जाते हैं जिसके कारण परिवारों को अपना पेट भरने के लिए पर्यटकों पर निर्भर रहना पड़ता है। इसी कारण कई लोग अपने बच्चों को बाल मजदूरी के काम मे लगा देते हैं। ताकि परिवार को आर्थिक सहायता मिल सके। मेरा मानना है कि यदि परिवारों की आर्थिक स्थिति अच्छी हो तो वे कभी भी अपने बच्चों से बाल मजबदूरी ना करवायें। इसके लिए राज्य एवं केन्द्र सरकार को चाहिए कि वे आर्थिक रूप से गरीब परिवारों के लिए रोजगार के साधन उपलब्ध करायें और बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान करें। जिससे इनके बचपन को बचाया जा सके और ये बच्चे बड़े होकर देश के सच्चे नागरिक बन सके।

प्रश्न 3 : पहाड़ों की चढ़ाई में भूपदादा का कोई जवाब नहीं। उनके चरित्र चित्रण की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : भूप दादा रूप सिंह के बड़े भाई थे और उनका सारा जीवन पहाड़ों पर बीता था। उनके चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. **आत्म विश्वासी :** भूपदादा एक आत्मविश्वासी व्यक्ति थे। इसी के बल पर वे अपने नष्ट हुए खेत, घर को पुन: बसा देते हैं। वे शैला के साथ मिलकर

झरने का मुँह मोड़ देते हैं, रूप और शेखर को ऊपर चढ़ाकर ले आता हैं

2. **धैर्यशील :** भूपदादा एक धैर्यशील व्यक्ति हैं। वे मुश्किलों में अपना धैर्य नहीं खोते थे। जब पहाड़ के गिरने से उनके माँ-बाप, खेत, घर सब कुछ बर्बाद हो जाता है, तब भी वे अपना धैर्य नहीं छोड़ते हैं, बल्कि हिम्मत से काम लेते हैं।

3. **स्नेहशील :** भूपदादा के मन में अपने छोटे भाई रूप सिंह के लिए बहुत प्यार है। जब रूप सिंह उन्हें धक्का देता है, तब भी वे गुस्सा नहीं करते बल्कि उसकी जान बचाते हैं।

4. **परिश्रमी / मेहनती :** भूपदादा बहुत मेहनती थे। वे शैला के साथ मिलकर झरने का मुँह मोड़ते हैं। दोनों बैलों को कंधे पर उठाकर ले जाते हैं।

5. **चढ़ाई में कुशल :** भूपदादा का पहाड़ों पर चढ़ाई चढ़ने का कोई मुकाबला नहीं कर सकता था। रूप सिंह और भूप सिंह दोनों भाई पहाड़ी होने के बाद भी जहाँ रूप सिंह आधुनिक उपकरणों की सहायता से चढ़ाई करता था। वहीं भूप दादा को चढ़ाई के लिए किसी सहारे की जरूरत नहीं थी। वे तो वनमानुष, छिपकली की तरह चढ़ाई करते थे।

प्रश्न 4 : आरोहण कहानी पढ़ने के बाद पहाड़ी स्त्रियों की क्या छवि बनती है? उस पर विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर :

1. **दयनीय स्थिति :** पर्वतीय वातावरण होने के कारण उनका जीवन दु:ख कठिनाईयों और अभावों से भरा हुआ है। शैला ने भूप दादा का मुसीबत में पूरा साथ दिया, परन्तु मात्र खेती के बोझ के कारण उन्होंने दूसरी शादी कर ली। जिसके कारण शैला को आत्महत्या करनी पड़ी।

2. **परिश्रमी :** पहाड़ी स्त्रियाँ परिश्रमी होती हैं। वे पुरुषों का आजीविका कमाने, खेती करने इत्यादि में पूरा साथ-साथ देती हैं। जैसे शैला ने भूप सिंह का साथ दिया और खेती को फिर से बढ़ा दिया। शैला भेड़ें चराती है, खेती का काम करती हैं

3. **अनपढ़ :** पहाड़ी स्त्रियाँ अनपढ़ या कम पढ़ी-लिखी होती हैं क्योंकि वहाँ पढ़ाई के अवसर पूरी तरह से उपलब्ध नही हैं।

4. **सरल जीवन शैली :** उनकी जीवन शैली सरल व साधारण होती हैं। वे भोली-भाली व छल-कपट से दूर रहती हैं। तभी तो जब भूपदादा, दूसरी शादी कर लेता है तो वह उन्हें कुछ नहीं बोलती, बल्कि आत्महत्या कर लेती हैं।

(नैतिक मूल्यों पर आधारित)

प्रश्न 1 : पहाड़ों में मानव जीवन पहाड़ जैसा ही कठिन और दुर्गम है, किन्तु पहाड़ी लोग उससे हार नहीं मानते। 'आरोहण' कहानी के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 2 : पारिवारिक परिस्थितियों ने महीप को समय से पहले ही व्यस्क बना दिया था। ऐसे बच्चे के प्रति समाज और परिवार का क्या उत्तरदायित्व है? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

पाठ-9

बिस्कोटर की माटी

- प्रस्तुत पाठ में लेखक अपने गाँव तथा वहाँ के प्राकृतिक परिवेश, ग्रामीण जीवनशैली, गांवों में प्रचलित घरेलु उपचार तथा अपनी माँ से जुड़ी यादों का वर्णन करता है।
- कोइयाँ एक प्रकार का जलपुष्प है। इसे कुमुद और कोकाबेली भी कहते हैं। शरद ऋतु में जहाँ भी पानी एकत्रित होता है, कोइयाँ फूल उग जाता है। शरद की चाँदनी में कोइयाँ की पत्तियाँ तथा उजली चाँदनी एक सी लगती है। इस पुष्प की गंध अत्यंत मादक होती है।
- लेखक के अनुसार बच्चे का माँ से संबंध भी अद्‌भुत होता है। बच्चा जन्म लेते ही माँ के दूध को भोजन के रूप में ग्रहण करता हैं नवजात शिशु के लिए दूध अमृत के समान हैं। बच्चा माँ से सिर्फ दूध ही ग्रहण नहीं करता, उससे संस्कार भी ग्रहण करता है जो उसके चरित्र तथा व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होते हैं।
- बच्चा सुबकता है, रोता है, माँ को मारता है। माँ भी कभी-कभी मारती है फिर भी बच्चा माँ से चिपटा रहता है। बच्चा माँ के पेट से गंध स्पर्श भोगता है। बच्चा दाँत निकलने पर टीसता है अर्थात् हर चीज़ को दाँत से काटता है।
- चाँदनी रात में खटिया पर बैठकर जब माँ बच्चे को दूध पिलाती है, तब बच्चा दूध के साथ चाँदनी भी पीता है अर्थात् चाँदनी माँ के समान स्नेह, आनंद तथा ममता देती है, माँ से लिपटकर बच्चे का दूध पीना जड़ से चेतन होना यानि मानव जन्म लेने की सार्थकता है।
- बिसनाथ अभी माँ का दूध पीता था कि उसका छोटा भाई आ गया। माँ के दूध पर छोटे भाई का अधिकार हो गया। बिसनाथ का दूध छूट गया। बिसनाथ को उनके तीन साल होने तक पड़ोस की कसेरिन दाई ने पाला। माँ का स्थान दाई ने ले लिया। यह बिसनाथ पर अत्याचार हुआ।
- दिलशाद गार्डन में लेखक बतखों को देखता है। बत्तख अंडे देने के समय पानी छोड़कर जमीन पर आ जाती है। लेखक ने एक बत्तख को कई अंडों को सेते देखा।

- लेखक को बत्तख माँ तथा मानव शिशु माँ में कई समानताएँ दिखीं। जिस प्रकार बत्तख पंख फैलाकर अंडों को दुनिया की नज़रों से बचाकर रखती है। अपनी पैनी चोंच से सतर्कता से कोमलता से अपने पंखों के अंदर छुपा कर रखती है, हमेशा निगाह कौवे की ताक पर रखती है उसी प्रकार मानव शिशु माँ भी अपने बच्चों को दुनिया की नज़रों से बचाती है, उन पर आने वाली मुसीबत को भांपकर उनकी रक्षा करती है।

- गर्मियों की दोपहर में लेखक घर से चुपचाप बाहर निकल जाता था। लू लगने पर माँ धोती या कमीज से गांठ लगाकर प्याज बांध देती। लू लगने पर कच्चे आम का पन्ना पिया जाता, आम को भूनकर या उबालकर गुड़ या चीनी में उसका शरबत पिया जाता, उसे देह में लेपा जाता था, नहाया जाता तथा उससे सिर धोया जाता था।

- बिस्कोहर में बरसात आने से पहले बादल ऐसे घिरते हैं कि दिन में ही अंधेरा हो जाता है। बरसात कई दिन तक होती है जिसके कारण घर की दीवार गिर जाती है तथा घर धँस जाता है।

- बरसात आने पर पशु-पक्षी सभी पुलकित हो उठते हैं। बरसात में कई कीड़े भी निकल आते हैं। उमस के कारण मछलियाँ मरने लगती हैं। पहली बारिश में दाद-खाज, फोड़ा फुंसी ठीक हो जाते हैं।

- मैदानों, खेतों तथा तालावों में कई प्रकार के सांप होते हैं। सांप को देखने में डर तथा रोमांच दोनों है। डोडहा ओर मजगिदवा विषहीन होते हैं। डोडहा को वामन जाति का मानकर मारा नहीं जाता। घामिन भी विषहीन है। घेर कडाइव भटिहा तथा गोहुअन खतरनाक है जिसमें से सबसे अधिक गोहुअन खतरनाक है जिसे फेंटाश भी कहते हैं।

- गाँव में लोग प्रकृति के बहुत निकट हैं। लेखक के अनुसार फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी करते हैं क्योंकि गांव में कई रोगों का इलाज फूलों द्वारा किया जाता है। फूलों की गंध से साँप महामारी, देवी, चुडैल आदि का संबंध जोड़ा जाता है। गुड़हल के फूल को देवी का फूल मानते हैं। बेर के फूल सूंघने से बर्रे, ततैया का डंक झड़ता है। आम के फूल कई रोगों के उपचार में काम आते हैं। नीम के पत्ते और फूल चेचक में रोगी के समीप रखते हैं।

- लेखक के गाँव में कमल भी खिलते हैं। हिंदुओं के यहाँ कमल-पत्र पर भोजन परोसा जाता है। कमल पत्र की पुरइन भी कहते हैं तथा कमल की नाल को

भसीण कहते हैं। कमल ककड़ी केवल बिक्री के लिए प्रयोग की जाती है। गट्टा (कमल-बीज) खाया जाता है।

- अपने एक रिश्तेदार के घर लेखक ने एक रूपवती अपनी उम्र से बड़ी औरत, देखी जिसकी सुन्दरता लेखक के हृदय में बस गई। लेखक को प्रकृति के समान ही वह औरत आकर्षक लगी। प्रकृति के समस्त दृश्यों, जूही की लता, चाँदनी की छटा, फूलों की खूशबू में उन्हें वह औरत नज़र आने लगी। लेखक को लगा, सुन्दर प्रकृति नारी के सजीव रूप में आ गई हो।
- लेखक जिस औरत को देखकर समस्त प्रकृति के सौन्दर्य को भूल गया उससे अपनी भावनाओं का इज़हार न कर सका। वह सफेद रंग की साड़ी पहने रहती है, आँखों में, कैसी व्यथा लिए दिखती है। वह इंतजार करती हुई दिखती है। लेखक के लिए वह हर कला के अस्वाद में वह मौजूद है। लेखक के लिए हर सुख-दु:ख से जोड़ने की सेतु है। इस स्मृति के साथ मृत्यु का बोध सजीव तौर पर जुड़ा है।

पाठ संबंधी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : लेखक ने किन आधारों पर अपनी माँ की तुलना बतख से की हैं?

उत्तर : लेखक ने बत्तख माँ और मानव शिशु माँ की तुलना करते हुए कई पक्ष सामने रखे हैं। लेखक को दोनों में कई समानताएँ दिखती हैं।

1. **खतरों से बचाना :** जिस प्रकार बत्तख अपने पंखों को फैलाकर अंड़ों की दुनिया की नज़रों से बचाकर रखती है उसी प्रकार मानव माँ भी अपने बच्चों की ढ़ाल बनकर उन्हें दुनिया के खतरों से बचाती है।
2. **सतर्कता और कोमलता से देखरेख :** जैसे बत्तख माँ अपनी पैनी चोंच से सतर्कता बरतते हुए कोमलता से अंड़ों को अपने पंखों के अंदर छुपाती है उसी प्रकार मानव माँ भी बच्चे को डांटते मारते समय ध्यान रखती है कि शिशु को नुकसान न पहुँचे।
3. **आने वाले खतरे को भाँपना :** बत्तख माँ की निगाह सदैव कौवे की ताक पर रहती है, मानव माँ भी बच्चे पर आने वाले संभावित खतरे को भांप लेती है।

प्रश्न 2 : लेखक की प्रकृति, नारी और सौंदर्य संबंधी मान्यताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर:1. **लेखक के लिए प्रकृति :** लेखक का प्रकृति से गहरा लगाव था। उसे प्रकृति के कई दृश्य अनुपम एवं हृदयग्राही लगते थे। प्रकृति उसके लिए सौन्दर्य का पर्याय थी।

2. **लेखक की दृष्टि में नारी :** लेखक ने अपने गाँव में एक रूपवती नारी देखी जिसकी सुन्दरता लेखक के हृदय में बस गई। वह भी लेखक को सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति लगी।

3. **प्रकृति और नारी में समानता :** सौन्दर्य की समानता होने के कारण लेखक को लगा जैसे प्रकृति नारी का सजीव रूप लेकर उसके समक्ष आ गई। प्रकृति के समस्त दृश्यों में जूही की लता, चाँदनी की छटा, फूलों की खुशबू आदि में उसे नारी के सौन्दर्य का आभास होता था। सौन्दर्य के समान धर्म होने के कारण लेखक को प्रकृति और नारी एकाकार होते हुए दिखे।

प्रश्नोत्तर

1. कोइयाँ किसे कहते हैं? उसकी विशेषताएँ बताइए।
2. विश्वनाथ पर क्या अत्याचार हो गया?
3. गर्मी और लू से बचने के उपायों का विवरण दीजिए।
4. बिसनाथ द्वारा बिस्कोहर में हुई बरसात का वर्णन कीजिए।
5. बिस्कोहर गांव में साँपों की कौन-कौन सी प्रजातियाँ थी?
6. ''बच्चा दूध ही नहीं चाँदनी भी पी रहा है, चाँदनी भी माँ जैसी पुलक-स्नेह ममता दे रही है।'' आशय स्पष्ट कीजिए।
7. बच्चे का माँ का दूध पीना, सिर्फ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन-चरित्र कैसे होता है?

मूल्य परक प्रश्न (नैतिक मूल्यों पर आधारित)

1. गाँव में प्रकृति से संबंध स्थापित कर व्यक्ति अपनी मिट्टी से जुड़ा रहता है जो शहरों में नहीं होता। आपके विचार में अपनी मिट्टी से जुड़े रहने का कौन

सा सकारात्मक प्रभाव व्यक्ति जीवन पर पड़ता है?

2. आधुनिक चिकित्सा उपचार के साथ आज भी लोग घरेलू नुस्खे अपनाकर इलाज करते हैं। आपके विचार में दोनों प्रकार के उपचारों का समन्वय कितना हितकारी है?

3. आज के समय में हम ऋतु परिवर्तन के कारण प्रकृति में होने वाले बदलावों को अनुभव नहीं कर पाते। प्रकृति से जुड़े रहने के कुछ उपायों का वर्णन कीजिए।

4. माँ बच्चों की सुरक्षा के लिए कई प्रयास करती है। माँ के इस प्रेम और ममता की जीवन निर्माण में क्या भूमिका है?

——— • ——— • ——— • ——— • ———

पाठ-4

अपना मालवा : खाऊ उजाड़ू सभ्यता में

- लेखक ने इस पाठ में मालवा प्रदेश को मौसम, ऋतुएँ, नदियाँ, वहाँ का जनजीवन तथा संस्कृति का अत्यंत सजीव वर्णन किया है।
- मालवा में जब अत्यधिक बारिश होती है तो जनजीवन पर इसका प्रभाव पड़ता है। यातायात के साधन ठप हो जाते हैं तथा लोगों को आने जाने में कठिनाई होती है।
- बारिश होने के कारण गेहूँ और चने की फसल अच्छी होती है किंतु सोयाबीन की फसल गल जाती है।
- अतिवृष्टि से नदियों में बाढ़ आ जाती है और पानी लोगों के घरों, दुकानों आदि में घुस जाता है।
- लेखक के अनुसार मालवा में पहले जैसा पानी अब नहीं गिरता क्योंकि उद्योग धंधों से निकलने वाली गैसों से पर्यावरण गर्म हो रहा है। वायु प्रदूषण फैल रहा है। पर्यावरण असंतुलित हो गया है। वर्षा ऋतु पर भी इसका कुप्रभाव पड़ा और मालवा में औसतन वर्षा कम हो गई।
- आज के इंजीनियर पश्चिमी शिक्षा को उच्च मानते हैं। उनका मानना है कि ज्ञान पश्चिम के रिनेंसा के बाद आया। किंतु भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा इतिहास की अज्ञानता के कारण उन्हें ये नहीं पता कि जिस पानी के प्रबंध में वे स्वयं को माहिर मानते हैं उसे विक्रमादित्य, भोज और मुंज ने रिनेसा के आने से पहले ही समझ लिया था।
- पठार पर पानी रोकने के लिए इन्होंने तालाब-बावड़ियाँ बनवाई और बरसात का पानी रोक कर धरती के गर्भ के पानी को जीवंत रखा।
- हमारे इंजीनियरों ने तालाबों और बावड़ियों को बेकार समझ कर उन्हें कीचड़ से भर जाने दिया।
- नवरात्रि की पहली सुबह मालवा में घट स्थापना होती है। लोग गोबर से घर आँगन लीपने, मानाजी के ओटले को रंगोली से सजाने तथा सज-धजकर

त्यौहार मनाने की तैयारी में है।

- लेखक हैरान है कि इस समय भी बदल गरज रहे हैं तथा बरसने के पूरे आसार है।
- आँकारेश्वर में नर्मदा पर बांध बन रहा था जो सीमेंट कंक्रीट के विशाल राक्षस के समान प्रतीत होता है। नदी के वेग में बाँध से रूकावट आ गई जिसके कारण नदी तिनफिन करती बह रही है। मानो बाँध बनने से चिढ़ रही हो। बाँध के निर्माण में लगी मशीनें और ट्रक गुर्राते हुए से प्रतीत होते हैं।
- ज्योतिर्लिंग का तीर्थ धाम भी पहले जैसा नहीं लगता।
- वर्तमान युग औद्योगिक विकास का युग है। नदियाँ गंदे नालों में बदल रही हैं। लोगों द्वारा कूड़ा करकट नदियों में बहाया जाता है। कल-कारखानों उद्योगों का रासायनिक पदार्थ नदियों में बहाया जाता है। हिंदु सभ्यता से जुड़ी पूजा सामग्रियों को जल में प्रवाहित किया जाता है। इन सभी कारणों से नदियाँ सड़े नालों में बदल रही हैं। शिप्रा, चंबल, नर्मदा, चोरल इन सभी नदियों को विकास की सभ्यता ने गंदे पानी के नालों में बदल दिया है।
- हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह वास्तव में उजाड़ की अपसभ्यता है। आधुनिक औद्योगिक विकास ने हमें प्रकृति से काट दिया है। हमारे नदी नाले सूख गये हैं। पर्यावरण प्रदूषित हो गया है। विकास की औद्योगिक सभ्यता, वास्तविकता में उजाड़ की अपसभ्यता है।
- यह खाऊ-उजाड़ सभ्यता यूरोप और अमेरिका की देन है। वे अपनी इस पद्धति को बदलना नहीं चाहते। वातावरण को गर्म करने वाली गैसें सबसे ज्यादा यूरोप और अमेरिका से निकलती है। फिर भी वे अपनी इस जीवन पद्धति से समझौता नहीं करना चाहते।
- इन गैसों द्वारा तापमान के बढ़ने के कारण ही समुद्रों का पानी गर्म हो रहा है, धरती के ध्रुवों पर जमी बर्फ पिघल रही है मौसमों का चक्र बिगड़ रहा है। लद्दाख में बर्फ की जगह पानी गिरा, बाडमेर के गांव बाढ़ में डूब गए। यही कारण है कि मालवा में अब डग-डग रोटी पग-पग नीर नहीं मिलता।
- लेखक के अनुसार हम अमेरिका तथा यूरोप की नकल करते हुए ऐसी जीवन पद्धति, संस्कृति, सभ्यता को अपना रहे हैं जो पर्यावरण के लिए नुकसानदायक सिद्ध होगा।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : धरती का वातावरण गरम क्यों हो रहा है? इसके गरम होने में यूरोप और अमेरिका की भूमिका लिखें।

उत्तर: 1. **वातावरण के गरम होने का कारण :** आज औद्योगिक विकास के चलते हम जो उद्योग धंधों, कल-कारखाने लगा रहे हैं उनसे वातावरण को गरम करने वाली गैसें निकलती हैं। ये गैसे वातावरण के तापमान को कई डिग्री से बढ़ा रही है।

2. **यूरोप और अमेरिका की भूमिका :** ये हानिकारक गैसें सबसे अधिक यूरोप और अमेरिका जैसे देशों से निकलती है। इन देशों में लगे उद्योगों से वातावरण सर्वाधिक प्रदूषित हो रहा है।

3. **वातावरण के गर्म होने से हानियाँ :** इन गैसों द्वारा तापमान बढ़ने के कारण समुद्रों का पानी गर्म हो रहा है, धरती के ध्रुवों पर जमी बर्फ पिघल रही है, मौसमों का चक्र बिगड़ रहा है तथा पर्यावरण असंतुलित हो गया है।

4. **इसे रोकने के लिए प्रयास :** इन हानियों से बचने के लिए हमें प्रकृति को विकास के साथ लेकर चलना होगा। उद्योग धंधों में ऐसा विकल्प चुनना होगा जिससे हमारे पर्यावरण को भी हानि न पहुँचे। जैसे बंजर धरती पर औद्योगिकरण करना या जंगलों को बेवजह न काटना आदि।

प्रश्न 2 : आज की सभ्यता इन नदियों को गंदे पानी के नाले कैसे बना रही हैं?

उत्तर : आज की सभ्यता के अनुसार हम नदियों को माता नहीं मानते बल्कि उसे उपयोग की वस्तु समझते हैं तथा कई रूपों में उसे दूषित कर रहे हैं-

1. **कूड़ा-कचरा फेंक कर :** लोगों द्वारा अपने घर का कूड़ा कचरा इन नदियों में बहा दिया जाता है। जिसे पूर्णत: बहा ले जाने में असमर्थ नदियाँ प्रदूषित हो जाती हैं।

2. **पूजा सामग्री बहाकर :** हिन्दु सभ्यता के अनुसार पूजा सामग्री को पवित्र मान नदियों में बहा दिया जाता है जिसके कारण नदियाँ अपवित्र होती जा रही है।

3. **कल कारखानों का रासायनिक पदार्थ :** उद्योगों कारखानों से निकला सारा रासायनिक पदार्थ नदियों में बहाया जाता है जिनसे नदियों का पानी जहरीला भी हो जाता है।

4. **नदियों का निरंतर रखरखाव न करना :** नदियों को अनावश्यक समझ कर इनके रखरखाव व सफाई पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता जिससे ये गंदे नालों के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : मालवा में जब बरसात की झड़ी लगी रहती है, तब मालवा के जनजीवन पर इसका क्या असर पड़ता है?

प्रश्न 2 : अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था, इसका क्या कारण है?

प्रश्न 3 : मालवा में विक्रमादित्य भोज और मुंज ने पानी के रखरखाव के लिए क्या प्रबंध किए?

प्रश्न 4 : नयी दुनिया की लाइब्रेरी से क्या पता चलता है?

प्रश्न 5 : 'अमेरिका की घोषणा है कि वह अपनी खाऊ उजाडू जीवन पद्धति पर कोई समझौता नहीं करेगा' इस कथन पर विचार कीजिए।

प्रश्न 6 : हमारे आज के इंजीनियर ऐसा क्यों समझते हैं कि वे पानी के प्रबंध को जानते हैं और पहले जमाने के लोग कुछ नहीं जानते थे?

प्रश्न 7 : लेखक के विचार में हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता कैसे है?

अन्य मूल्यपरक प्रश्न (नैतिक मूल्यों पर आधारित)

प्रश्न 1 : लेखक को नर्मदा नदी की दुर्दशा देखकर हैरानी हुई तथा वह निराश हो गया। आपके विचार में नदियों की दुर्दशा रोकने के क्या उपाय हो सकते हैं?

प्रश्न 2 : आधुनिक प्रगति ने पानी को पाताल से निकाल लिया जिससे बाढ़, भूकम्प, सूखा आदि आपदाओं को बुलावा मिला। प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने तथा जल संरक्षण के कुछ उपाय लिखिए।

अभिव्यक्ति और माध्यम

1. विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन
2. पत्रकारिता लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया
3. विशेष लेखन - स्वरूप और प्रकार
4. सृजनात्मक लेखन : कैसे बनती है कविता
5. नाटक लिखने का व्याकरण
6. कैसे लिखें कहानी
7. नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

पाठ-1

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

मुख्य बिन्दु

- जनसमाज द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले जन संचार के अनेक माध्यम हैं जैसे - मुद्रित (प्रिंट), रेडियो, टेलीविजन एवं इंटरनेट। मुद्रित अर्थात् समाचार पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए, रेड़ियो सुनने के लिए, टी.वी. देखने व सुनने के लिए तथा इंटरनेट पढ़ने, सुनने व देखने के लिए प्रयुक्त होते हैं। इन माध्यमों के प्रयोग करने का आधार लोगों की रूचि, माध्यम की उपयुक्तता और उपयोगिता पर निर्भर करता है। यही कारण है कि नए माध्यमों के आ जाने पर भी इनका महत्व कम नहीं होता, बल्कि सभी माध्यम प्रयुक्त होते हैं।

- जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में मुद्रित (प्रिंट) माध्यम सबसे पुराना, माध्यम है जिसके अंतर्गत समाचार, पत्र, पत्रिकाएँ आती हैं। मुद्रण का प्रारंभ चीन में हुआ। तत्पश्चात् जर्मनी के गुटेनबर्ग ने छापाखाना की खोज की। भारत में सन् 1556 में, गोवा में पहला छापाखाना खुला जिसका प्रयोग मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए किया था। आज मुद्रण कप्यूटर की सहायता से होता है।

- मुद्रित माध्यम की खूबियाँ (विशेषताएँ) देखें तो हम पाएंगे कि लिखे हुए शब्द स्थायी होते हैं। इन लिखे हुए शब्दों को हम एक बार ही नहीं, समझ न आने पर कई बार पढ़ सकते हैं और उन पर चिंतन-मनन करके संतुष्ट भी हो सकते हैं। जटिल शब्द आने पर शब्दकोश का प्रयोग भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त किसी भी खबर को अपनी रूचि के अनुसार पहले अथवा बाद में पढ़ सकते हैं। चाहे तो किसी भी सामग्री को लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं।

- मुद्रित माध्यम की खामियाँ (कमियाँ) - निरक्षरों (अशिक्षित लोगों) के लिए अनुपयोगी, टी.वी. तथा रेडियो की भांति मुद्रित माध्यम तुरंत घटी घटनाओं की जानकारी नहीं दे पाता। समाचार पत्र निश्चित अवधि अर्थात् 24 घंटे में एक बार, साप्ताहिक सप्ताह में एक बार तथा मासिक मास में एक बार प्रकाशित

होता है। किसी भी खबर अथवा रिपोर्ट के प्रकाशन के लिए एक डेडलाइन (निश्चित समय सीमा) होती है। स्पेस (स्थान) सीमा भी होती है। महत्व एवं जगह की उपलब्धता के अनुसार ही किसी भी खबर को स्थान दिया जाता है। मुद्रित माध्यम में अशुद्धि होने पर, सुधार हेतु अगले अंक की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

- मुद्रित माध्यम में लेखन के लिए भाषा, व्याकरण, शैली, वर्तनी, समय-सीमा, आबंटित स्थान, अशुद्धि शोधन एवं तारतम्यता पर विशेष ध्यान देना जरूरी है।
- **रेडियो :** रेड़ियो जनसंचार का श्रव्य माध्यम है जिसमें ध्वनि, शब्द और स्वर ही प्रमुख है। रेडियो मूलत: एक रेखीय (लीनियर) माध्यम है। रेडियो समाचार की संरचना समाचार पत्रों तथा टी.वी. की तरह उल्टा पिरामिट शैली पर आधारित होती है। समाचार लेखन की ये शैली सर्वाधिक प्रचलित, प्रभावी तथा लोकप्रिय शैली है। लगभग 90 फीसदी समाचार या स्टोरिज इसी शैली में लिखी जाती है।
- **उल्टा पिरामिड शैली :** उल्टा पिरामिट शैली में समाचार पत्र के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सर्वप्रथम लिखा जाता है। उसके बाद घटते हुए महत्व क्रम में दूसरे तथ्यों या सूचनाओं को बताया जाता है अर्थात् कहानी की तरह क्लाइमैक्स अंत में नहीं वरन् खबर के आरंभ में आ जाता है। इस शैली के अंतर्गत समाचारों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-इंट्रो, बॉडी, समापन।

  1. **इंट्रो :** समाचार का मुख्य भाग

  2. **बॉडी :** घटते क्रम में खबर का विस्तृत ब्यौरा।

  3. **समापन :** अधिक महत्वपूर्ण न होने पर अथवा स्पेस न होने पर इसे काटकर छोटा भी किया जा सकता है।

उल्टा पिरामिड शैली

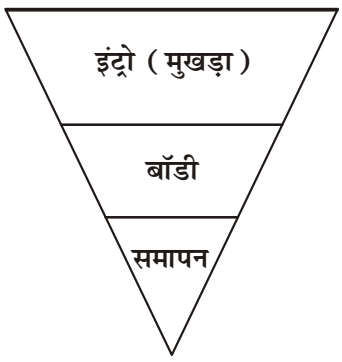

समाचार लेखन की बुनियादी बातें : साफ सुथरी टाइप्ड कॉपी, ट्रिपल स्पेस में टाइप करते हुए दोनों ओर हाशिया छोड़ें, एक पंक्ति में 12-13 शब्दों से अधिक न हों, पंक्ति के अंत में विभाजित शब्द का प्रयोग न करें। समाचार कॉपी में जटिल शब्द एवं संक्षिप्ताक्षर का प्रयोग न करें। लंबे अंकों को तथा दिनांक को शब्दों में लिखें। निम्नलिखित, क्रमांक, अधोहस्ताक्षरित, किंतु, लेकिन, उपर्युक्त, पूर्वोक्त जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। वर्तनी पर विशेष ध्यान दें। समाचार लेखन की भाषा को प्रभावी बनाने के लिए आम बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग करें।

टेलीविजन : टेलीविजन जनसंचार का दृश्य श्रव्य माध्यम है। टेलीविजन भी रेडियो की भांति एक रेखीय माध्यम है। टी.वी. में शब्दों व ध्वनियों की अपेक्षा दृश्यों (तस्वीरों) का महत्व अधिक है। टी.वी. में शब्द दृश्यों के अनुरूप तथा उनके सहयोगी के रूप में चलते हैं। टेलीविजन में कम से कम शब्दों में अध्कि से अधिक खबर बताने की शैली का प्रयोग किया जाता है। अतः टी.वी. में समाचार लेखन की प्रमुख शर्त दृश्य के साथ लेखन है।

- **टी.वी. खबरों के प्रमुख चरण :** प्रिंट अथवा रेडियो की भांति टी.वी. चैनल समाचार देने का मूल आधार सूचना देना है। टी.वी. में ये सूचनाएँ इन चरणों से होकर गुजरती हैं-

  1. फ्लैश (ब्रेकिंग न्यूज) 2. ड्राई एंकर, 3. फोन इन, 4. एंकर विजुअज, 5. एंकर-बाइट, 6. लाइव, 7. एंकर पैकेज।

- **विशेषताएँ :** देखने व सुनने की सुविधा, जीवंतता तुरन्त घटी घटनाओं की जानकारी, प्रभावशाली, समाचारों का लगातार प्रसारण।

- **कमियाँ :** भाषा शैली के स्तर पर अत्यंत सावधानी, बाइट का ध्यान रखना आवश्यक है, कार्यक्रम का सीधा प्रसरण कभी-कभी सामाजिक उत्तेजना को जन्म दे सकता है, अपरिपक्व बुद्धि पर सीधा प्रभाव।

- **रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा :** भाषा के स्तर व गरिमा को बनाए रखते हुए सरल भाषा का प्रयोग करें ताकि सभी वर्ग तथा स्तर के लोग समझ सकें। वाक्य छोटे-छोटे तथा सरल हों, वाक्यों में तारतम्यता हो। जटिल शब्दों, सामासिक शब्दों एवं मुहावरों के अनावश्यक प्रयोग से बचें। सरल एवं आम बोलचाल की भाषा हो जिनमें विद्वता न झलके। ऐसी ही भाषा बोलचाल के निकट होती है।

इंटरनेट : इंटरनेट की दीवानी नई पीढ़ी को अब समाचार पत्र पर छपे समाचार पढ़ने में आनंद नहीं आता उन्हें स्वयं को घंटे दो घंटे में अपडेट रखने की आदत सी बन गई है। भारत में भी इंटरनेट कनैक्शनों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। इंटरनेट द्वारा जहाँ हम सूचना, मनोरंजन, ज्ञान तथा निजी व सार्वजनिक संवादों का आदान-प्रदान कर सकते हैं वहीं इसे अश्लीलता, दुष्प्रचार एवं गंदगी फैलाने का माध्यम भी बनाया जा रहा है। इंटरनेट का प्रयोग समाचारों के संप्रेषण, संकलन तथा सत्यापन एवं पुष्टिकरण में भी किया जा रहा है। टेलीप्रिंटर के जमाने में जहाँ एक मिनट में केवल 80 शब्द एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजे जा सकते थे वहीं आज एक सैकण्ड में लगभग 70 हजार शब्द भेजे जा सकते हैं।

- इंटरनेट पर समाचार पत्र का प्रकाशन अथवा खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर यदि हम किसी भी रूप में समाचारों, लेखों, चर्चा-परिचर्चाओं, बहसों, फीचर, झलकियों के माध्यम से अपने समय की धड़कनों को अनुभव कर दर्ज करने का कार्य करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है। इसी पत्रकारिता को वैब पत्रकारिता भी कहा जाता है।
- इस समय विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर चल रहा है जबकि भारत में दूसरा दौर। भारत के लिए प्रथम दौर 1993 से प्रारंभ माना जाता है और दूसरा दौर 2003 से प्रारंभ हुआ है।
- भारत में सच्चे अर्थों में यदि कोई वेब पत्रकारिता कर रहा है तो वह 'रीडिफ डॉटकॉम', इंडिया इंफोलाइन तथा सीफी जैसी कुछ साइटें हैं। रीडिफ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है। वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता करने का श्रेय तहलका डॉटकॉम को जाता है।
- हिंदी में नेट पत्रकारिता, 'वेब दुनिया' के साथ प्रारम्भ हुई। इंदौर के नयी दुनिया समूह से प्रारंभ हुआ, ये पोर्टल हिन्दी का सम्पूर्ण पोर्टल है। 'जागरण', 'अमर उजाला', 'नयी दुनिया', 'हिन्दुस्तान', 'भास्कर', 'राजस्थान-पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'प्रभात खबर' व 'राष्ट्रीय सहारा' के वेब संस्करण प्रारंभ हुए। 'प्रभासाक्षी' नाम से प्रारंभ हुआ अखबार प्रिंट रूप में न होकर केवल इंटरनेट पर उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के अनुसार सर्वश्रेष्ठ साइट बी.बी.सी. है।
- हिन्दी वेब जगत में आज अनेक साहित्यिक पत्रिकाएँ चल रही हैं। कुल मिलाकर हिन्दी की वेब पत्रकारिता अभी अपने शैशवकाल में ही है। सबसे बड़ी समस्या हिन्दी के फौंट की है। अभी भी हमारे पास हिन्दी का कोई

की-बोर्ड नहीं है। जब तक हिन्दी के की-बोर्ड का मानकीकरण नहीं हो जाता तब तक इस समस्या को दूर नहीं किया जा सकता।

लघु प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : जनसंचार के प्रमुख साधन कौन-कौन से हैं?

उत्तर : प्रिंट (मुद्रित) माध्यम, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट।

प्रश्न 2 : जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम कौन सा है?

उत्तर : प्रिंट (मुद्रित) माध्यम।

प्रश्न 3 : सर्वप्रथम मुद्रण का प्रारंभ कहाँ से हुआ?

उत्तर : सर्वप्रथम मुद्रण का प्रारंभ चीन से हुआ।

प्रश्न 4 : भारत में पहले छापेखाने की स्थापना किसने, कब और कहाँ की?

उत्तर : भारत में पहले छापेखाने की स्थापना जर्मनी के गुटेनबर्ग ने सन् 1556 में, गोवा में की।

प्रश्न 5 : उलटा पिरामिड शैली से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : उलटा पिरामिड शैली में समाचार को तीन हिस्सों में बाँटा जाता है। 1. इंट्रो (मुखड़ा), [खबर का मुख्य हिस्सा] 2. बॉडी - (घटते महत्वक्रम में समाचार लिखना), 3. समापन (प्रासंगिक तथ्य तथा सूचनाएँ)

प्रश्न 6 : टी.वी. पर प्रसारित खबरें किन-किन चरणों से होकर गुजरती हैं?

उत्तर : टी.वी. पर प्रसारित खबरें निम्न चरणों से होकर गुजरती हैं - 1.फ्लैश (ब्रेकिंग

न्यूज) 2. ड्राई एंकर, 3. फोन इन, 4. एंकर विजुअज, 5. एंकर बाइट, 6. लाइव, 7. एंकर पैकेज।

प्रश्न 7 : जनसंचार के माध्यमों का प्रमुख कार्य क्या है?

उत्तर : जनसंचार के माध्यमों का प्रमुख कार्य सूचना देना, शिक्षित करना एवं मनोरंजन करना है।

प्रश्न 8 : जनसंचार के माध्यमों द्वारा किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

उत्तर : सहज एवम् सरल भाषा, जो जनसमाज के बिल्कुल निकट हो, जिसे अधिक से अधिक लोग एवं हर स्तर के लोग समझ सकें। छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग होना चाहिए।

प्रश्न 9 : नई पीढ़ी में इंटरनेट के अधिक लोकप्रिय होने का क्या कारण है?

उत्तर : नई पीढ़ी को अब समाचार पत्र पर छपे समाचार पढ़ने में आनन्द नहीं आता। उन्हें स्वयं को घंटे दो घंटे में अपडेट रखने की आदत पड़ गई है। यही कारण है कि नई पीढ़ी इंटरनेट की दीवानी हैं इंटरनेट द्वारा सूचना, मनोरंजन, ज्ञान तथा निजी व सार्वजनिक संवादों का आदान-प्रदान कर सकते हैं।

प्रश्न 10 : भारत में वेबसाइट पर पत्रकारिता कौन कर रहा है?

उत्तर : तहलका डॉटकॉम।

प्रश्न 11 : भारत में वेब पत्रकारिता कौन कर रहा है?

उत्तर : रीडिफ डॉटकॉम, इंडिया इंफोलाइन, सीफी।

प्रश्न 12 : उस अखबार का नाम लिखिए जो प्रिंट रूप में उपलब्ध न होकर केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है।

उत्तर : प्रभासाक्षी।

प्रश्न 13 : हिन्दी के किन्हीं दो अखबारों के नाम लिखो जिनके वेब संस्करण उपलब्ध हैं।

उत्तर : जागरण, हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स आदि।

प्रश्न 14 : वेब में प्रकाशित किन्हीं तीन पत्रिकाओं के नाम लिखो।

उत्तर : अनुभूति, अभिव्यक्ति, हिन्दी नेस्ट, सराय आदि।

प्रश्न 15 : ब्रेकिंग न्यूज़ से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : किसी भी बड़ी खबर को फ्लैश अथवा ब्रेकिंग न्यूज के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुँचाना ब्रेकिंग न्यूज है। इसमें कम से कम शब्दों में केवल सूचना दी जाती है।

प्रश्न 16 : रेडियो तथा टी.वी. जनसंचार के कैसे माध्यम है?

उत्तर : रेडियो-श्रव्य माध्यम। टी.वी. दृश्य एवं श्रव्य माध्यम।

अन्य महत्वपूर्ण लघु प्रश्न

1. गुटेन बर्ग ने किस उद्देश्य से छापाखाना की स्थापना की?
2. मुद्रित माध्यम के अंतर्गत कौन-कौन से माध्यम आते हैं?
3. मुद्रित माध्यम की कोई तीन विशेषताएँ बताओ।
4. मुद्रित माध्यम के लेखन में किस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है?
5. रेडियो जनसंचार का कैसा माध्यम है?
6. रेडियो समाचार किस शैली में लिखे जाते हैं?
7. रेडियो समाचार में डेडलाइन से क्या तात्पर्य है?
8. टेलीविजन जनसंचार का कैसा माध्यम है?
9. टी.वी. पर प्रसारित समाचारों की मुख्य दो शर्तें कौन सी है?
10. इंटरनेट के क्या लाभ हैं?
11. इंटरनेट पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?
12. भारत में इंटरनेट का कौन सा दौर चल रहा है और इसे कब से शुरु माना जाता है?
13. भारत में पहली पत्रकारिता की साइट किसे माना जाता है?
14. हिन्दी वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या क्या है?
16. क्लाइमैक्स किसे कहते हैं?

दीर्घ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : विभिन्न जनसंचार माध्यमों, प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट की पाँच-पाँच विशेषताएँ एवं कमियाँ बताते हुए तालिका बनाएं।

उत्तर :

विशेषताएँ (खूबियाँ)

	रेडियो	टी.वी.	इंटरनेट
...चने का पूरा ...न होता है।	1. इस माध्यम से ध्वनि स्वर, शब्दों तथा संगीत से मनोरंजन व ज्ञान वर्धन होता है।	1. विश्व की घटनाओं को घर बैठे सीधे (लाइव) देख सकते हैं।	1. दृश्य व प्रिंट दोनों माध्यमों का लाभ मिलता है।
...न भाषा का	2. रेडियो में सुनने की उनमुक्तता (स्वतंत्रता) होती है।	2. यह मनोरंजन व ज्ञानवर्धन का उत्तम साधन है।	2. इंटरनेट के द्वारा बटन दबाते ही सूनाओं का विशाल भंडार प्राप्त होता है।
...म के द्वारा ...सामग्री को ...के लिए ...लंबे समय ...कते हैं।	3. यह सबसे सस्ता माध्यम है।	3. टी.वी. की खबरों से जीवंतता का एहसातस होता है।	3. यह संवादों के आदान-प्रदान व चैटिंग का सस्ता स्त्रोत है।
...ी (बीच में ...र कभी भी ...हैं।	4. निरक्षर व पढ़े लिखे सभी इसका आनंद ले सकते हैं।	4. इसमें देखने व सुनने का आनंद एक साथ लिया जा सकता है।	4. खबरें बड़ी तीव्र गति से पहुँचाई जाती है।
...म चिंतन, ...संप्रेषण का	5. इसके माध्यम से दूरदराज के कार्यक्रम भी आसानी से सुने जा सकते हैं।	5. इसके माध्यम से हर तरह के लोग कार्यक्रम देख व सुन सकते हैं।	5. इंटरनेट के द्वारा खबरों का संप्रेषण पुष्टि, सत्यापन व बैकग्राउंड तुरंत होता है।

खामियाँ (कमियाँ)

प्रिंट	रेडियो	टी.वी.	इंटरनेट
1. इसमें सीमित स्थान होता है। 2. निरक्षर अर्थात् अनपढ़ लोगों के लिए प्रिंट माध्यम किसी काम का नहीं है। 3. इस माध्यम द्वारा हम तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते। 4. आय के विशेष स्त्रोत न होने के कारण प्रिंट माध्यम को विज्ञापन कर्त्ताओं को वरीयता देनी पड़ती है। 5. अशुद्धियाँ हों तो छपने के बाद उन्हें दूर नहीं किया जा सकता।	1. एक रेखीय माध्यम की तरह पीछे नहीं लौट सकते। 2. कई बार रेडियो कार्यक्रमों एवं समाचार बुलेटिनों की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। 3. रेडियो में अधिक लंबे कार्यक्रम नहीं सुना सकते क्योंकि वे उबाऊ हो जाते हैं। 4. इसमें बोलचाल की भाषा के प्रयोग से भाषा के विस्तार व विकास की संभावना नहीं रहती। 5. इस माध्यम में श्रोताओं को बाँधकर रखना काफी कठिन है।	1. इसमें समय की सीमा होती है। यह भी एक रेखीय माध्यम है। 2. टी.वी. कार्यक्रमों में दर्शकों को बाँधे रखना कठिन कार्य है। 3. इसमें दृश्य श्रव्य(विजुअल व शब्द वाइट्स) में संतुलन बनाना बहुत कठिन है। 4. इसमें सैक्स, हिंसा व रोमांस को प्रोत्साहन मिलता है और भाषा के विस्तार की भी संभावना कम रहती है। 5. टी.वी. माधयम में लाभ को ध्यान में रखकर तैयार किए गए कार्यक्रम विशेष दर्शक वर्ग के लिए होते हैं। अत: ये टाइप्ड हो जाते हैं।	1. इसमें समय सीमा न होने के कारण लोग दूसरे कार्यों से कटते जा रहे हैं। 2. गरीबों तथा अनपढ़ों के लिए इंटरनेट किसी काम का नहीं। इसे चलाने के लिए धन व कौशल की आवश्यकता होती है। 3. नयी पीढ़ी में स्वयं को हर समय अपडेट रखने की लत लगने के बुरे परिणाम सामने आ रहे हैं। 4. यह अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का माध्यम है। 5. इंटरनेट को केवल एक औजार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

अन्य महत्वपूर्ण दीर्घ प्रश्न

प्रश्न 1 : जनसंचार माध्यम के रूप में टेलीविजन की भूमिका स्पष्ट करते हुए बताएं कि टी.वी. पर प्रसारित समाचार किन-किन चरणों से होकर दर्शकों तक पहुँचते हैं?

प्रश्न 2 : इंटरनेट पत्रकारिता नई पीढ़ी को अपडेट तो रखता है किन्तु इसके दुष्परिणाम भी हैं, स्पष्ट कीजिए।

——— • ——— • ——— • ——— • ———

पाठ–2

पत्रकारिता लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

- लोकतंत्र में अखबार एक पहरेदार और जनमत निर्माण का कार्य करते हैं।
- अखबार पाठकों को सूचना देने, जागरूक और शिक्षित बनाने, उनका मनोरंजन करने का दायित्व निभाते हैं। पत्रकार इस दायित्व की पूर्ति के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का प्रयोग करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।
- पत्रकारीय लेखन एवं सृजनात्मक लेखन एक दूसरे से भिन्न हैं

	पत्रकारीय लेखन	*सृजनात्मक लेखन*
1.	इसका संबंध समसामयिक और वास्तविक घटनाओं और मुद्दों से है।	1. इस लेखन में कल्पना को भी स्थान दिया जाता है।
2.	यह अनिवार्य रूप से तात्कालिक और पाठकों की रूचियों और जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाता है।	2. इस लेखन में लेखक पर बंधन नहीं होता उसे काफी छूट होती है।

- पत्रकारिता के विकास में जिज्ञासा का मूलभाव सक्रिय होता है।
- **अच्छे लेखन की भाषा :** सीधी, सरल एवं प्रभावी भाषा।
- **अच्छे लेखन के लिए ध्यान देने योग्य बातें :** गूढ़ से गूढ़ विषय की प्रस्तुति सरल, सहज और रोचक हो। विषय तथ्यों द्वारा पुष्ट हों, लेख उद्देश्यपूर्ण हों।
- **पत्रकार के प्रकार : 1. पूर्णकालिक :** किसी समाचार संगठन के नियमित वेतनभोगी।

  2. अंशकालिक : एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाले।

  3. फ्रीलांसर : स्वतंत्र पत्रकार जो भुगतान के आधार पर अलग अलग अखबारों के लिए लिखें।

- **छह ककार :** किसी भी समाचार में छह प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया जाता है। क्या हुआ? कैसे हुआ? किसके साथ हुआ? क्यों हुआ? कहाँ हुआ? कब हुआ?

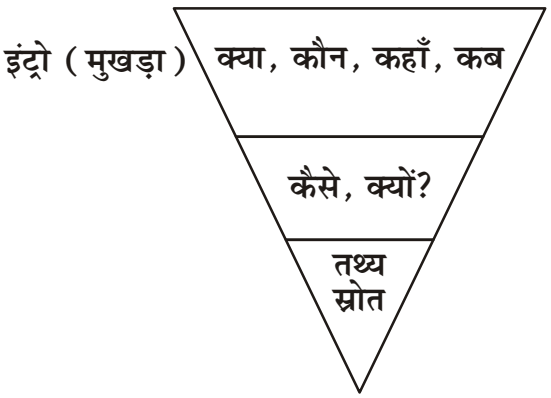

उलटा पिरामिट शैली

मुखड़ा - सबसे महत्वपूर्ण बात

बॉडी - कुछ कम महत्वपूर्ण बात

समापन - सबसे कम महत्वपूर्ण बात

- फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनोरंजन करना होता है।
- फीचर तथा समाचार में अंतर।

	समाचार	*फीचर*
1.	समाचार का कार्य पाठको को सूचना देना होता है	1. फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।
2.	इसका उद्देश्य पाठकों को ताज़ी घटना से अवगत कराना होता है।	2. इसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना, और मनोरंजन करना होता है।
3.	इसमें शब्द सीमा होती है।	3.इसमें शब्द सीमा नहीं होती। अच्छे फीचर 200 से 2000 तक शब्दों के होते हैं।
4.	इसमें लेखक के विचारों या कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं होता।	4. इसमें लेखक की कल्पना और विचारों को भी स्थान मिलता है।
5.	इसमें फोटो का होना अनिवार्य है।	5. अच्छे फीचर के साथ फोटो या ग्राफिक्स होना अनिवार्य है।

- **फीचर के प्रकार :** समाचार बेकग्राउंड फीचर, खोजपरक फीचर साक्षात्कार

फीचर, जीवन शैली फीचर, रूपात्मक फीचर, व्यक्तित्व चरित्र फीचर, यात्रा फीचर आदि।

- **विशेष रिपोर्ट :** समाचार पत्र और पत्रिकाओं में गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर जो रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है उसे विशेष रिपोर्ट कहते हैं।

- **विशेष रिपोर्ट के प्रकार**

  1. खोजी रिपोर्ट – पत्रकार ऐसी सूचनाओं और तथ्यों को छानबीन कर जनता के समक्ष लाता है जो पहले सार्वजनिक न हो।
  2. इन डेप्थ रिपोर्ट – सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन कर महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता हैं
  3. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट – घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों का विश्लेषण और व्याख्या की जाती है
  4. विवरणात्मक रिपोर्ट – समस्या का विस्तृत विवरण दिया जाता है।

- आमतौर पर विशेष रिपोर्ट को उल्टा पिरामिड शैली में लिखा जाता है लेकिन विषयानुसार रिपोर्ट में फीचर शैली का भी प्रयोग होता है इसे फीचर रिपोर्ट कहते हैं।

- विशेष रिपोर्ट की भाषा सरल सहज और आम बोलचाल की होनी चाहिए।

- **विचारपरक लेखन :** अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय अग्रलेख, टिप्पणियां विचारपरक लेखन में आते हैं।

- **संपादकीय** – संपादकीय को अखबार की आवाज़ माना जाता है क्योंकि संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष के विचार नहीं होते।

  संपादकीय का दायित्व संपादक और उसके सहयोगियों पर होता है इसलिए इसके नीचे किसी का नाम नहीं होता। संपादकीय के जरिए अखबार किसी घटना या मुद्दे पर अपनी राय प्रकट करता है।

- **स्तंभ लेखन :** कुछ लेखक अपने वैचारिक रूझान और लेखन शैली के लिए पहचाने जाते हैं। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता देखकर समाचार पत्र उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा देता है। स्तंभ का विषय चुनने एवं उसमें

अपने विचार व्यक्त करने की लेखक को पूर्ण छूट होती है। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि वे अपने लेखक के नाम से पहचाने जाते हैं।

- **संपादक के नाम पत्र :** यह स्तंभ जनमत को प्रतिबिंबित करता है। यह अखबार का एक स्थायी स्तंभ है जिसके जरिए पाठक विभिन्न मुद्दों पर न सिर्फ अपनी राय प्रकट करता है अपितु जन समस्याओं को भी उठाता है।
- **लेख :** संपादकीय पृष्ठ पर वरिष्ठ पत्रकार और विषय विशेषज्ञ किसी विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं। इसमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है। किंतु इसमें लेखक तर्कों एवं तथ्यों के जरिए अपनी राय प्रस्तुत करता है।
- **साक्षात्कार :** साक्षात्कार का एक स्पष्ट मकसद और ढ़ाँचा होता है। एक सफल साक्षात्कार के लिए न केवल ज्ञान अपितु संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य और साहस जैसे गुण भी होने चाहिए।

पाठ संबंधी महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : फीचर से क्या अभिप्राय है? फीचर कितने प्रकार के होते हैं? इनकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आतमनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना शिक्षित करना और मुख्य रूप से मनोरंजन करना होता है।

फीचर कई प्रकार के होते हैं जिनमें मुख्य हैं–

1. समाचार बैकग्राउंड फीचर
2. खोजपरक फीचर
3. साक्षात्कार फीचर
4. जीवनशैली फीचर
5. रूपात्मक फीचर
6. व्यक्तिचित्र फीचर
7. यात्रा फीचर
8. विशेषकार्य फीचर

फीचर की विशेषताएँ : फीचर की शैली कथात्मक शैली की तरह होती है। इसका आकार रिपोर्ट से बड़ा होता है। एक अच्छे से रोचक फीचर के साथ फोटो, रेखांकन या ग्राफिक्स का होना अनिवार्य है। फीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। फीचर बोझिल नहीं होते।

प्रश्न 2 : विशेष रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं? विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है?

उत्तर : विशेष रिपोर्ट : समाचार पत्र और पत्रिकाओं में शहरी छानबीन विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर जो रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है उसे विशेष रिपोर्ट कहते हैं।

विशेष रिपोर्ट के प्रकार : विशेष रिपोर्ट के मुख्य चार प्रकार हैं।

1. **खोजी रिपोर्ट :** जिस रिपोर्ट में पत्रकार उन सूचनाओं और तथ्यों को छानबीन करके जनता के सामने लाता है जो पहले सबके समक्ष न आए हों।
2. **इन डेप्थ रिपोर्ट :** सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों, सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन कर महत्वपूर्ण पहलुओं को जनता के सामने लाने वाली रिपोर्ट।
3. **विश्लेषणात्मक रिपोर्ट :** जिस रिपोर्ट में घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों का विस्तार से विश्लेषण और व्याख्या की जाए।
4. **विवरणात्मक रिपोर्ट :** जिस रिपोर्ट में समस्या का विस्तृत वर्णन और बारीक से बारीक तथ्य को उद्घाटित किया जाए।

इनके अलावा एक अन्य रिपोर्ट भी है।

फीचर रिपोर्ट : सामान्यत: रिपोर्ट उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं। किंतु कुछ एक कथात्मक शैली में लिखी जाने वाली रिपोर्ट फीचर रिपोर्ट कहलाती है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. लोकतांत्रिक समाज में अखबार कौन सी भूमिका निभाते हैं?
2. पत्रकारीय लेखन क्या है?
3. पत्रकारीय लेखन और सृजनात्मक लेखन में क्या अंतर है?
4. पत्रकारिता के विकास में कौन सा मूलभाव सक्रिय रहता है?
5. पत्रकारीय लेखन की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए?
6. अच्छे लेखन के लिए ध्यान देने योग्य कोई दो बातें बताइए।
7. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?
8. समाचार लेखन के ककारों से आप क्या समझते हैं?
9. उल्टा पिरामिड शैली किसे कहते हैं?

10. फीचर से आप क्या समझते हैं?

11. फीचर लेखन की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए?

12. फीचर को रोचक कैसे बनाया जा सकता है?

13. फीचर कितने प्रकार के होते हैं?

14. विशेष रिपोर्ट का क्या अर्थ है?

15. विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है? उनके नाम लिखिए।

16. खोजी रिपोर्ट और इनडेप्थ रिपोर्ट में क्या अंतर है?

17. विशेष रिपोर्ट की भाषा शैली कैसी होनी चाहिए?

18. विचारात्मक लेखन के अंतर्गत कौन सी सामग्री आती है?

19. संपादकीय लेखन क्या है?

20. स्तंभ लेखन क्या है?

21. संपादकीय पृष्ठ पर किसी का नाम क्यों नहीं होता?

22. संपादक के नाम पत्र कौन और क्यों लिखता है?

23. संपादकीय पृष्ठ पर छपने वाले लेखों की विशेषता बताइए।

24. एक सफल साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारकर्त्ता में कौन से गुण होने आवश्यक हैं?

अन्य दीर्घ प्रश्न (5 अंक)

प्रश्न 1 : पत्रकारिता लेखन क्या है? यह साहित्यिक सृजनात्मक लेखन से कैसे भिन्न है?

प्रश्न 2 : पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं? विस्तार से स्पष्ट करें।

प्रश्न 3 : टिप्पणी लिखिए (क) संपादकीय, (ख) स्तंभ लेखन, (ग) संपादक के नाम पत्र, (घ) लेख।

प्रश्न 4 : 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' विषय पर एक लेख लिखिए।

प्रश्न 5 : किसी खिलाड़ी अथवा अभिनेता के साक्षात्कार हेतु 10 प्रश्नों की सूची तैयार कीजिए।

प्रश्न 6 : आप किसी ऐतिहासिक शहर में शैक्षिक भ्रमण के लिए गए। इस पर एक यात्रा फीचर लिखिए।

पाठ-3

विशेष लेखन - स्वरूप और प्रकार

- **विशेष लेखन :** समाचार पत्र सामान्य समाचारों के अलावा साहित्य विज्ञान खेल इत्यादि की भी पर्याप्त जानकारी देते हैं इसी कार्य के अन्तर्गत जब किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर लेखन किया जाए तो उसे विशेष लेखन कहते हैं।
- **डेस्क :** समाचार पत्र-पत्रिकाओं रेडियो और टी.वी. में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है जिनसे अपेक्षा की जाती है कि संबंधित विषय या क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता होगी।
- **विशेष लेखन के क्षेत्र :** विशेष लेखन के कई क्षेत्र हैं जैसे अर्थ व्यापार, खेल, मनोरंजन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, पर्यावरण, रक्षा, कानून, स्वास्थ्य इत्यादि।
- **बीट :** संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ है कि वह आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार है।
- विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग नहीं है। अब बीट रिपोर्टिंग के आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है जिसमें न सिर्फ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए।
- बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर

1. बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र की जानकारी होना पर्याप्त है उसे सामान्य तौर पर खबरें ही लिखनी होती हैं।	1. विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र से जुड़ी सूचनाओं का बारीकी से विश्लेषण कर पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना होता है।

2. बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता कहते हैं।	2. विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहते हैं।

- विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अलावा विषय विशेष पर फीचर, टिप्पणी, साक्षारत्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ भी आते हैं।
- पत्र पत्रिकाओं को विशेष लेख लिखने वाले सामान्यत: पेशेवर पत्रकार न होकर विषय विशेषज्ञ होते हैं। जैसे खेल के क्षेत्र में हर्षा भोगले, जसदेव सिंह और नरोत्तम पुरी आदि प्रसिद्ध हैं।
- **विशेष लेखन की भाषा शैली :** विशेष लेखन में हर क्षेत्र की विशेष तकनीकी शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। जैसे-
  1. कारोबार और व्यापार में तेजड़िए, सोना उछला, चाँदी लुढ़की आदि।
  2. पर्यावरण संबंधित लेख में आद्रता, टाक्सिक कचरा, ग्लोबल वार्मिंग आदि।
- विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। विषयानुसार उल्टा पिरामिड या फीचर शैली का प्रयोग हो सकता है। पत्रकार चाहे कोई भी शैली अपनाएँ लेकिन उसे यह ध्यान में रखना होता है कि खास विषय में लिखा गया आलेख सामान्य से अलग होना चाहिए।
- **विशेषज्ञता का अभिप्राय :** विशेषज्ञता का अर्थ है कि व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि सूचनाओं की सहजता से व्याख्या कर पाठकों को उसके मायने समझा सकें।
- विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए स्वयं का अपडेट रहना, पुस्तकें पढ़ना, शब्दकोष आदि का सहारा लेना, सरकारी-गैरसरकारी संगठनों से संपर्क रखना, निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता आवश्यक है।
- कुछ वर्षों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण रूप से उभरने वाली पत्रकारिता-आर्थिक पत्रकारिता है क्योंकि देश की राजनीति और अर्थव्यवस्था के बीच रिश्ता गहरा हुआ है।
- आर्थिक मामलों की पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता की तुलना में काफी जटिल होती है क्योंकि आम लोगों को इसकी शब्दावली का मतलब नहीं पता होता।
- आर्थिक पत्रकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वह किस

प्रकार, सामान्य पाठक और जानकार पाठक दोनों को भली-भांति संतुष्ट कर पाता है।

- किसी भी लेखन को विशिष्टता प्रदान करने के लिए महत्व रखने वाली बातें हैं कि हमारी बात पाठक / श्रोता तक पहुँच रही है या नहीं तथा तथ्यों और तर्कों में तालमेल है या नहीं।

पाठ से संबंधित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : विशेष लेखन किसे कहते हैं? इसके प्रमुख क्षेत्र तथा उनमें प्रयोग होने वाली भाषा शैली के बारे में लिखें।

उत्तर : समाचार पत्रों में सामान्य समाचारों के अलावा, साहित्य विज्ञान, खेल इत्यादि की भी पर्याप्त जानकारी मिलती है। इसी कार्य के अंतर्गत जब किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर विशेष लेखन किया जाता है उसे विशेष लेखन कहते हैं।

- **विशेष लेखन के प्रमुख क्षेत्र :** अर्थ व्यापार, खेल मनोरंजन, विज्ञान प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, पर्यावरण, रक्षा, कानून, स्वास्थ्य आदि।
- **विशेष लेखन की भाषा शैली :** विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। यह उल्टा पिरामिड या फीचर शैली दोनों में लिखा जाता है। यह विषयानुसार निर्धारित होती है।

विशेष लेखन में हर क्षेत्र की विशेष तकनीकी शब्दावली का प्रयोग होता है जैसे-

1. **कारोबार और व्यापार :** तेज़ड़िए, मंदड़िए, सोना उछला।
2. **पर्यावरण और मौसम :** आद्रता, टॉक्सिक कचरा, ग्लोबल वार्मिंग।
3. **खेल :** जर्मनी ने घुटने टेक, आस्ट्रेलिया के पाँव उखड़े।

प्रश्न 2 : विशेष लेखन में बीट तथा डेस्क का अर्थ तथा महत्व बताइए।

उत्तर : बीट : समाचार पत्रों तथा रेडियो टेलीविजन में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है जिनसे यह अपेक्षा की जाती है कि उन्हें अपने विषय की पूरी जानकारी हो। इन्हीं डेस्कों पर काम करने वाले संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीड़िया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। यदि एक संवाददाता की बीट खेल है तो उसे उस क्षेत्र की सभी खेल संबंधी रिपोर्टिंग की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. विशेष लेखन क्या है?
2. जनसंचार माध्यमों में अलग डेस्क की व्यवस्था किसके लिए होती है?
3. बीट से आप क्या समझते हैं?
4. बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर बताइए।
5. विशेष संवाददाता किसे कहते हैं?
6. बीट कवर करने वाला क्या कहलाता है?
7. अखबारों में विशेष लेख लिखने वाले कौन होते हैं?
8. विशेष लेखन की भाषा शैली की क्या विशेषता है?
9. विशेष लेखन के अंतर्गत आने वाले कोई चार क्षेत्रों के नाम लिखिए।
10. 'व्यापार कारोबार' से संबंधित भाषा के दो उदाहरण लीखिए।
11. खेल समाचार की भाषा का एक उदाहरण दीजिए।
12. पत्रकारीय विशेषज्ञता से आप क्या समझते हैं?
13. विशेष लेखन के कौन से क्षेत्र का महत्व सर्वाधिक बढ़ा है और क्यों?
14. लेखन के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए क्या आवश्यक है?
15. सामान्य पत्रकारिता की तुलना में कौन सी पत्रकारिता जटिल है?
16. आर्थिक पत्रकारिता को किस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
17. कौन सी बात किसी भी लेखन को विशिष्ट बनाती है?

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : निम्नलिखित विषयों पर आलेख लिखिए।

(क) मौसम की मार झेल रहे किसानों की कठिनाई।

(ख) स्वच्छ भारत अभियान और नवयुवकों का योगदान।

प्रश्न 2 : 'बढ़ते बाल अपराध' पर एक आलेख लिखिए।

पाठ-4

सृजनात्मक लेखन

'कैसे बनती है कविता'

- कविता इंसान के मन को अभिव्यक्त करने वाली सबसे पुरानी कला है। मौखिक युग में कविता के द्वारा इंसान ने अपने भावों को दूसरे तक पहुंचाया होगा। इससे स्पष्ट होता है कि कविता मन में उमड़ने-घुमड़ने वाले भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने का काव्यात्मक माध्यम है।
- वाचिक परंपरा में जन्मीं कविता आज लिखित रूप में मौजूद है। पारंपरिक लोरियों, मांगलिक गीतों, श्रमिकों द्वारा गुनगुनाए लोकगीतों और तुकबंदी में कविता के स्वर मुखरित होते हैं। कविता को आज तक किसी एक परिभाषा में बांध पाना सम्भव नहीं हो पाया है। अनेक प्राचीन काव्यशास्त्रीयों और पश्चिमी विद्वानों ने कविता की अनेक परिभाषाएँ दी हैं। जैसे शब्द और अर्थ का संयोग, रसयुक्त वाक्य, संगीतमय विचार आदि।
- कविता लेखन के संबंध में दो मत मिलते हैं। एक का मानना है कि अन्य कलाओं के समान कविता लेखन की कला को प्रशिक्षण द्वारा नहीं सिखाया जा सकता क्योंकि इसका संबंध मानवीय भावों से है जबकि दूसरा मत कहता है कि अन्य कलाओं की भांति प्रशिक्षण के द्वारा कविता लेखन को भी सरल बनाया जा सकता है।
- कविता का पहला उपकरण शब्द है। कवि डल्ब्यू एच ऑर्डेन ने कहा कि 'प्ले विद द वर्ड्स' अर्थात् कविता लेखन में सबसे पहले शब्दों से खेलना सीखें, उनके अर्थ की परतों को खोलें क्योंकि शब्द ही भावनाओं और संवेदनाओं को आकार देते हैं।
- बिंब और छंद (आंतरिक लय) कविता को इंद्रियों से पकडने में सहायक होते हैं। बाह्य संवेदनाएँ मन के स्तर पर बिंब के रूप में परिवर्तित हो जाती है। छंद के अनुशासन की जानकारी के बिना आंतरिक लय का निर्वाह असंभव है। कविता की भाषा, बिंद, छंद, संरचना सभी परिवेश के इर्द-गिर्द घूमते हैं। इसलिए इनके अनुसर ही भाषा, बिंद और छंद का चयन किया जाता है।

- कविता के मुख्य घटक (तत्व)
  1. भाषा का सम्यक ज्ञान
  2. शब्द विन्यास
  3. छंद विषयक बुनियादी जानकारी
  4. अनुभव और कल्पना का सामंजस्य
  5. सहज समप्रेषण शक्ति
  6. भाव एवं विचार की अनुभूति
- नवीन दृष्टिकोण और प्रस्तुतीकरण की कला न हो तो कविता लेखन संभव ही नहीं है। प्रतिभा को किसी नियम या सिद्धांत द्वारा पैदा नहीं किया जा सकता, किन्तु परिश्रम और अभ्यास से विकसित किया जा सकता है। कवित लेखन के ये घटक कविता लेखन भले ही न सिखाएँ पर कविता की सराहना एवं कविता विषयक ज्ञान देने में सहायक है।

अभ्यास कार्य

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 : कविता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : कविता मन में उमड़ने-घुमड़ने वाले भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने का काव्यात्मक माध्यम है।

प्रश्न 2 : 'कविता लेखन' का सबसे पहला उपकरण किसे माना जाता है?

उत्तर : 'कविता लेखन' का सबसे पहला उपकरण 'शब्द' को माना जाता है।

प्रश्न 3 : 'प्ले विद द वर्डस' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : 'प्ले विद द वर्ड्स' से यह अभिप्राय है कि कविता लेखन में सबसे पहले शब्दों से खेलना सीखें व उनके अर्थ की परतों को खोलें।

प्रश्न 4 : कविता के लिए आवश्यक कोई दो घटक बताइए।

उत्तर : कविता के लिए आवश्यक प्रमुख घटकों में से दो घटक हैं। 1. भाषा का सम्यक ज्ञान, 2. शब्द विन्यास।

प्रश्न 5 : विद्यार्थी की रचनात्मक शक्ति और ऊर्जा को कैसे बाहर लाया जा सकता है?

उत्तर : विद्यार्थी की रचनात्मक शक्ति और ऊर्जा को बाहर निकालने के लिए उन्हें शब्दों के साथ खेलना और उनकी तह तक जाना सिखाना चाहिए।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 : कविता लेखन के लिए आवश्यक प्रमुख घटकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : कविता लेखन के लिए आवश्यक प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं।

1. **भाषा का सम्यक ज्ञान :** कविता में भाषा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। भावों और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए जरूरी है कि कवि कविता में भाषा के रोज नये प्रयोगों द्वारा अपने अनुभवों को रूप प्रदान करता रहे।

2. **शब्द विन्यास :** शब्द मनुष्य के सबसे प्रिय मित्र होते हैं। इसलिए कविता लेखन के समय कवि को अपने भावों और विचारों के अनुरूप शब्दों का चयन कर उनका प्रयोग करना चाहिए।

3. **छंद विषयक बुनियादी जानकरी :** छंद और तुक से बँधी हुई रचना हमारी भावनाओं को संगीत में बाँधकर हमारे सामने प्रस्तुत करती है तो उसकी छूअन हमें भीतर तक उस भाव से जोड़ देता है। इसलिए कविता में छंद और तुक कविता को अधिक भावमयी बना देते हैं।

4. **अनुभव और कल्पना का सामंजस्य :** कवि कविता में भावों और विचारों के साथ अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करता है। कल्पना के द्वारा कवि कविता में जीवन के सत्य के मधुर और कटु दोनों रूपों को प्रकट करता है। कवि को केवल कोरी कल्पना से बचना चाहिए।

5. **सहज सम्प्रेषण शक्ति :** कविता कवि अपने लिए नहीं लिखता वरन् उसका लक्ष्य अपने भावों और विचारों से समाज को परिचित कराना है। इसलिए वह अपने भावों का साधारणीकरण करता है। सहज व सरल भाव पाठक को कविता के साथ बांध देते हैं।

6. **भाव एवं विचार की अनुभूति :** कविता भावों का प्रबल आवेग है और मनुष्य भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए तत्पर रहता है। सामान्य व्यक्ति कविता की उस ऊँचाई तक नहीं पहुँच सकता जहाँ कवि पहुँच जाता है क्योंकि कवि की आत्म शक्ति प्रबल होती है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 : कविता लेखन में शब्दों के महत्व पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 2 : कविता लेखन में छंदों और बिंबों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 3 : अपने जीवन में घटी ऐसी घटना जिसने आपको मन को स्पर्श किया हो उस अनुभूति को कविता में ढ़ालने का प्रयास कीजिए।

पाठ-5

नाटक लिखने का व्याकरण

पाठ परिचय : नाटक एक दृश्य विद्या है। इसे हम अन्य गद्य विधाओं से इसलिए अलग भी मानते हैं, क्योंकि नाटक भी कहानी, उपन्यास, कविता, निबंध आदि की तरह साहित्य के अन्तर्गत ही आता है। पर यह अन्य विधाओं से इसलिए अलग है क्योंकि वह अपने लिखित रूप से दृश्यता की ओर बढ़ता है। नाटक केवल अन्य विधाओं की भांति केवल एक आयामी नहीं है। नाटक का जब तक मंचन नहीं होता तब तक वह सम्पूर्ण रूप व सफल रूप में प्राप्त नहीं करता है। अत: कहा जा सकता है कि नाटक को केवल पाठक वर्ग नहीं दर्शक वर्ग भी प्राप्त है।

साहित्य की अन्य विधाएँ पढ़ने या फिर सुनने तक की यात्रा करती है, परंतु नाटक पढ़ने, सुनने और देखने के गुण को भी अपने भीतर रखता है।

नाटक के प्रमुख तत्व या अंग घटक इस प्रकार हैं :

1. समय का बंधन, 2. शब्द, 3. कथ्य, 4. संवाद, 5. द्वंद (प्रतिरोध), 6. चरित्र योजना, 7. भाषा शिल्प, 8. ध्वनि योजना, 9. प्रकाश योजना, 10. वेषभूषा, 11. रंगमंचीयता।

प्रश्न 2 : ''समय के बंधन' का नाटक में क्या महत्व है?

उत्तर : नाट्य विधा में 'समय के बंधन' का विशेष महत्व है। नाटककार को 'समय के बंधन' का अपने नाटक में विशेष ध्यान रखना होता है और इस बात का नाटक की रचना पर भी पूरा प्रभाव पड़ता है। नाटक को शुरु से अन्त तक एक निश्चित समय सीमा के भीतर पूरा होना होता है। यदि ऐसा नहीं होता तो नाटक से प्राप्त होने वाला रस, कौतुहल आदि प्राप्त नहीं हो पाता है। नाटक का मंथन हम धारावाहिक के रूप में नहीं दिखा सकते हैं। नाटककार चाहे अपनी किसी भूतकालीन रचना को ले या किसी अन्य लेखक की रचना को चाहे वह भविष्यकाल की हो, वह दोनों परिस्थितियों में नाटक का मंचन वर्तमान काल में ही करेगा। इसीलिए नाटक के मंचीय निर्देश हमेशा वर्तमान काल में लिखे जाते हैं। क्योंकि नाटक का कभी भी मंचन हो वह वर्तमान काल में ही घटित होगा। या खेला जाएगा।

इसके साथ-साथ ही नाटक के प्राय: तीन अंक होते हैं, प्रारंभ, मध्य, समापन। अत: इन अंकों को ध्यान में रखते हुए भी नाटक को समय के सीमा में बांटना जरूरी हो जाता है।

पाठ-6

कैसे लिखें कहानी

मुख्य बिन्दु

कहानी : किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबद्ध ब्यौरा जिसमें परिवेश हो, द्वंद्वात्मकता हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम उत्कर्ष का बिन्दु हो, उसे कहानी कहा जाता है। कहानी जीवन का अविभाज्य अंग है। हर व्यक्ति अपनी बातें दूसरों को सुनाना और दूसरों की बातें सुनना चाहता है। कहानी लिखने का मूलभाव सबमें होता है, इसे कुछ लोग विकसित कर पाते हैं, कुछ नहीं।

कहानी का इतिहास : जहाँ तक कहानी के इतिहास का सवाल है, वह उतना ही पुराना है जितना मानव इतिहास, क्योंकि कहानी, मानव स्वभाव और प्रकृति का हिस्सा है। मौखिक कहानी की परम्परा बहुत पुरानी है। प्राचीनकाल में मौखिक कहानियाँ अत्यन्त लोकप्रिय थी, क्योंकि यह संचार का सबसे बड़ा माध्यम थीं। धर्म प्रचारकों ने भी अपने सिद्धांत और विचार लोगों तक पहुँचाने के लिए कहानी का सहारा लिया था। शिक्षा देने के लिए भी पंचतंत्र जैसी कहानियाँ लिखी गई, जो जगप्रसिद्ध हैं।

कथानक : कहानी का केन्द्र बिन्दु कथानक होता है। जिसमें प्रारम्भ से लेकर अन्त तक कहानी की सभी घटनाओं और पात्रों का उल्लेख होता है। कथानक को कहानी का प्रारम्भिक नक्शा माना जा सकता है।

कहानी का कथानक आमतौर पर कहानीकार के मन में किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना के कारण आता है। कहानीकार कल्पना का विकास करते हुए एक परिवेश, पात्र और समस्या को आकार देता है तथा एक ऐसा काल्पनिक ढ़ांचा तैयार करता है जो कोरी कल्पना न होकर संभावित हो और लेखक के उद्देश्य से मेल खाता हो। कथानक में प्रारम्भ, मध्य और अन्त- कथानक का पूरा स्वरूप होता है।

द्वंद्व : कहानी में द्वंद्व के तत्व का होना आवश्यक है। द्वंद्व कथानक को आगे बढ़ाता है तथा कहानी में रोचकता बनाए रखता है। द्वंद्व के तत्वों से अभिप्राय यह है कि परिस्थितियों के रास्ते में एक या अनेक बाधाएँ होती हैं उन बाधाओं के समाप्त हो जाने पर, किसी निष्कर्ष पर पहुँच कर कथानक पूरा हो जाता है। कहानी की यह शर्त है कि वह नाटकीय ढ़ंग से

अपने उद्देश्य को पूर्ण करते हुए समाप्त हो जाए। कहानी द्वंद्व के कारण ही पूर्ण होती है।

देशकाल और वातावरण : हर घटना, पात्र और समस्या का अपना देशकाल और वातावरण होता है। कहानी को रोचक और प्रामाणिक बनाने के लिए आवश्यक है कि लेखक देशकाल और वातावरण का पूरा ध्यान रखें।

पात्र : पात्रों का अध्ययन कहानी की एक बहुत महत्वपूर्ण और बुनियादी शर्त है। हर पात्र का अपना स्वरूप, स्वभाव और उद्देश्य होता है। कहानीकार के सामने पात्रों का स्वरूप जितना स्पष्ट होगा, उतनी ही आसानी से उसे पात्रों का चरित्र-चित्रण करने और उसके संवाद लिखने में होगी।

चरित्र चित्रण : पात्रों का चरित्र-चित्रण पात्रों की अभिरूचियों के माध्यम से, कहानीकार द्वारा गुणों का बखान करके, पात्र के क्रिया-कलापों, संवादों के माध्यम से किया जाता है।

संवाद : कहानी में संवाद का विशेष महत्व है। संवाद ही कहानी को और पात्र को स्थापित एवं विकसित करते हैं, साथ ही कहानी को गति देते हैं, आगे बढ़ाते हैं, जो घटना या प्रतिक्रिया, कहानीकार होती हुई नहीं दिखा सकता, उसे संवादों के माध्यम से सामने लाता है। संवाद पात्रों के स्वभाव और पूरी पृष्ठभूमि के अनुकूल होते हैं।

चरमोत्कर्ष (क्लाइमेक्स) : कथानक के अनुसार कहानी चरमोत्कर्ष (क्लाइमेक्स) की ओर बढ़ती है। सर्वोत्तम यह है कि चरमोत्कर्ष पाठक को स्वयं सोचने के लिए प्रेरित करे तथा उसे लगे कि उसे स्वतन्त्रता दी गई है, उसने जो निष्कर्ष निकाले हैं, वह उसके अपने हैं।

कहानी लिखने की कला : कहानी लिखने की कला को सीखने का सबसे अच्छा और सीधा रास्ता यह है कि अच्छी कहानियाँ पढ़ी जाएं और उनका विश्लेषण किया जाए।

लघुत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 : प्राचीन काल में मौखिक कहानियाँ क्यों लोकप्रिय थी?

उत्तर : क्योंकि यह संचार का सबसे बड़ा माध्यम थी।

प्रश्न 2 : कहानी का केन्द्र बिन्दु किसे कहते हैं?

उत्तर : कथानक।

प्रश्न 3 : कहानी को रोचक बनाने में कौन सा तत्व सहायक होता है?

उत्तर : द्वंद्व।

प्रश्न 4 : कहानी में कथानक के कितने स्तर होते हैं?

उत्तर : तीन स्तर – आदि, मध्य और अन्त।

प्रश्न 5 : कहानी की भाषा कैसी होनी चाहिए?

उत्तर : कहानी की भाषा सरल, सहज और स्वाभाविक होनी चाहिए।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 : कहानी के विभिन्न तत्वों का विवेचन कीजिए।

उत्तर : 1. कथानक, 2. द्वंद्व, 3. देशकाल और वातावरण, 4. पात्र, 5. चरित्र-चित्रण, 6. संवाद, 7. भाषा शैली, 8. चरमोत्कर्ष।

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

प्रश्न 1 : नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को किस प्रकार सरल बनाया जा सकता है?

उत्तर : नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को सरल बनाने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. किसी भी विषय पर लिखने से पूर्व अपने मन में उस विषय से संबंधित उठने वाले विचारों को कुछ देर रूककर एक रूपरेखा प्रदान करें। उसके बाद शानदार तरीके से अपने विषय की शुरुआत करें।
2. उस विषय को किस प्रकार आगे बढ़ाया जाये, यह भी दिमाग में पहले से होना आवश्यक है।
3. जिस विषय पर लिखा जा रहा है, उस विषय से जुड़े अन्य तथ्यों की जानकारी होना भी बहुत आवश्यक है। सुसंबद्धता किसी भी लेखन का बुनियादी तत्व होता है।
4. किसी भी विषय पर लिखते हुए दो बातों का आपस में जुड़े होने के साथ-साथ उनमें तालमेल होना भी आवश्यक है।
5. आत्मपरक लेखन में 'मैं' शैली का प्रयोग किया जा सकता है। जबकि निबंधों और अन्य लेखन में 'मैं' शैली का प्रयोग लगभग वर्जित होता है।

प्रश्न 2 : आलेख या फीचर लेखन करते हुए किन-किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?

उत्तर :

1. आलेख या फीचर की भाषा सरल, सरस और भावपूर्ण होनी चाहिए।
2. इसमें नई जिज्ञासाएँ जागृत करने की क्षमता होनी चाहिए।
3. इसमें विचारों की अधिकता होनी चाहिए।
4. इसमें किसी बात को बार-बार नहीं दोहराना चाहिए।
5. यह नवीनता और ताज़गी से युक्त होना चाहिए।
6. इसका आकार बहुत बड़ा नहीं होना चाहिए।

निबन्ध में सम्मिलित की जाने वाली सूक्तियाँ / श्लोक

1. यह पशु प्रवृत्ति है जो आप-आप ही चरे,
   वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे।
2. उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथै।
3. जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,
   वह नर नहीं है, पशु निरा है और मृतक समान है।
4. परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
5. दुनिया में सब हो समान सब भाषाएँ बनें महान।
6. हारिए न हिम्मत, बिसारिए न हरिनाम।
7. गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय
   बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय।
8. यूनान मिश्र रोमां सब मिट गए जहाँ से,
   कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
9. घर घर में विज्ञान का फैला आज प्रकाश
   करता दोनों काम यह नव निर्माण और विनाश।
10. आता नहीं देश पर मरना जिसे, उस नीच को जीने का अधिकार नहीं।
11. जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रस धार नहीं,
    वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।
12. अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
    दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।
13. नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पद तल में।

14. निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे ना हिये को शूल।

15. काल करै सो आज कर, आज करे सो अब,
पल में परलै होयेगी, बहुरी करेगा कब।

16. जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।

17. पूर्व युग सा आज का जीवन नहीं लाचार।
आ चुका है दूर द्वापर से बहुत संसार।।

18. जिसने नयी सभ्यता दी है मानव की सन्तान को,
श्रद्धायुत प्रणाम है मेरा उस विज्ञान को।

19. कायर मन का एक अधारा
दैव दैव आलसी पुकारा।

20. वृक्ष नगर के भूषण है, करते दूर प्रदूषण हैं।

21. मिटा दो अपनी हस्ती को, अगर कुछ मरतबा चाहो,
कि दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है।

22. दबा हुआ है मेरा भारत भ्रष्टाचार के बोझ तले
पूछ रही हूँ हे मानव, तुम किस ओर चले।

23. अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आँखों में पानी।

24. कितनी गीता गंगा माँ की गोदी में सो जाती है
कितनी सीता रेल पटरियों पर लहू हो जाती है।।

25. वृक्ष कबहू न फल भखे, नदी न संचय नीर
परमाथ के कारने साधुन धरा शरीर।।

विज्ञान का मानव जीवन पर प्रभाव

1. **प्रस्तावना / भूमिका :**
2. **विज्ञान का सकारात्मक प्रभाव :**
    1. चिकित्सा सुविधाओं का बढ़ जाना।
    2. संचार के साधनों का विकास
    3. परिवहन के साधनों का विकास।
    4. जीवन को सुगम बनाने में।
    5. अंतरिक्ष तक पहुँच बनाने में।
3. **नकारात्मक प्रभाव :**
    1. पर्यावरण संकट
    2. विस्फोटक (पृथ्वी के अस्तित्व को खतरा)
    3. बढ़ता प्रदूषण
    4. सामाजिक विघटन
4. **बेहतर क्या? :**
    1. संतुलित प्रयोग
    2. हथियारों की होड़ को कम करना।
    3. तकनीक का संतुलित प्रयोग।
5. **निष्कर्ष / उपसंहार :**

दहेज की समस्या

1. **प्रस्तावना / भूमिका :** दहेज का अर्थ
2. **कारण :**
    1. सामाजिक प्रतिष्ठा हेतु
    2. धन की लालसा
    3. परम्परागत रूढ़ियाँ
    4. लड़कियों की अशिक्षा
    5. योग्य लड़कों की कमी
    6. बेटी के सुरक्षित भविष्य की कल्पना।
3. **हानियाँ :**
    1. लड़कियों की हत्याओं में वृद्धि
    2. तलाक का बढ़ना
    3. सामाजिक संरचना का अस्त-व्यस्त होना।
    4. लड़कियों की आत्महत्या में वृद्धि।
4. **समाधान :**
    1. दहेज कानूनों को और सख्त बनाना।
    2. बेटी को योग्य और आत्मनिर्भर बनाना।
    3. दहेज लोभियों को समाज से बहिष्कृत करना।
    4. अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा।
5. **निष्कर्ष / उपसंहार :**

जनसंख्या की समस्या

1. **प्रस्तावना :** जनसंख्या का अर्थ।
2. **कारण :**
    1. अशिक्षा
    2. धार्मिक अंधविश्वास
    3. परिवार नियोजन के साधनों का कम प्रचार-प्रसार।
    4. शरणार्थी।
    5. भोगोलिक कारण।
3. **प्रभाव :**
    1. बेरोजगारी
    2. पर्यावरण संकट
    3. भोजन संकट
    4. अपराध
    5. आर्थिक संकट
4. **समाधान :**
    1. परिवार नियोजन
    2. दो बच्चों की नीति
    3. स्त्री शिक्षा पर बल
    4. आर्थिक लाभ को प्रोत्साहन द्वारा (लाड़ली)
    5. सख्त कानूनों द्वारा
5. **निष्कर्ष / उपसंहार :**

भ्रष्टाचार

1. **प्रस्तावना / भूमिका :** शाब्दिक अर्थ – भ्रष्ट + आचरण।
2. **कारण :**
    1. गरीबी
    2. बेरोजगारी
    3. भूखमरी
    4. धन की लालसा
    5. बेईमानी
3. **हानियाँ :**
    1. राष्ट्रीय विकास में बाधा
    2. आर्थिक विकास में अवरोध
    3. मानसिक अशान्ति
    4. जीवन मूल्यों का ह्रास
    5. राष्ट्रीय नीतियों का अवमूल्यन
4. **समाधान :**
    1. समान रोजगार के अवसर
    2. कालाबाजारी पर रोक
    3. जीवन मूल्यों की शिक्षा
    4. नैतिक शिक्षा का प्रचार
    5. ईमानदार व्यक्तियों का सम्मान
5. **निष्कर्ष / उपसंहार :**

विद्यार्थी और अनुशासनहीनता

1. **प्रस्तावना / भूमिका :** विद्यार्थी का अर्थ, विद्या + अर्थी
2. **कारण :**
    1. अलग दिखने की इच्छा
    2. परिवारिक पृष्ठभूमि
    3. कुसंगति का प्रभाव
    4. पढ़ाई में अरुचि।
3. **दुष्प्रभाव :**
    1. पढ़ाई लिखाई में बाधा
    2. नैतिक पतन
    3. अपराधी प्रवृत्ति
    4. भविष्य संकट
    5. समाज को क्षति
4. **कैसे अनुशासित करें? :**
    1. बातचीत एवं सही मार्गदर्शन
    2. माता-पिता से सम्पर्क करके
    3. प्रेरक प्रसंग एवं कहानी द्वारा।
    4. उचित देखरेख
5. **निष्कर्ष / उपसंहार :**

पत्र लेखन

1. गत कुछ दिनों से आपके क्षेत्र में अपराध बढ़ने लगे हैं उनकी रोकथाम के लिए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

सेवा में

थानाध्यक्ष महोदय,
थाना मंदिर मार्ग,
नई दिल्ली-110001

श्रीमान,

मैं इस पत्र के द्वारा आपके थाने के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र गोल मार्किट क्षेत्र में निरंतर बढ़ते जा रहे अपराधों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। पिछले एक सप्ताह में निरंतर लूटपाट, छीना-झपटी की घटनाएँ हो रही हैं। अभी दो दिन पूर्व ही रात के समय दो मोटर-साइकिल सवारों ने श्रीमती रेखा के गले से सोने की जंजीर झपट ली। आज सुबह ही एक व्यक्ति से रूपयों से भरा बैग छीन लिया गया। इससे पूर्व मंदिर मार्ग पर स्थित सरकारी आवासों के एक फ्लैट में दिन-दहाड़े चोरी हो चुकी है। लड़कियों को छेड़ने की घटनाएँ तो प्रतिदिन की कहानी बन चुकी हैं। मंदिर मार्ग पर स्थित एक विद्यालय की छात्रा का अपहरण करने का प्रयास किया गया।

क्षेत्रवासी क्षेत्र में बढ़ते अपराधों से आतंकित हैं। क्या आप इन अपराधों को रोकने के लिए उचित कदम उठाएँगे?

सधन्यवाद !

भवदीय
जितेन्द्र कुमार
बी-25, मंदिर मार्ग,
नई दिल्ली।

दिनांक : 25 मई, 20.....

सम्पादक के नाम पत्र

2. अपने क्षेत्र में बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाईयों का उल्लेख करते हुए किसी दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

सेवा में

संपादक महोदय,
दैनिक हिन्दुस्तान,
कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली-110001

मान्यवर,

मैं आपके सर्वाधिक जनप्रिय समाचार पत्र 'दैनिक हिन्दुस्तान' के माध्यम से इस महानगरी के विद्युत विभाग के अधिकारियों का ध्यान उन असुविधाओं की ओर आकृष्ट कराना चाहता हूँ, जिनका नवीन शाहदरा के वासियों को आए दिन सामना करना पड़ता है। जैसाकि आप जानते ही हैं, नवीन शाहदरा मुद्रण-कला का उद्योग की दृष्टि से दिल्ली का ही नही, संपूर्ण भारत का सिरमौर माना जाता है। यहाँ पर आधुनिक मुद्रण कला यंत्र काफी संख्या में होने के कारण बिजली की खपत भी काफी रहती है। किंतु यह आवश्यक नहीं कि बिजली इस क्षेत्र में बराबर रहती ही हो। खपत की अधिकता के कारण कई बार बिजली आँख-मिचौली खेलने में लग जाती है और कभी घंटों तक के लिए बिल्कुल ही गायब हो जाती है। इतना ही नहीं, कल-कारखाने वाले अवकाश के दिन भी बिजली का उपयोग करने से नहीं चूकते। फलतः इस गैर कानूनी कार्य करने वालों के सन्दर्भ में बिजलीघर वाले कोई कदम न उठाकर सम्पूर्ण क्षेत्र की बिजली ही गुल कर देते हैं।

इस प्रकार बिजली के गुल हो जाने से अध्ययन और दूरदर्शन के रूचिकर एवं प्रिय लगने वाले कार्यक्रम देखने में व्यवधान पड़ता है। कई बार तो बिजली घंटों तक इस क्षेत्रवासियों को दर्शन नहीं देती। कभी-कभी तो दो-दो दिन गायब हो जाती है और कभी भूली भटकी आती भी है तो उसका वोल्टेज इतना कम होता है कि न ट्यूबें जलती हैं और न ही पंखें ठीक से चल पाते हैं। बिजली का संकट गरमी के मौसम में तो और भी भयंकर रूप धारण कर लेता है।

आशा है कि आप इस क्षेत्र की विद्युत असुविधा को अपने पत्र में स्थान देकर कृतार्थ करेंगे।

सधन्यवाद !

भवदीय
कालीचरण तिवारी
नवीन शाहदरा, दिल्ली

दिनांक : 21 मई, 20.....

3. नगर निगम के सड़क निर्माण विभाग को पत्र लिखकर शिकायत कीजिए कि उनके कर्मचारी महीने भर पहले आपकी कॉलोनी में सड़क खोदकर चले गए और अब कोई भी सड़क बनाने के लिए नहीं आ रहा है। उनसे अनुरोध कीजिए कि इस समस्या का शीघ्र समाधान करवा दें।

सेवा में

मुख्य अभियंता,
लोक निर्माण विभाग,
दिल्ली नगर निगम,
सिविल लाईन, दिल्ली

मान्यवर

आपके विभाग के कुछ कर्मचारी पिछले माह मलकागंज में सड़क खोदकर चले गए। खोदने के पश्चात् वे आज तक वापस नहीं लौटे। सड़क खुदी होने से कॉलोनी के निवासियों को बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। कोई भी वाहन कॉलोनी के अंदर नहीं जा पाता और न ही सड़क की सफाई हो पाती है।

अतः आपसे अनुरोध है कि इस समस्या का शीघ्र समाधान करवाएँ व इस सड़क को तुरंत बनवाकर कृतार्थ करें।

सधन्यवाद !

भवदीय
मंसूर अहमद
सचिव, मोहल्ला सुधार कमेटी,
मलकागंज, दिल्ली
दिनांक : 8 नवम्बर, 20.....

(4) दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा सरकारी स्कूलों की उपेक्षा की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

सेवा में

संपादक महोदय,
दैनिक जागरण,
नई दिल्ली

मान्यवर

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से दिल्ली सरकार का ध्यान शिक्षा विभाग की उपेक्षा वृत्ति की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ ताकि स्थिति में सुधार लाया जा सके।

दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा लगभग एक हजार स्कूल संचालित किए जाते हैं। इनमें शायद ही किसी स्कूल में पूरे अध्यापक हों। लगभग प्रत्येक विद्यालय में 4-5 अध्यापकों की कमी बनी रहती है। इससे विद्यार्थियों की पढ़ाई बाधित होती है। विद्यालयों में सुविधाओं की बहुत कमी है। बिजली-पानी का समुचित प्रबंध नहीं है। डेस्क तो 50 प्रतिशत तक भी नहीं हैं। अनेक विद्यालय भवन जर्जर अवस्था में हैं। हर वर्ष लंबे-चौड़े दावे किए जाते हैं, किन्तु उनको कार्य रूप में परिवर्तित करने की दिशा में कारगर कदम नहीं उठाए जाते। शिक्षा विभाग अपने आदेशों में भी अस्पष्ट एवं अनिश्चितता की स्थिति में रहता है। इस स्थिति में तुरंत सुधार करने की आवश्यकता है।

सधन्यवाद !

भवदीय
सुरेश यादव
समाजसेवी
दिल्ली
दिनांक : 3 फरवरी, 20.....

(5) विद्यालय में लिपिक का पद रिक्त है उसके लिए शिक्षा अधिकारी को स्ववृत्त के साथ आवेदन पत्र लिखो।

सेवा में

शिक्षा अधिकारी,
दिल्ली सरकार,

विषय : लिपित के पद हेतु आवेदन पत्र।

मान्यवर,

नवभारत टाईम्स के दिनांक 17.6.2015 के विज्ञापन के अनुसार आपके क्षेत्र के सर्वोदय विद्यालय में लिपिक का पद रिक्त है। मैं इस पद हेतु आवेदन करना चाहता हूँ। मेरी शैक्षिक योग्यताएँ निम्नवत हैं।-

योग्यता	वर्ष	विषय	अंक %	श्रेणी
दसवीं	1995	हिन्दी, अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान	72%	प्रथम
बारहवीं	1997	हिन्दी, अंग्रेजी	63%	प्रथम
स्नातक	2000	हिन्दी, अर्थशास्त्र.	61%	प्रथम

विशेष योग्यता : कम्प्यूटर टाइपिंग का डिप्लोमा कोर्स

यदि इस पद पर मुझे सेवा का मौका दिया जाता है तो मैं अपनी सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास करूंगा।

सधन्यवाद !

भवदीय
सुरेश यादव
दिल्ली
दिनांक : 8 नवम्बर, 20.....

अपठित पद्यांश (हल सहित)

1. **बीचों-बीच नगर के**
काल सूर्य के रथ के-
पहियों के ज्यों अरे टूटकर
बिखर गए हों
दसों दिशा में
कुछ क्षण का वह उदय-अस्त।

केवल एक प्रज्ज्वलित क्षण की
दृश्य सोख लेने वाली दोपहरी फिर?

छायाएँ मानव-जन की
नहीं मिटीं लंबी हो-होकर
मानव ही सब भाष हो गए।
छायाएँ तो अभी लिखी हैं
झूलसे हुए पत्थरों पर
उजड़ी सड़कों की गच पर।

प्रश्न 1. क्षितिज से न उगकर नगर के बीचों-बीच बरसने वाला वह 'सूरज' क्या था?

2. वह दुर्घटना कब, कहाँ घटी होगी?

3. उसे 'कुछ क्षण का उदय-अस्त' क्यों कहा गया है?

4. 'मानव ही सब भाष हो गए' कथन का क्या आशय है?

5. इस घटना के प्रमाण आज किस रूप में प्राप्त होते हैं?

उत्तर 1. क्षितिज से न उगकर नगर के बीचों-बीच बरसने वाला वह सूरज अमेरिका द्वारा जापान पर गिरया गया अणुबम था।

2. यह दुर्घटना द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में जापान के हिरोशिमा नगर में घटी थी।

3. उसे कुछ क्षण का 'उदय-अस्त' इसलिए कहा गया है क्योंकि बम बिस्फोट अचानक हुआ था और कुछ ही क्षणों में सब कुछ नष्ट हो गया था।

4. इस कथन का आशय यह है कि प्रचंड गर्मी के कारण मनुष्य राख बन गए।

5. इस घटना का प्रमाण आज भी झुलसे हुए पत्थरों और उजड़ी सड़कों के रूप में प्राप्त होते हैं।

2. **उसकी सहिष्णुता, क्षमा का है महत्त्व ही क्या,**
करना ही आता नहीं जिसको प्रहार है?
करुणा, क्षमा को छोड़ और क्या उपाय उसे
ले न सकता जो बैरियों से प्रतीकार है?
सहता प्रहार कोई विवश, कर्दय जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है;
करुणा, क्षमा है क्लीव जाति के कलंक घोर,
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का सिंगार है।

चोट खा सहिष्णु वो रहेगा किस भाँति, तीर-
जिसके निषंग में, करों में दृढ़ चाप है;
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं, किंतु,
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।

प्रश्न 1. शत्रु के प्रहार को कौन लोग सहते हैं?

2. कवि ने किन लोगों की सहिष्णुता और क्षमा जैसे मानवीय मूल्यों को महत्वहीन बताया है?

3. क्षमा को शूरवीरों का शृंगार क्यों कहा गया है?

4. विजेता के आभूषण क्या बताए गए हैं?

5. 'चोट खा सहिष्णु..... चाप है' -काव्य-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1. शत्रु के प्रहार को वे लोग सहते हैं जो कायर और पौरुषहीन होते हैं।

2. कवि ने उन लोगों की सहिष्णुता और क्षमा जैसे मानवीय गुणों को महत्वहीन बताया है जिनको प्रहार करना नहीं आता। ऐसे लोग शत्रुओं से प्रतिकार नहीं ले सकते।

3. क्षमा को शूरवीरों का शृंगार इसलिए कहा गया है क्योंकि उनमें इसकी क्षमता होती है। वे शक्ति रहते हुए भी क्षमा कर सकते हैं।

4. विजेता के आभूषण सहिष्णुता और क्षमा बताए गए हैं।

5. जिस व्यक्ति के हाथ में धनुष-बाण अर्थात् अस्त्र-शस्त्र हैं वह शत्रु की चोट खाकर सहिष्णु नहीं बना रह सकता। वह चोट का बदला अवश्य लेगा।

3. **ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,**
थी अभी इक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह, क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।

देव मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
जल उठूँगी गिर अंगारे पर किसी,
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।

बह उठी उस काल इक ऐसी हवा,
वह समंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का था मुँह खुला,
वह उसी में जा गिरी, मोती बनी।

लोग अकसर हैं झिझकते-सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु घर का छोड़ना अकसर उन्हें,
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर।

प्रश्न 1. बूँद द्वारा कहा गया 'आह' शब्द किस भाव को व्यक्त करता है। 2

2. बूँद की चिन्ता का विषय क्या है? 2

3. कविता में बूँद के साथ किन लोगों की समानता दिखाई गई है? 2

4. उपर्युक्त काव्य पंक्तियों से कवि क्या संदेश देता है? 2

5. लोग कब झिझकते है? 2

उत्तर 1. बूँद द्वारा कहा गया 'आह' शब्द शोक (अफसोस) भाव को व्यक्त करता है।

2. बूँद की चिंता का विषय है-उसका भविष्य। यह सोच रही है कि वह बचेगी भी या नहीं।

3. बूँद के साथ उन लोगों की समानता दिखाई गई है जो घर छोड़ते हुए चिंतित रहते हैं।

4. इन पंक्तियों में कवि का सकारात्मक दृष्टिकोण प्रकट हुआ है। उसका संदेश है कि घर छोड़ने में चिंतत नहीं होना चाहिए। कई बार यह लाभकारी स्थिति में ले जाता है।

5. लोग तब झिझकते हैं जब उन्हें घर छोड़ना पड़ता है।

4. **ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में**
मनुज नहीं लाया है,
अपना सुख उसने अपने
भुजबल से ही पाया है।
प्रकृति नहीं डर कर झुकती है
कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य के
उद्यम से, श्रमजल से।
ब्रह्मा का अभिलेख पढ़ा-
करते निरुद्यमी प्राणी,
धोते वीर कु-अंक भाल के
बहा ध्रुवों से पानी।
भाग्यवाद आवरण पाप का
और शस्त्र शोषण का,
जिससे रखता दबा एक जन
भाग दूसरे जन का।

प्रश्न 1. प्रकृति मनुष्य के आगे कब झुकती है? 2

2. भाग्य-लेख कैसे लोग पढ़ते हैं? 2

3. भाग्यवाद को 'पाप का आवरण' और 'शोषण का शस्त्र' क्यों कहा गया है? 2

4. इस काव्यांश से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? 2

5. 'भाल के कु-अंक' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर 1. प्रकृति मनुष्य के आगे तब झुकती है जब मनुष्य उद्यम और श्रम करता है। प्रकृति इन्हीं से हार मानती है।

2. भाग्य-लेख वे लोग पढ़ते हैं जो निरुद्यमी प्राणी होते हैं अर्थात् जो श्रम करने से जी चुराते हैं वे ही भाग्य पर विश्वास रखते हैं।

3. भाग्यवाद को 'पाप का आवरण' इसलिए कहा गया है क्योंकि इसकी ओट में पाप-कर्म को बढ़ावा मिलता है। इसे 'शोषण का शस्त्र' इसलिए कहा गया है कि भाग्य का नाम लेकर एक व्यक्ति दूसरे को दबाकर रखता है। उसके हिस्से का लाभ भी स्वयं हड़प कर जाता है।

4. इस काव्यांश से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि जीवन में सफलता भाग्य के बल पर नहीं, अपितु पुरुषार्थ से मिलती है। अत: हमें कर्म करने में विश्वास रखना चाहिए।

5. भाल के 'कु-अंक' से कवि का तात्पर्य है भाग्य में लिखी बुरी बातें परिश्रमी अर्थात् कर्मवादी व्यक्ति श्रम का जल बहाकर भाग्य के कु-अंक को भी धो देते हैं।

अपठित पद्यांश

1. कुछ सुन लें, कुछ अपनी कह ले।
जीवन सरिता की लहर-लहर,
मिटने को बनती यहाँ प्रिये
संयोग क्षणिक, फिर क्या जाने
हम कहाँ और तुम कहाँ प्रिये।
पल-भर तो साथ-साथ बह लें,
कुछ सुन लें, कुछ अपनी कह लें।
हम हैं अजान पथ के राही,
चलना जीवन का सार प्रिये
पर दु:सह है, अति दु:सह है
एकाकीपन का भार प्रिये।
पल-भर हम-तुम मिल हँस-खेलें,
आओ कुछ ले लें औ' दे लें।
हम-तुम अपने में लय कर लें।
उल्लास और सुख की निधियाँ,
बस इतना इनका मोल प्रिये
करुणा की कुछ नन्हीं बूंदें
कुछ मृदुल प्यार के बोल प्रिये।
सौरभ से अपना उर भर लें,
हम तुम अपने में लय कर लें।

प्रश्न 1. प्रथम छंद 'जीवन सरिता की..... तुम कहाँ प्रिये!' के आधार पर कवि के जीवन के प्रति क्या विचार हैं? 1

2. कवि को अति दु:सह क्या लगता है? 1

3. कवि अपनी प्रेयसी से वार्तालाप करते हुए मन में क्या भर लेने की बात कह रहा है? उसे भर लेने से क्या लाभ होगा? 1

4. आशय स्पष्ट कीजिए– 1
संयोग क्षणिक, फिर क्या जाने हम कहाँ और तुम कहाँ प्रिये।

5. कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए। 1

2. हरी बिछली घास।
दोलती कलगी छरहरी बाजरे की।
अगर मैं तुमको ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता,
या शरद् के भोर की नीहार न्हायी कुँई।
टटकी कली चंपे की, वगैरह, तो
नहीं, कारण कि मेरा हृदय उथला या सूना है
या कि मेरा प्यार मैला है
बल्कि केवल यही, ये उपमान मैले हो गए हैं।
देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच।
कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है
मगर क्या तुम नहीं पहचान पाओगी!
तुम्हारे रूप के, तुम हो, निकट हो, इसी जादू के
निजी किस सहज गहरे बोध से, किस प्यार से मैं कह रहा हूँ–
अगर मैं यह कहूँ–
बिछली घास हो तुम
लहलहाती हवा में कलगी छरहरे बाजरे की?
आज हम शहरातियों को
पालतू मालंच पर सँवरी जुही के फूल–से
सृष्टि के विस्तार का, ऐश्वर्य का, औदार्य का
कहीं सच्चा, कहीं प्यारा एक प्रतीक
बिछली घास है।
या शरद की साँझ के सूने गगन की पीठिका पर दोलती
कलगी अकेली
बाजरे की।
और सचमुच, इन्हें जब–जब देखता हूँ
यह खुला वीरान संसृति का घना हो सिमट जाता है
और मैं एकांत होता हूँ समर्पित।

शब्द जादू हैं-
मगर क्या यह समर्पण कुछ नहीं है?

प्रश्न 1. कविता में कवि ने अपनी प्रेमिका के लिए किस नवीन उपमान का प्रयोग किया है? 1

2. कवि प्रेमिका के लिए किन प्राचीन उपमानों का प्रयोग नहीं करना चाह रहा है? 1

3. सृष्टि के विस्तार, ऐश्वर्य और औदार्य का सच्चा और प्यारा प्रतीक किसे कहा गया है? 1

4. 'शब्द जादू हैं-मगर क्या यह समर्पण कुछ नहीं है।' इस पंक्ति में कवि ने किस समर्पण की बात कही है? 1

5. कविता में उल्लिखित किन्हीं दो नए और दो पुराने उपमानों के नाम लिखिए। 1

3. नए युग में विचारों की नई गंगा कहाओ तुम,
कि सब कुछ जो बदल दे, ऐसे तूफाँ में नहाओ तुम।

अगर तुम ठान लो तो आँधियों को मोड़ सकते हो,
अगर तुम ठान लो तारे गगन के तोड़ सकते हो।
अगर तुम ठान लो तो विश्व के इतिहास में अपने-
सुयश का एक नव अध्याय भी तुम जोड़ सकते हो।

तुम्हारे बाहुबल पर विश्व को भारी भरोसा है-
उसी विश्वास को फिर आज जन-जन में जगाओ तुम।
पसीना तुम अगर इस भूमि में अपना मिला दोगे।
तुम्हारी देह के श्रम-सीकरों में शक्ति है इतनी-
कहीं भी धूल के तुम फूल सोने के खिला दोगे।
नया जीवन तुम्हारे हाथ का हल्का इशारा है,
इशारा कर वही इस देश को फिर लहलहाओ तुम।

प्रश्न 1. यदि भारतीय नवयुवक दृढ़ निश्चय कर लें तो क्या-क्या कर सकते हैं? 1

2. नवयुवकों से क्या-क्या करने का आग्रह किया जा रहा है? 1

3. युवक यदि परिश्रम करें, तो क्या लाभ होगा? 1

4. आशय स्पष्ट कीजिए : 1
'कहीं भी धूल में तुम फूल सोने के खिला दोगे।'

5. काव्यांश में से कोई एक मुहावरा चुनकर उसका वाक्य प्रयोग कीजिए। 1

अपठित गद्यांश (हल सहित)

I 'भ्रष्टाचार' शब्द 'भ्रष्ट' और 'आचार' शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ है - नीतियों व मूल्यों से रहित आचरण। जब कोई व्यक्ति अपने पद, सम्मान, कर्तव्य आदि की गरिमाओं का ध्यान न रखकर गैर कानूनी ढ़ंग से उसका इस्तेमाल अपने व अपने परिचितों के लाभ के लिए करता है, तब उसका यह आचरण 'भ्रष्टाचार' के अंतर्गत आता है। भ्रष्टाचार के कारण समाज की व्यवस्था चरमराने लगती है और योग्यता के स्थान पर पैसा, सामाजिक प्रतिष्ठा आदि का रौब चलने लगता है। इसी कारण अयोग्य व्यक्ति पद प्राप्त कर लेते हैं और योग्य व्यक्ति पीछे रह जाते हैं। ऐसा होने से समाज में अराजकता, विद्रोह आदि की स्थिति आ जाती है। दुर्भाग्य की बात है कि कभी अपनी मर्यादित एवं पूजित संस्कृति व नैतिक मूल्यों के कारण चर्चित देश आज भ्रष्टाचार व घोटालों के कारण सुर्खियों में है। रिश्वतबाजी, कालाबाजारी, मिलावटखोरी, तस्करी, आतंकवाद, महँगाई, मैच फिक्सिंग, परीक्षाओं के प्रश्नपत्र आउट करना आदि कहने भर को अलग-अलग हैं किन्तु जड़ में जाने पर ज्ञात होता है कि ये सब कहीं-न-कहीं भ्रष्टाचार के ही अंग हैं। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था पर सबसे ज्यादा असर राजनीति का पड़ता है, इसे देश की बदनसीबी ही कहा जाएगा कि आज सबसे ज्यादा भ्रष्टाचारी इसी राजनीति में है। धार्मिक, आर्थिक, खेल, प्रौद्योगिकी, उद्योग, शिक्षा आदि जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहाँ इस भ्रष्टाचार रूपी राक्षस के पैर न पड़ें हों। आज सरकार गांवों के विकास के लिए जो भी योजनाएँ तैयार करती है। उन योजनाओं का प्रारूप इतना सही होता है कि अगर उनको सही ढ़ंग से अमल में लाया जाए, तो गांवों में खुशहाली आते देर नहीं लगेगी, किंतु इस भ्रष्टाचार के कारण योजनाओं में लगाए जा रहे पैसे का एक बड़ा भाग लाभार्थियों तक न पहुँचकर भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाता है। संक्षेप में कहें, तो भारत के विकास की सबसे बड़ी बाधा यह भ्रष्टाचार ही है। इसलिए देश के सच्चे विकास के लिए इस भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ देना चाहिए।

प्रश्न 1. 'भ्रष्टाचार' को अपने शब्दों में परिभाषित कीजिए। 2

2. भ्रष्टाचार का समाज पर क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ता है? 2

3. आज भारतीय राजनीति की क्या स्थित है? गद्यांश के आधार पर लिखिए। 2

4. गद्यांश में दुर्भाग्य का विषय किसे कहा गया है? 2

5. गाँवों में खुशहाली कब आ सकती है? विचार करके लिखिए। 2

6. देश के सच्चे विकास के लिए क्या करना आवश्यक है? 2

7. 'बदनसीबी' शब्द से उपसर्ग-प्रत्यय अलग-अलग कीजिए। 1

8. 'खुशहाली' व 'दुर्भाग्य' शब्दों के विलोम लिखिए। 1

9. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

उत्तर 1. 'भ्रष्टाचार' एक ऐसी कुव्यवस्था एवं कुविचार को कहा जा सकता है, जिसमें व्यक्ति स्वार्थ के वशीभूत होकर नीतियों व मूल्यों से रहित आचरण करता है। अपने पद, सम्मान, कर्त्तव्य आदि की गरिमाओं का ध्यान नहीं रखता और गैरकानूनी ढ़ंग से लाभ कमाने में हेतु उनका दुरुपयोग करता है।

2. भ्रष्टाचार का समाज पर बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, इसके कारण समाज की व्यवस्था चरमराने लगती है और योग्यता के स्थान पर पैसा, परिचय, सामाजिक प्रतिष्ठा आदि का रौब चलने लगता है। इसी कारण अयोग्य व्यक्ति पद प्राप्त कर लेते हैं और योग्य व्यक्ति पीछे रह जाते हैं। ऐसा होने से समाज में अराजकता व विद्रोह आदि की स्थिति आ जाती है।

3. आज भारतीय राजनीति, भ्रष्टाचार से ग्रस्त है। राजनीतिक भ्रष्टाचार के कारण देश की स्थिति बदहाल होती जा रही है। धार्मिक, आर्थिक, खेल, प्रौद्योगिकी, उद्योग, शिक्षा आदि कोई भी क्षेत्र आज भ्रष्टाचार से अछूता नहीं रह गया है।

4. भारत कभी अपनी मर्यादित एवं पूजित संस्कृति व नैतिक मूल्यों के कारण चर्चित देश रहा है, किंतु आज यह भ्रष्टाचार व घोटालों के कारण सुर्खियों में है। गद्यांश में भारतीय समाज में व्याप्त इसी मूल्यहीनता को दुर्भाग्य का विषय कहा गया है।

5. गाँवों में खुशहाली तभी आ सकती है, जब उनके लिए बनाई गई योजनाओं को सही ढ़ंग से अमल में लाया जाए क्योंकि इन योजनाओं का प्रारूप इतना सही होता है कि अगर इनको सही ढ़ंग से कार्यान्वित कर लिया जाए, तो गांवों के समुचित विकास के मार्ग में किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं आएगी।

6. देश के सच्चे विकास के लिए देश को भ्रष्टाचार से मुक्त करना आवश्यक है क्योंकि भारत के विकास की सबसे बड़ी बाधा यह भ्रष्टाचार ही है।

7. 'बदनसीबी' शब्द में 'बद' उपसर्ग तथा 'ई' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है।

8. 'खुशहाली' का विलोम शब्द 'बदहाली' व 'दुर्भाग्य' का विलोम शब्द 'सौभाग्य' है।

9. उपयुक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक 'विकास की सबसे बड़ी बाधा : भ्रष्टाचार' हो सकता है।

('भ्रष्टाचार' से जुड़े अन्य शीर्षक भी स्वीकार्य)।

2. जल से इस सृष्टि के हर प्राणी का एक अटूट नाता है। जल शरीर के निर्माण में सहायक पाँच तत्वों, अग्नि, जल, वायु, धरती, आकाश में से एक प्रमुख तत्व है। इसके बिना धरती पर जीवन की कल्पना करना भी बेमानी है। जल पूजित पदार्थ है। दुर्भाग्य की बात है कि बुद्धिजीवी होते हुए भी हम ऐसे पूजित पदार्थ के प्रति एकदम उदासीन बने हुए हैं, किंतु वास्तव में यह समझना चाहिए कि 'जल है तो कल है' यह उद्घोष हमें जल के उपयोग के प्रति सारी उदासीनता मिटाकर जागरूक बनने का संदेश दे रहा है। यह आह्वान कर रहा है कि यदि जल होगा, तभी कल होगा, वरना इस धरती पर कुछ न रहेगा। इसलिए जल के सही उपयोग हेतु जागरूक बनें, ताकि आने वाली पीढ़ी को यह प्राकृतिक धरोहर उसी रूप में प्राप्त हो सके, जिस रूप में हमारे पूर्वजों ने हमें सौंपी है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि जल अमूल्य है, इसकी एक-एक बूंद में जीवन है। जल जीवनदायी तत्व है। इसी कारण कहा गया है- 'जल बिनु सारहीन संसारा' वास्तव में, जल के बिना संसार निस्सार है। जल से ही इसका अस्तित्व है, जल नहीं, तो जग नहीं। जल अर्थात् पानी की उपयोगिता रहीम ने भी 'बिन पानी सब सून' कहकर उजाकर की थी। निस्संदेह, जल ही जीवन है और इस उपयोगी तत्व को हमें नासमझी से यूँ ही बर्बाद नहीं करना चाहिए। आज विश्व के आगे जो समस्याएँ चुनौती बनकर खड़ी हैं, उनमें जल-समस्या भी एक प्रमुख समस्या है और संभावना तो यह भी है कि अगर तीसरे विश्व युद्ध की नौबत आई, तो उसका प्रमुख कारण जल ही होगा। इस कारण आवश्यक है कि हम जल का समुचित उपयोग करें और इस जीवनदायी तत्व की जरा भी अनदेखी न करें।

प्रश्न 1. जल क्या है? धरतीवासियों के लिए इसकी क्या उपयोगिता है? 2

2. गद्यांश में दुर्भाग्य का विषय किसे कहा गया है और क्यों? 2

3. 'जल है तो कल है' उद्घोष में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए। 2

4. जल को लेकर हमारा नैतिक दायित्व क्या होना चाहिए? 2

5. गद्यांश में ऐसा क्यों कहा गया है कि जल तीसरे विश्वयुद्ध का कारण हो सकता है? 2

6. जल कैसा तत्व है? 2

7. जल से ही किसका अस्तित्व है? 1

8. 'प्राकृतिक' शब्द से उपसर्ग-प्रत्यय अलग-अलग कीजिए। 1

9. 'आवश्यक' व 'दुर्भाग्य' शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। 1

10. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

उत्तर 1. जल प्राणदायी होने के कारण पूजित पदार्थ है। धरतीवासियों के लिए इसकी बहुत उपयोगिता है, क्योंकि इसके अभाव में धरती पर जीवधारियों का अस्तित्व ही नहीं रहेगा।

2. गद्यांश में दुर्भाग्य का विषय जल के प्रति मनुष्य की उदासीनता को कहा गया है। बुद्धिजीवी होते हुए भी मनुष्य प्राणदायी पूजित पदार्थ जल के प्रति उदासीन हो रहा है। इसके अभाव में वह स्वयं जीवित नहीं रह सकता है।

3. 'जल है तो कल है' उद्घोष में यह संदेश निहित है कि हम जल का उपयोग विवेकपूर्ण ढ़ंग से करें। जल को बर्बाद होने से बचाएं। क्योंकि जल होगा, तभी कल होगा, वरना धरती को जीवन रहित होते देर नहीं लगेगी।

4. जल को लेकर हमारा नैतिक दायित्व उसकी उपयोगिता को समझते हुए उसकी बचत करना, तथा उसे बर्बाद होने से बचाना होना चाहिए। ऐसा करके ही हम इस प्राणदायी तत्व का संरक्षण कर सकते हैं।

5. आज पूरे विश्व में कई देश पानी की किल्लत से जूझ रहे हैं। पानी की यह समस्या दिनोंदिन बढ़ती चली जा रही है। आने वाले दिनों में पानी को लेकर देशों के बीच तीखे विवाद हो सकते हैं। और यही तीखी नोंक-झोंक तीसरे विश्वयुद्ध का कारण बन सकती है।

6. जल जीवनदायी तत्व है।

7. जल से ही जग का अस्तित्व है। अर्थात् जल होगा तभी जग होगा, वरना इसके अभाव में संसार में जीवधारियों का नामोनिशान मिट जाएगा।

8. 'प्राकृतिक' शब्द में 'प्र' उपसर्ग तथा 'इक' प्रत्यय है।

9. आवश्यक शब्द का विलोम 'अनावश्यक' है। दुर्भाग्य शब्द का विलोम 'सौभाग्य' है।

10. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक 'जल है तो कल है' हो सकता है।

('जल के महत्व' से जुड़े अन्य शीर्षक भी स्वीकार्य)।

3. 'योग' स्वस्थ जीवन का आधारशिला है। यह मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है, जिससे मन में नई उमंग व नए उत्साह का संचार होता है। नियमित रूप से ध्यान व श्वसन अभ्यास करने से मानसिक तनाव दूर होता है और विभिन्न आसनों का नियमित अभ्यास करने से शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हुए हम अपने अंदर एक ऐसी अनूठी स्फूर्ति की अनुभूति करते हैं, जिसके बल पर जीवन को आनंदित होकर बिताया जा सकता है। विद्यार्थियों के लिए तो योग किसी वरदान से कम नहीं है। कपालभाती, भ्रामरी व अनुलोम-विलोम आदि ऐसी योग क्रियाएँ हैं, जो न केवल स्वस्थ रखने में सहायक है, वरन् विद्यार्थियों को अध्ययन के मध्य एकाग्र करने में भी सहायक होती हैं। इसमें कोई दो मत नहीं कि योग के द्वारा विद्यार्थी आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में पढ़ाई और अन्य गतिविधियों के कारण होने वाली व्यस्तता में स्वस्थ रह सकते हैं। आज विद्यार्थियों की दिनचर्या कार्यालय में कार्यरत व्यक्ति से कम नहीं है। सुबह स्कूल, स्कूल के बाद ट्यूशन क्लासेज या फिर हॉबी क्लासेज में पूरा दिन विद्यार्थी। घिरा रहता है। ऐसे में यदि वह योग का सहारा ले, तो स्वयं को युग की माँग के अनुरूप व्यस्तता से भरी दिनचर्या के अनुकूल ढ़ालने में सफल हो जाता है। अच्छा स्वास्थ्य आज के इस भौतिकवादी युग में किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं है, किंतु आँकड़े बताते हैं कि नियमित रूप से योग करने वाले विद्यार्थी इस चुनौती का सामना आसानी से कर पाते हैं। विद्यार्थियों के जीवन से तनाव एवं दबाव को हटाकर उनके मनों को सकारात्मकता से ओतप्रोत करने के उद्देश्य से आज विद्यालयों में पाठ्य सहगामी गतिविधि के अंतर्गत नियमित रूप से ध्यान व श्वसन अभ्यास को सम्मिलित किया गया है। यदि विद्यार्थी मन से योग को अपनाते हैं, तो निश्चित रूप से उन्हें अच्छे स्वास्थ्य का वरदान पाने से कोई नहीं रोक सकता।

प्रश्न 1. 'योग' को स्वस्थ जीवन की आधारशिला कहा गया है। क्यों? 2

2. किसके बल पर जीवन को आनंदित होकर बिताया जा सकता है और कैसे? 2

3. सिद्ध कीजिए कि योग विद्यार्थी जीवन के लिए वरदान है। 2

4. आज के विद्यार्थी की दिनचर्या पर प्रकाश डालिए। 2

5. विद्यालयों में पाठ्य सहगामी गतिविधि के अंतर्गत नियमित रूप से ध्यान व श्वसन अभ्यास को सम्मिलित करने का क्या कारण हो सकता है?

6. गद्यांश में कितने प्रकार की योग-क्रियाओं का उल्लेख किया गया है? इनसे क्या लाभ होता है? 2

7. 'यदि विद्यार्थी मन से योग को अपनाते हैं, तो निश्चित रूप से उन्हें अच्छे स्वास्थ्य का वरदान पाने से कोई नहीं रोक सकता।' उपर्युक्त वाक्य को सरल वाक्य में रूपांतरित कीजिए। 1

8. 'प्रतिस्पर्धात्मक' शब्द में से उपसर्ग व प्रत्यय छाँटकर लिखिए। 1

9. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

उत्तर 1. योग मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है, जिससे मन में नई उमंग व नए उत्साह का संचार होता है। नियमित रूप से ध्यान व श्वसन अभ्यास आदि करने से मानसिक तनाव दूर होता है और विभिन्न आसनों का नियमित अभ्यास करने से शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हितकारी होने के कारण 'योग' को स्वस्थ जीवन की आधारशिला कहा गया है।

2. उत्तम शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के बल पर जीवन को आनंदित होकर बिताया जा सकता है क्योंकि इससे अनूठी स्फूर्ति व मानसिक दृढ़ता प्राप्त होती है, जिसके द्वारा हम जीवन के प्रत्येक कार्य को सुचारु ढ़ंग से कर पाते हैं तथा कार्य भली प्रकार से पूर्ण होने से मन-तन प्रसन्न होते हैं और अनावश्यक तनाव परेशान नहीं करते।

3. आज के युग में विद्यार्थियों की दिनचर्या भी अति व्यस्त हो चुकी है। ऐसे में कपालभाती, भ्रामरी व अनुलोम-विलोम आदि ऐसी योग क्रियाएँ हैं, जो न केवल विद्यार्थियों को स्वस्थ रखने में सहायक हैं, बल्कि विद्यार्थियों की एकाग्रता को भी बढ़ाने में सहायक होती हैं। अतः योग के द्वारा आज के विद्यार्थी। इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में पढ़ाई और अन्य गतिविधियों के कारण होने वाली व्यस्तता में स्वस्थ रह सकते हैं। इससे सिद्ध होता है कि योग विद्यार्थी जीवन के लिए वरदान है।

4. आज के विद्यार्थी की दिनचर्या बहुत व्यस्त है। वे कार्यालय में कार्यरत व्यक्ति से कम नहीं हैं। सुबह स्कूल, स्कूल के बाद ट्यूशन क्लासेज या फिर हॉबी क्लासेज में उनका पूरा समय बीत जाता है। स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए समय ही नहीं मिलता है।

5. विद्यालयों में पाठ्य सहगामी गतिविधि के अंतर्गत नियमित रूप से ध्यान व श्वसन अभ्यास को सम्मिलित करने का कारण विद्यार्थियों के जीवन से तनाव एवं दबाव को हटाकर उनके मनों को सकारात्मकता से ओतप्रोत करना है।

6. गद्यांश में कपालभाती, भ्रामरी व अनुलोम-विलोम आदि योग-क्रियाओं का उल्लेख किया गया है। इन योग क्रियाओं को नियमित रूप से करने पर, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहता है और विद्यार्थियों की एकाग्रता भी बढ़ती है।

7. **सरल वाक्य :** मन से योग को अपनाने वाले विद्यार्थियों को निश्चित रूप से अच्छे स्वास्थ्य का वरदान पाने से कोई नहीं रोक सकता।

8. 'प्रतिस्पर्धात्मक' शब्द में 'प्रति' उपसर्ग व 'आत्मक' प्रत्यय है।

9. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक 'योग : स्वस्थ जीवन की आधारशिला' हो सकता है। ('योग के महत्व' से जुड़े अन्य शीर्षक भी स्वीकार्य।

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. परिवर्तन यानी बदलाव सृष्टि का शाश्वत नियम है। प्राचीन काल से लेकर आज तक परिवर्तन का यह दौर अनवरत चलता रहा है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था भी आज इसी दौर से गुजर रही है। हम यह अच्छी तरह से जानते हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में हमारा अतीत बहुत सम्पन्न रहा है और नालंदा विश्वविद्यालय के दौर में तो विदेशों से भी विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए यहाँ आया करते थे, किंतु दुर्भाग्य से वह समय भी आया, जब विदेशी आक्रमणकारियों ने अपने अत्याचारों से हमारी शिक्षा को दबाकर अपनी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देना चाहा, किंतु स्वतंत्रता के बाद हमने अपनी संस्कृति, अपनी भाषाओं, अपने जीवन मूल्यों से अपनी शिक्षा व्यवस्था को सजाने-संवारने का प्रयास किया, किंतु रटने पर अधिक जोर, शारीरिक दंड व बोझिल पाठ्यक्रम तथा शिक्षा बाल केंद्रित न होने के कारण पाठशालाएँ बच्चों को लुभाने में सफल नहीं हो सकी। इसी कारण साक्षारता का प्रतिशत काफी नीचे बना रहा। इससे शिक्षा को उबारने के लिए फिर परिवर्तन की जरूरत महसूस हुई और बाल-मनोविज्ञान का ध्यान रखते हुए ऐसी युक्तियाँ अपनाई जाने लगीं, जिनसे छोटे-छोटे बच्चे खुशी-खुशी विद्यालय जाने लगा। आज सी.सी.ई. के दौर तक हमारी शिक्षा आ पहुँची है, जहाँ सतत एवं समग्र मूल्यांकन के द्वारा परंपरागत शिक्षा-व्यवस्था की कमियों को दूर करते हुए एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था को स्थापित करने का प्रयास किया गया है, जो पूरी तरह बाल-केंद्रित है और बच्चों के अंदर सभी प्रकार के कौशलों के विकास के प्रति प्रतिबद्ध भी है। इसमें लिखित अभिव्यक्ति के साथ-साथ मौखिक अभिव्यक्ति के विकास का भी ध्यान रखा जाता है तथा पर्याप्त रूप में रचनात्मक गतिवधियों द्वारा बच्चों की प्रतिभाओं को निखारने का प्रयत्न किया जाता है। यह नई पहल अपनी युक्तियों से विद्यालयों के चहुँमुखी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है। परिवर्तन का यह दौर अनवरत चलता रहेगा, लेकिन हर बदलाव सुखद संदेश का वाहक बनकर आए, ऐसी ही कामना है।

प्रश्न 1. 'परिवर्तन यानी बदलाव सृष्टि का शाश्वत नियम है।' ऐसा कहकर गद्यांश में

किस परिवर्तन की बात कही गई है? आज यह बलाव किस रूप में दिखाई दे रहा है? 2

2. शिक्षा के क्षेत्र में हमारा अतीत सम्पन्न रहा है, किंतु बाद में हमारी शिक्षा में गिरावट क्यों आ गई? विचार करके लिखिए। 2

3. पाठशालाएँ बच्चों को लुभाने में कब सफल हो सकती है? 2

4. छोटे-छोटे बच्चे खुशी-खुशी विद्यालय कब जाने लगे? 2

5. हमारी शिक्षा-व्यवस्था में नवीनतम बदलाव को किस नाम से जाना जाता है? यह प्राचीन शिक्षा-व्यवस्था से किस रूप से भिन्न है? 2

6. सिद्ध कीजिए कि नई शिक्षा-व्यवस्था में आया बदलाव बच्चों के चहुँमुखी विकास में सहायक है। 2

7. 'साक्षरता' शब्द से उपसर्ग-प्रत्यय अलग-अलग कीजिए। 1

8. जरूरत, खुशी-खुशी, ज़ोर, काफ़ी आदि शब्द स्रोत या उत्पत्ति के आधार पर क्या कहलाते हैं? 1

9. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

2. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ये पाँच विकार मानव के सबसे बडे शत्रु कहे जाते हैं। ये पग-पग पर उसको नीचा दिखाने का कार्य करते हैं, परंतु अज्ञानता के कारण मनुष्य को ये शत्रु, शत्रु ही प्रतीत नहीं होते और इसी कारण वह इनको अपने से दूर नहीं करना चाहता, पर जो व्यक्ति इन शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है तथा नि:स्वार्थ भाव से समाज के हित की बात सोचता है, उसे संत कहने में किसे आपत्ति हो सकती है। इसमें कुछ भी मिथ्या नहीं कि ऐसा व्यक्ति सच्चे अर्थों में संत कहलाने का अधिकारी हो जाता है। किसी ने कितना सही कहा है- ''संत परिधानों से नहीं, बल्कि आचरण से बना जाता है।'' जिस व्यक्ति को ये विकार प्रभावित नहीं करते, वह संत है और उसका जीवन अपने आप में किसी तप से कम नहीं है। इसके विपरीत जो व्यक्ति उल्लिखित विकारों में से किसी एक विकार से भी ग्रस्त है, तो गेरुए वस्त्र धारण करने मात्र से उसे संत नहीं कहा जा सकता। ऐसा व्यक्ति तो समाज में संत का मुखौटा ओढ़े हुए एक बहुरूपिए के समन होता है। दुर्भाग्य का विषय है कि आज समाज में सच्चे संतों की संख्या कम हो रही है तथा संतों का वेष धारण किए बहुरूपियों की संख्या तेजी के साथ बढ़ रही है। ऐसे लोग बहुत

चतुर होते हैं और धर्मभीरू जनता की कमजोरी का बखूबी फायदा उठाना जानते हैं। वे संत नहीं होते, बल्कि संतों जैसे आचरण का ढ़ोंग रचते हैं और जो भी उनके चंगुल में आ जाता है, उसका सभी प्रकार से शोषण करते हैं। अत: सभी को ऐसे चतुर लोगों से बचकर रहना चाहिए।

प्रश्न 1. मानव के सबसे बड़े शत्रु कौन हैं? ये शत्रु उसे शत्रु क्यों नहीं लगते? विचार करके लिखिए। 2

2. आपके विचार में सच्चा संत कौन हो सकता है? 2

3. 'संत परिधानों से नहीं, बल्कि आचरण से बना जाता है।' उल्लिखित कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

4. गद्यांश में बहुरूपिए के समान किसे बताया गया है? 2

5. भारतीय परिवेश में संतों का वेष धारण किए चतुर बहुरूपिए क्यों सफल हो जाते हैं। 2

6. चतुर लोग भारतीय जनता की किस कमजोरी का फायदा उठाते हैं? 1

7. 'जिस व्यक्ति को ये विकार प्रभावित नहीं करते, वह संत है।' रचना के आधार पर यह वाक्य सरल, संयुक्त या मिश्रित में से किस भेद के अंतर्गत आता है। 1

8. 'आपत्ति' शब्द का विलोम शब्द लिखिए। 1

9. 'उल्लिखित' शब्द से उपसर्ग-प्रत्यय अलग-अलग कीजिए। 1

10. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

3. 'पर्यावरण' शब्द दो शब्दों 'परि' और 'आवरण' के मेल से बना है, जिसका अर्थ है- हमारे चारों ओर का आवरण। वह आवरण जिसमें ऐसे अनेक तत्व निहित हैं, जिनसे जीवन फलता-फूलता है। इन तत्वों का उचित संतुलन पर्यावरण को ऐसा रूप देता है, जिसमें धरती पर उपस्थित जीवधारियों को जीवन के अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त होती हैं, किंतु जब यही संतुलन बिगड़ता है, तब सभी जीवधारियों के लिए परिस्थितियाँ कठिन से कठिनतम होती चली जाती हैं। सच मानिए, जो जीवनदायी तत्वों से भरा हमारा पर्यावरण हमारे प्राणों का आधार है। इसके संतुलन में ही हमारी भलाई है। इसका असंतुलित होना हमारे लिए प्राणघातक है, किंतु इसे मानव-जीवन की विडंबना ही कहा जाएगा कि बुद्धिजीवी होते हुए भी हम मनुष्य शायद ऐसी बातें भूल चुके हैं, तभी तो

पर्यावरण की इस कदर अनदेखी कर रहे हैं कि जैसे उससे हमारे जीवन का कोई वास्ता ही न हो। आज तेजी से घटते वन, पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कटते पहाड़, समुद्र व नदियों की जमीन पर बढ़ता बिल्डरों का शिकंजा, विज्ञान की प्रगति के नाम पर किए जा रहे उचित-अनुचित परीक्षण, वैज्ञानिक आविष्कारों के अनुचित उपयोग, शहर व कारखानों की गंदगी से बेहाल होती नदियों व बढ़ते प्रदूषण ने पर्यावरण का मानो दम घोट दिया है। पर्यावरण कराह रहा है, प्रकृति आक्रोश में है। ग्लोबल वार्मिंग, ग्लेशियरों का पिघलना, मौसम चक्र का अव्यवस्थित होना, बादल फटना, बाढ़, तूफान, भूकंप आदि का आना तथा नित्य नई-नई बीमारियों का बढ़ना प्रकृति के आक्रोश तथा मनुष्य के द्वारा किए जा रहे पर्यावरण की उपेक्षा के ही परिणाम हैं। सोचिए, क्या ऐसा करके मनुष्य अपनी कब्र अपने आप ही तैयार करने में नहीं जुट गया है? ऐसा करके हम अगली पीढ़ी को कैसा पर्यावरण सौंपने जा रहे हैं? क्या हमने इस पर विचार करना छोड़ दिया है? अच्छा होगा कि मनुष्य निजी स्वार्थ को छोड़कर पर्यावरण-संरक्षण का दायित्व निभाए, तभी भावी पीढ़ी उसे उसकी अच्छाईयों के लिए याद करेगी।

प्रश्न 1. पर्यावरण का जीवन के साथ क्या संबंध है? विचार करके लिखिए। 2

2. आपके विचार में धरती पर उपस्थित जीवधारियों को जीवन के अुनकूल तथा प्रतिकूल परिस्थितियाँ कब प्राप्त होती हैं? 2

3. 'जीवनदायी तत्वों से भरा हमारा पर्यावरण हमारे प्राणों का आधार है।' उल्लिखित कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

4. गद्यांश में मानव-जीवन की विडंबना किसे बताया गया है? 2

5. प्रकृति के आक्रोशित होने के कारणों को स्पष्ट कीजिए। 2

6 भावी पीढ़ी आज की पीढी को उसकी अच्छाइयों के लिए कब याद करेगी? 2

7. 'स्वार्थ' शब्द का विलोम शब्द लिखिए। 1

8. 'वैज्ञानिक' शब्द से उपसर्ग-प्रत्यय अलग-अलग कीजिए। 1

9. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र

हिन्दी 'ऐच्छिक'

कक्षा- बारहवीं :

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

नोट : समस्त प्रश्न करने अनिवार्य हैं।

खण्ड - 'क'

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क्रोध दुख के चेतन कारण से साक्षात्कार या अनुमान से उत्पन्न होता है। साक्षात्कार के समय दुख और उसके कारण के संबंध का परिज्ञान आवश्यक है। तीन चार महीने के बच्चे को कोई हाथ उठाकर मार दे, तो उसने हाथ उठाते तो देखा है, पर अपनी पीड़ा और उस हाथ उठाने से क्या संबंध है, यह वह नहीं जानता है। अतः वह केवल रोकर अपना दुख मात्र प्रकट कर देता है। दुख के कारण की स्पष्ट धारणा के बिना क्रोध का उदय नहीं होता है। दुख के संज्ञान कारण पर प्रबल प्रभाव डालने में प्रवृत्त करने वाला मनोविकार होने के कारण क्रोध का आविर्भाव बहुत पहले देखा जाता है। सामाजिक जीवन में क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो, तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों की चिर-निवृत्ति का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट के नित्य दो-चार प्रहार सहता है। यदि उसमें क्रोध का विकास नहीं हुआ है तो वह केवल आह-ऊह करेगा, जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं होगा। उस दुष्ट के हृदय में विवेक, दया आदि उत्पन्न करने में समय लगेगा, संसार किसी को इतना समय ऐसे छोटे-छोटे कामों के लिए नहीं दे सकता। भयभीत होकर प्राणी अपनी रक्षा कभी-कभी कर लेता है। पर समाज में इस प्रकार प्राप्त दुःख-निवृत्ति चिरस्थायिनी नहीं होती। हमारे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि क्रोध के समय क्रोध करने वाले के मन में सदा भावी कष्ट से बचने का उद्देश्य रहा करता है। कहने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि चेतना सृष्टि के भीतर क्रोध का विधान इसलिए है।

जिससे एक बार दुख पहुँचा, पर दुहराए जाने की संभावना कुछ भी नहीं है। जो कष्ट पहुँचाया जाता है वह प्रतिकार मात्र है, उसमें रक्षा की भावना कुछ भी नहीं रहती। अधिकतर क्रोध इसी रूप में देखा जाता है। एक-दूसरे से अपरिचित दो आदमी रेल में चले जा रहे हैं।

इनमें से एक को आगे के स्टेशन पर उतरना है। बात ही बात में एक ने दूसरे को एक तमाचा जड़ दिया और उतरने की तैयारी करने लगा। अब दूसरा मनुष्य भी यदि उसे एक तमाचा लगा दे, तो यह उसका बदला या प्रतिकार कहा जाएगा।

यह कहा जा चुका है कि क्रोध के चेतन कारण के साक्षात्कार या परिज्ञान से होता है। अत: एक तो जहाँ कार्य कारण के सबंध ज्ञान में त्रुटि या भूल होती है वहाँ क्रोध धोखा देता है। दूसरी बार यह है कि क्रोध करने वाला जिस ओर से दु:ख आता है उसी ओर देखता है, अपनी ओर नहीं। जिसने दु:ख पहुँचाया है, उसका नाश हो या उसे दुख पहुँचे कुछ का यही लक्ष्य होता है। न तो वह यह देखता है कि मैंने भी कुछ किया है या नहीं और इस बात का ध्यान रहता कि क्रोध के वेग में जो कुछ करूँगा, उसका परिणाम क्या होगा। यही क्रोध का अंधापन है। क्रोध के प्रेरक दो प्रकार के दु:ख हो सकते हैं- अपना दुख और पराया दुख। जिस क्रोध के त्याग का उपदेश दिया जाता है, वह पहले प्रकार के दुख से उत्पन्न क्रोध है। दूसरे के दु:ख पर उत्पन्न क्रोध बुराई की हद से बाहर समझा जाता है।

(क) सामाजिक जीवन में क्रोध की क्या उपयोगिता है? 2

(ख) क्रोध और दु:ख का परस्पर संबंध स्पष्ट कीजिए। 2

(ग) व्यक्ति किस स्थिति में शुद्ध प्रतिकार करता है। 2

(घ) क्रोध को अंधा क्यों कहा गया है? 2

(ड़) किस प्रकार का क्रोध त्याज्य है और किस प्रकार का क्रोध बुराई की सीमा से बाहर है? 2

(च) परिच्छेद का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 14

(छ) (अ) **निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग व प्रत्यय छाँटकर नए शब्द का निर्माण कीजिए।**

उपसर्ग परिज्ञान

प्रत्यय सामाजिक

(ब) **निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए-**

आविर्भाव निवृत्ति

(ज) (अ) प्रतिकार के दो पर्याय लिखिए। 1

(ब) गद्यांश से विशेषण-विशेष्य के दो प्रयोग छाँटकर लिखिए। 1

प्रश्न 2 : निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

काँधे धरी यह पालकी
है किस कन्हैयालाल की?
नंगे बदन, फेंटा कसे,
बारात किसकी ढ़ो रहे?
किसकी कहारी में फँसे?

यह कर्ज पुश्तैनी, अभी किस्तें हजारों साल की।
काँधे धरी यह पालकी, है किस कन्हैयालाल की?

इस पाँव से उस पाँव पर,
थे पाँव बेवाई फटे।
काँधे धरा किसका महल?
हम नींव पर किसकी डटे?

यह माल ढ़ोते थक गई, तकदीर खच्चर हाल की।
काँधे धरी यह पालकी, है किस कन्हैयालाल की?

फिर एक दिन आँधी चली
ऐसा कि पर्दा उड़ गया।
अंदर न दुल्हन थी न दूल्हा
एक कौवा उड़ गया....

तब भेद आकर यह खुला, हमसे किस ने चाल की
काँधे धरी यह पालकी, लाला अशर्फीलाल की।

(क) काव्यांश के आधार पर पालकी ढ़ोने वालों की गरीबी का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए। 1

(ख) 'खच्चर हाल' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि यहाँ इस शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है? 1

(ग) 'यह कर्ज पुश्तैनी... साल की'' काव्य पंक्ति में समाज की किस कुरीति पर चोट की गई है और क्यों? 1

(घ) क्रांति की आँधी ने, एक दिन कौन-सा भेद खोल दिया? 1

(ङ) 'लाला अशर्फीलाल' और 'पालकी ढ़ोने वाले' समाज के किन वर्गों के प्रतीक हैं। 1

खण्ड 'ख'

प्रश्न 3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए- 10

(क) साहित्यकार की भूमिका

(ख) समाज में दिन-प्रतिदिन बढ़ती अराजकता

(ग) वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा

(घ) पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण

प्रश्न 4. डेंगू और मलेरिया के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए चिकित्सालयों में पर्याप्त सुविधाओं की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए राज्य के स्वास्थ्य मंत्री को पत्र लिखिए। **5**

अथवा

किसी समाचार-पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखिए जिसमें समाज में बढ़ते अपराधों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया हो।

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए- **(1×5=5)**

(क) भारत में प्रथम 'छापाखाना' कब और कहाँ खुला था?

(ख) किन्हीं दो समाचार-पत्रों के नाम बताइए जिनके वेब संस्करण इंटरनेट पर उपलब्ध हैं।

(ग) समाचार लेखन के छह ककार कौन से हैं?

(घ) पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?

(ङ) रेडियो व टेलीविजन की भाषा कैसी होनी चाहिए?

प्रश्न 6. सिद्ध कीजिए कि जनसंचार माध्यम जनता को जागरूक बनाने में अहम् भूमिका निभा रहे हैं। **5**

अथवा

'विशेष लेखन' से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए कि विशिष्ट लेखन के पाठक भी विशेष होते हैं।

खण्ड 'ग'

प्रश्न 7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- **8**

(क) बहुत दिनान को अवधि आसपास परे,
खरे अरबरनि भरे हैं उठि जान को।
कहि कहि आवन छबीले मनभावन को,
गहि गहि राखति ही दै दै, सनमान को।।

झूठी बतियानि की पत्यानि तें उदास ह्वै कै,
अब ना घिरत घन आनंद निदान को।
अधर लगे हैं आनि करि कै पयान प्रान,
चाहत चलन ये संदेसो लै सुजान को।।

अथवा

(ख) मैंने देखा
एक बूँद सहसा
उछली सागर के झाग से
रंग गई क्षणभर
ढलते सूरज की आग से।
मुझ को दीख गया
सूने विराट के सम्मुख
हर आलोक-छुआ अपनापन
है उन्मोचन
नश्वरता के दाग से।

प्रश्न 8. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **(3+3=6)**

(क) सत्य की पहचान हम कैसे करें? **'सत्य'** कविता के सन्दर्भ में स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'रहि चकि चित्रलिखी-सी' पंक्ति का मर्म **'तुलसीदास के पद'** कविता शीर्षक के सन्दर्भ में स्पष्ट कीजिए।

(ग) **'सरोज-स्मृति'** कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 9. किन्हीं दो काव्यांशों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। (3+3=6)

(क) जननी निरखति बान धनुहियाँ
बार-बार उर नैननि लावति प्रभुजू की ललित पनहियाँ।
कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगाबति कहि प्रिय वचन सवारे।

(ख) सुनते हैं मिट्टी में रस है जिससे उगती दूब है।
अपने मन के मैदानों पर व्यापी कैसी ऊब है?

(ग) शताब्दियों से इसी तरह
गंगा के जल में
अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह शहर।

प्रश्न 10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (6)

(क) इसलिए प्रजापति-कवि गंभीर यथार्थवादी होता है, जिससे पाँव वर्तमान की धरती पर हैं और आँखें भविष्य के क्षितिज पर लगी हुई हैं। इसलिए मनुष्य साहित्य में अपने सुख-दु:ख की बात ही नहीं सुनता, वह उसमें आशा का स्वर भी सुनता है। साहित्य थके हुए मनुष्य के लिए विश्रांति ही नहीं है, वह उसे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित भी करता है।

अथवा

जीता है और शान से जीता है- काहे वास्ते, किस उद्देश्य से? कोई नहीं जानता। मगर कुछ बड़ी बात है। स्वार्थ के दायरे से बाहर की बात है। भीष्म पितामह की भाँति अवधूत की भाषा में कह रहा है-'चाहे सुख हो या दुख, प्रिय हो या अप्रिय, जो मिल जाए उसे शान के साथ, हृदय से बिल्कुल अपराजित होकर, सोल्लास ग्रहण करो। हार मत मानो।

प्रश्न 11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए- (4+4=8)

(क) लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए 'घड़ी के पुर्ज़े का दृष्टांत क्यों दिया है?

(ख) संवदिया की क्या विशेषताएँ हैं और गाँव वालों के मन में संवदिया की क्या अवधारणा है?

(ग) 'औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया है, क्यों और कैसे? **'जहाँ कोई वापसी नहीं'** पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 12. 'पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी' अथवा 'भीष्म साहनी' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **(6)**

अथवा

'जयशंकर प्रसाद' अथवा 'विद्यापति' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

प्रश्न 13. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (5+5=10)

(क) धरती का वातावरण गरम क्यों हो रहा है? इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है? टिप्पणी कीजिए। **अपना मालवा** पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

(ख) शैला और भूप ने मिलकर किस तरह पहाड़ पर अपनी मेहनत से नई जिंदगी की कहानी लिखी?

(ग) **'सूरदास की झोपड़ी'** पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि **'यह फूस की राख न थी उसकी अभिलाषाओं की राख थी।'** संदर्भ सहित विवेचना कीजिए।

प्रश्न 14. ''सूरदास दृष्टिहीन एवं गरीब होते हुए भी बेबस और लाचार नहीं था। वह दयालु और आशावादी था।'' तर्क सहित विवेचन कीजिए। **(5)**

अथवा

''गांव शहर की तरह सुविधा-युक्त नहीं होते बल्कि प्रकृति पर अधिक निर्भर रहते हैं।' बिस्कोहर की माटी तथा अपने मौलिक विचारों के आधार पर इस कथन की सत्यता पर प्रकाश डालिए।

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र

हिन्दी 'ऐच्छिक'

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

मधुर वचन वह रसायन है जो पारस की भाँति लोहे को भी सोना बना देता है। मनुष्यों की तो बात ही क्या, पशु-पक्षा भी उसके वश में हो, उसके साथ मित्रवत् व्यवहार करने लगते है। व्यक्ति का मधुर व्यवहार पाषाण-हृदयों को भी पिघला देता है। कहा भी गया है ''तुलसी मीठे वचन ते, जग अपनो करि लेत।''

निस्सन्देह मीठे वचन औषधि की भाँति श्रोता के मन की व्यथा, उसकी पीड़ा व वेदना को हर लेते हैं। मीठे वचन सभा को प्रिय लगते हैं। कभी-कभी किसी मृदुभाषी के मधुर वचन घोर निराशा में डूबे व्यक्ति को आशा की किरण दिखा उसे उबार लेते हैं, उसमें जीवन-संचार कर देते हैं उसे सान्त्वना और सहयोग दे कर यह आश्वासन देते हैं कि वह व्यक्ति अकेला व असहाय नहीं, अपितु सारा समाज उसका अपना है, उसके सुख-दुख का साथी है। किसी ने सच कहा है :

''मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन हैं तीर।''

मधुर वचन श्रोता को ही नहीं, बोलने वाले को भी शांति और सुख देते हैं। बोलने वाले के मन का अहंकार और दंभ सहज ही विनष्ट हो जाता है। उसका मन स्वच्छ और निर्मल बन जाता है। वह अपनी विनम्रता, शिष्टता एवं सदाचार से समाज में यश, प्रतिष्ठा और मान-समान को प्राप्त करता है। उसके कार्यो से उसे ही नहीं, समाज को भी गौरव और यश प्राप्त होता है और समाज का अभ्युत्थान होता है। इसके अभाव में समाज पारस्परिक कलह, ईर्ष्या-द्वेष वैमनस्य आदि का घर बन जाता है। जिस समाज में सौहार्द नहीं, सहानुभूति नहीं, किसी दुखी मन के लिए सान्त्वना का भाव नहीं, वह समाज कैसा? वह तो नरक है।

(क) मधुर वचन निराशा में डूबे व्यक्ति की सहायता कैसे करते हैं? 2

(ख) मधुर वचन को 'औषधि' की संज्ञा क्यों दी गई है? स्पष्ट कीजिए। 2

(ग) मधुर वचन बोलने वाले को क्या लाभ देते हैं? 2

(घ) समाज के अभ्युत्थान में मधुर वचन अपनी भूमिका कैसे निभाते हैं? 2

(ड़) मधुर वचन की तुलना पारस से क्यों की गई है? 1

(च) लेखक ने कैसे समाज को नरक कहा है? 2

(छ) उपर्युक्त गद्यांश को एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ज) विलोम शब्द लिखिए : श्रोता, सम्मान। 1

(झ) उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए : विनम्र, सदाचारी। 1

(ञ) मिश्र वाक्य में बदलिए – बोलने वाले के मन का अहंकार और दंभ सहज ही विनष्ट हो जाता है। 1

प्रश्न 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **(5)**

फूल से बोली कली ''क्यों व्यस्त मुरझाने में है,
फ़ायदा क्या गंध औ' मकरंद बिखराने में है?
तूने अपनी उम्र क्यों वातावरण में घोल दी,
मनमोहक मकरंद की पंखुड़ियाँ क्यों खोल दी।

तू स्वयं को बाँटता है जिस घड़ी से है खिला,
किन्तु इस उपकार के बदले में तुझको क्या मिला?
मुझे देखो मेरी सब खुशबू मुझी में बंद है
मेरी सुन्दरता है अक्षय, अनछुआ मकरंद है।

फूल उस नादान की वाचालता पर चुप रहा,
फिर स्वयं को देखकर भोली कली से ये कहा
जिन्दगी सिद्धांत की सीमाओं में बँटती नहीं,
ये वो पूँजी है जो व्यय से बढ़ती है, घटती नहीं।

चार दिन की जिन्दगी खुद को जिए तो क्या जिए?
बात तो तब है कि जब मर जाएँ औरों के लिए,
प्यार के व्यापार का क्रम अन्यथा होता नहीं,
वह कभी पाता नहीं है जो कभी खोता नहीं।

(क) कली की दृष्टि से फूल के कौन-से काम व्यर्थ हैं ?

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए – 'तू स्वयं को बाँटता है।'

(ग) फूल ने कली को नादान और भोली क्यों समझा ?

(घ) ''चार दिन की जिन्दगी खुद को जिए तो क्या जिए'' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ड़) प्रस्तुत काव्यांश के माध्यम से कवि हमें क्या जीवन-संदेश देना चाहता है ?

खंड-ख

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : **(10)**

(क) मेरे सपनों का भारत

(ख) सुरक्षित क्यों नहीं हैं महिलाएँ

(ग) स्वास्थ्य सबसे बड़ी पूँजी

(घ) मोबाइल बिना सब लगे सूना।

प्रश्न 4. किसी दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक के नाम पत्र लिखिए जिसमें वृक्षों की कटाई रोकने के लिए सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया हो। **(5)**

अथवा

कल्पना कीजिए कि आपने बारहवीं कक्षा के पश्चात् हिंदी कम्प्यूटर का 'कोर्स' कर उसमें दक्षता प्राप्त कर ली है। दिल्ली नगर निगम के प्राथमिक विद्यालयों में हिन्दी कम्प्यूटर शिक्षकों के कई पद रिक्त हैं। आप शिक्षा अधिकारी को स्व-वृत्त सहित अपना आवेदन-पत्र लिखिए।

प्रश्न 5. हमारे दैनिक जीवन में मुद्रित माध्यमों का महत्त्व स्पष्ट करते हुए उनकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **(5)**

अथवा

'जातिवाद का ज़हर' अथवा 'बाल श्रमिकों की समस्या' विषय पर एक आलेख लिखिए।

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए : **(1×5=5)**

(क) समाचार-लेखन के 'छह ककार' कौन से हैं?

(ख) समाचार किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

(ग) स्तंभ लेखन क्या होता है? समझाइए।

(घ) वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरु करने का श्रेय किसे दिया जाता है?

(ङ) उलटा पिरामिड-शैली से क्या तात्पर्य है।

प्रश्न 7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **(8)**

चढ़कर मेरे जीवन-रथ पर,
प्रलय चल रहा अपने पथ पर।
मैंने निज दुर्बल पद-बल पर,
उससे हारी-होड़ लगाई।।

लौटा लो यह अपनी थाती
मेरी करुणा हा-हा खाती
विश्व! न सँभलेगी यह मुझ से
इससे मन की लाज गँवाई।

अथवा

चकई निसि बिछुरैं दिन मिला। हौं निसि बसर बिरह कोकिला।
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी। कैसें जिऔं बिछोही पँखी।।
विरह सैंचान भँवै तन चाँड़ा।। जीयत खाइ मुएँ नहीं छाँड़ा।।

रकत ढरा माँसू गरा हाड़ भए सब संख।
धनि सारस होई ररि मुई आइ समेटहु पंख।।

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **(3+3=6)**

(क) 'कार्नेलिया का गीत' के आधार पर भारत की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विशेषताओं पर टिप्पणी कीजिए।

(ख) 'गीत गाने दो मुझे' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

(ग) घनानंद के सवैये के आधार पर 'हियो हितपत्र' की विशेषताएँ लिखिए। उसके साथ प्रियतमा ने क्या व्यवहार किया?

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो काव्यांशों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। **(3+3=6)**

(क) कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि मूँदि रहए दु नयान।
कोकिल कलरव, मधुकर धुनि सुनिं, कर देइ झाँपइ कान।।

(ख) यह मधु है - स्वयं काल की मौना का युग-संचय,
यह गोरस-जीवन-कामधेनु का अमृत-पूत पय।

(ग) इस पथ पर मेरे कार्य सकल
हों भ्रष्ट शीत के-से शतदल!
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण।

प्रश्न 10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **(6)**

ज़रा-सी आहट पाते ही वे एक साथ सिर उठा कर चौंकी हुई निगाहों से हमें देखती हैं-बिलकुल उन युवा हिरणियों की तरह, जिन्हें मैंने एक बार कान्हा के वन्य-स्थल में देखा था। किन्तु वे डरती नहीं, भागती नहीं, सिर्फ विस्मय से मुस्कुराती हैं और फिर सिर झुकाकर अपने काम में डूब जाती हैं-यह समूचा दृश्य इतना साफ और सजीव है - अपनी स्वच्छ मांसलता में इतना संपूर्ण और शाश्वत-कि एक क्षण के लिए विश्वास नहीं होता कि आने वाले वर्षों में सब कुछ मटियामेट हो जाएगा - झोंपड़े, खेत, ढ़ोर, आम के पेड़ - सब।

अथवा

मैं तो केवल निमित्त मात्र था। अरुण के पीछे सूर्य था। मैंने पुत्र को जन्म दिया? उसका लालन-पालन किया। बड़ा हो जाने पर उसके रहने के लिए विशाल भवन बनवा दिया, उसमें उसका गृह-प्रवेश करा दिया, उसके संरक्षण एवं परविर्धन के लिए एक सुयोग्य अभिभावक डॉ. सतीश चंद्र काला को नियुक्त कर दिया और फिर मैंने संन्यास ले लिया।

प्रश्न 11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए। **(4+4=8)**

(क) 'प्रेमघन की छाया-स्मृति' पाठ में लेखक ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व के किन-किन पहलुओं को उजागर किया है?

(ख) 'चंद्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी को अपना कर्त्तव्य पालन करना ही पड़ता है।'' –'कच्चा चिट्ठा' आत्मकथा में लेखक ने यह वाक्य किस सन्दर्भ में कहा और क्यों?

(ग) संवदिया की क्या विशेषताएँ हैं? वह बड़ी बहुरिया का संवाद क्यों नहीं सुन सका?

प्रश्न 12. कवि तुलसीदास अथवा केदारनाथ सिंह के जीवन, रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **(6)**

अथवा

फणीश्वरनाथ रेणु अथवा भीष्म अथवा साहनी के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा शैली का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 13. 'तो हम सौ लाख बार बनाएँगे' – इस कथन के आलोक में सूरदास के उन जीवन–मूल्यों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए जिनसे वह ईर्ष्या, अपमान, प्रतिशोध जैसी भावनाओं पर नियंत्रण रख सका।

अथवा

'प्रकृति सजीव नारी बन गई', 'बिस्कोहर की माटी' के इस कथन के आलोक में प्रकृति, नारी और सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 14. (क) प्राकृतिक आपदाओं से जूझने में पहाड़ पर रहने वाले लोगों के संघर्ष पर 'आरोहण' कहानी के आधार पर प्रकाश डालिए। **(5)**

(ख) 'हमारी वर्तमान सभ्यता नदियों को गंदे पानी के नाले बना रही हैं' – क्यों और कैसे? इस दिशा में क्या किया जा सकता है? स्पष्ट कीजिए। **(5)**

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र (सैट नं. 3)

हिन्दी 'ऐच्छिक'

कक्षा- बारहवीं : 2016-17

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

सामान्य निर्देश :

इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

विद्यार्थी यथासंभव अपने शब्दों में उत्तर लिखें।

खंड-'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

यह सत्य है कि दोनों पक्षों के वीर इस युद्ध को धर्मयुद्ध मानकर लड़ रहे थे, किंतु धर्म पर दोनों में से कोई भी अडिग नहीं रह सका। 'लक्ष्य प्राप्त हो या न हो, किंतु हम कुमार्ग पर पाँव नहीं रखेंगे'- इस निष्ठा की अवहेलना दोनों ओर से हुई और दोनों पक्षों के सामने साध्य प्रमुख और साधन गौण हो गया। अभिमन्यु की हत्या पाप से की गई तो भीष्म, द्रोण, भूरिश्रवा और स्वयं दुर्योधन का वध भी धर्म सम्मत नहीं कहा जा सकता। जिस युद्ध में भीष्म, द्रोण और श्रीकृष्ण विद्यमान हों, उस युद्ध में भी धर्म का पालन नहीं हो सके, इससे तो यही निष्कर्ष निकलता है कि युद्ध कभी भी धर्म के पथ पर रहकर लड़ा नहीं जा सकता। हिंसा का आदि भी अधर्म है, मध्य भी अधर्म है और अंत भी अधर्म है। जिसकी आँखों पर लोभ की पट्टी नहीं बँधी है, जो क्रोध और आवेश अथवा स्वार्थ में अपने कर्त्तव्य को भूल नहीं गया है, जिसकी आँख साधना की अनिवार्यता से हट कर साध्य पर ही केंद्रित नहीं हो गई है, वह युद्ध जैसे मलिन कर्म में कभी भी प्रवृत्त नहीं होगा। युद्ध में प्रवृत्त होना ही इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य अपने रागों का दास बन गया है, फिर जो रागों की दासता करता है, वह उनका नियंत्रण कैसे करेगा।

अगर यह कहिए कि विजय के लिए युद्ध अवश्यंभावी है तो विजय को मैं कोई बड़ा ध्येय नहीं मानता। जिस ध्येय की प्राप्ति धर्म के मार्ग से नहीं की जा सकती, वह या तो बड़ा

ध्येय नहीं है अथवा अगर है तो फिर उसे पाप के मार्ग से पाने का प्रयास व्यर्थ है। संग्राम के कोलाहल में चाहे कुछ भी सुनाई नहीं पड़ा हो, किन्तु आज मैं अपनी आत्मा की इस पुकार को स्पष्ट सुन रहा हूँ कि युधिष्ठिर ! तुम जो चाहते थे वह वस्तु तुम्हें नहीं मिली।

संग्राम तो जैसे-तैसे समाप्त हो गया किन्तु उससे देश भर में हिंसा की जो मानसिकता फैली, उसका क्या होगा? क्या लोग हिंसा के खेल को दुहराते जाएँगे अथवा यह विचार कर शांति से काम लेंगे कि शत्रुओं का भी मस्तक उतारना बर्बरता और जंगलीपन का काम है।

(क) कौरवों और पांडवों ने महाभारत युद्ध को धर्मयुद्ध क्यों माना? दोनों पक्षों में किस निष्ठा की बात कही गई थी?

(ख) मलिन कर्म से क्या आशय है? युद्ध को मलिन कर्म क्यों माना गया है?

(ग) युद्ध में प्रवृत्ति रखने वाले लोगों की क्या पहचान बताई गई है?

(घ) हिंसा का आदि, मध्य और अंत अधर्म क्यों माना गया है?

(ड़) साध्य और साधन से आप क्या समझते हैं? कैसे कहा जा सकता है कि महाभारत युद्ध में साध्य प्रमुख और साधन गौण हो गए?

(च) आपके विचार में गद्यांश से विश्वशांति के लिए क्या संदेश उभरता है? स्पष्ट कीजिए।

(छ) "युद्ध कभी भी धर्म के पथ पर रहकर लड़ा नहीं जा सकता है।"- पक्ष या विपक्ष में दो तर्क प्रस्तुत कीजिए।

(ज) प्रस्तुत गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

खोल सीना, बाँधकर मुट्ठी कड़ी
मैं खड़ा ललकारता हूँ।
ओ नियति !
तू सुन रही है?
मैं खड़ा तुझको स्वयं ललकारता हूँ
आज खोले वक्ष, उन्नत शीश, रक्तिम नेत्र
तुझको दे रहा हूँ, ले चुनौती
गगनभेदी घोष में
दृढ़ बाहुदंडों को उठाए।

क्योंकि मैने आज पाया है स्वयं का ज्ञान
क्योंकि मैं पहचान पाया हूँ कि मैं हूँ मुक्त, बंधनहीन
और तू है मात्र भ्रम, मन-जात, मिथ्या वंचना,
इसलिए इस ज्ञान के आलोक के पल में
मिल गया है आज मुझको सत्य का आभास
और ओ मेरी नियति!

मैं छोड़कर पूजा
(क्योंकि पूजा है पराजय का विनत स्वीकार-)
बाँधकर मुट्ठी तुझे ललकारता हूँ
सुन रही है तू?
मैं खड़ा तुझको ललकारता हूँ।

(क) कवि किसे ललकार रहा है? और क्यों?

(ख) कवि की चुनौती देने वाली मुद्रा पर टिप्पणी लिखिए।

(ग) कवि ने नियति को भ्रम और मिथ्या वंचना क्यों कहा है?

(घ) कवि ने अपनी पहचान क्या बताई है?

(ड़) भाव स्पष्ट कीजिए-''पूजा है पराजय का विनत स्वीकार''।

खंड-'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए।

(क) प्रगति पथ पर अग्रसर भारत

(ख) खेलों का जीवन में महत्व

(ग) राष्ट्र निर्माण में युवावर्ग का योगदान

(घ) राजनीति और भ्रष्टाचार

4. विद्यालय स्तर पर सैनिक शिक्षा को अनिवार्य किए जाने के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए अपने राज्य के शिक्षा सचिव को पत्र लिखकर + 2 स्तर के सभी विद्यार्थियों के लिए सैनिक शिक्षा अनिवार्य करने का अनुरोध कीजिए।

अथवा

आधुनिक युग में विज्ञान शिक्षा का महत्व प्रतिपादित करते हुए किसी प्रतिष्ठित पत्र के संपादक को पत्र लिखिए और विज्ञान शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए दो सुझाव भी दीजिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में लिखिए : **(1×5=5)**

(क) संचार किसे कहते हैं?

(ख) चौथा खंभा किसे कहा जाता है? क्यों?

(ग) समाचार के किन्हीं दो तत्वों का उल्लेख कीजिए।

(घ) पत्रकार की बैसाखियों से आप क्या समझते हैं?

(ड़) खोजपरक पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?

6. 'प्रतिस्पर्धा के कारण विद्यार्थियों में बढ़ता मानसिक तनाव' विषय पर एक आलेख लिखिए। **(5)**

अथवा

''बस्ती-बस्ती में रामलीला की धूम'' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए।

खंड-'ग'

7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **(8)**

जननी निखरित बान धनुहियाँ।
बान-बार उर नैननि लावति प्रभुजू की ललित पनहियाँ।।
कबहुँ प्रथम ज्यों जाई जगावति कहि प्रिय वचन सवारे
''उठहु तात ! बलि मातु बदन पर, अनुज सखा सब द्वारे ।।''
कबहुँ कहति यों, ''बड़ी बार भइ जाहू भूप पहँ, भैया ।
बंधु बोलि जेंइय जो भावै गई निछावरि मैया ।''

अथवा

जो है वह खड़ा है
बिना किसी स्तंभ के
जो नहीं है उसे थामे हैं
राख और रोशनी के उँचे-उँचे स्तंभ
आग के स्तंभ
धुएँ के
खुशबू के
आदमी के उठे हुए हाथों के स्तंभ
किसी अलक्षित सूर्य को
देता हुआ अर्घ्य
शताब्दियों से इसी तरह
गंगाा के जल में
अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह शहर
अपनी दूसरी टाँग से
बिलकुल बेखबर !

8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (3+3=6)

(क) ''दुख ही जीवन की कथा रहीं''- पंक्ति में निहित 'निराला' की वेदना पर प्रकाश डालिए।

(ख) 'यह दीप, अकेला, स्नेह-भरा' के आधार पर बताइए कि व्यष्टि का समष्टि में विलय क्यों और कैसे संभव है?

(ग) घनानंद के सवैये के आधार 'हियो हितपत्र' की विशेषताएँ लिखिए और बताइए कि उसके साथ प्रियतमा ने क्या व्यवहार किया ?

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो काव्यांशों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

(क) उँचे तरूवर से गिरे **(3+3=6)**
बड़े-बड़े पियराए पत्ते
कोई छह बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो-
खिली हुई हवा आई, फिरकी-सी आई, चली गई ।

(ख) हेम कुंभ ले उषा सवेरे-भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊँघते रहते जब-जगकर रजनी भर तारा।।

(ग) यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाऊ।
मकु तेहि मारग होइ परौं कंत धरैं जहँ पाउ।।

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: **(6)**

साहित्य का पांचजन्य समरभूमि में उदासीनता का राग नहीं सुनाता । वह मनुष्य को भाग्य के आसरे बैठने और पिंजड़े में पंख फड़फडाने की प्रेरणा नहीं देता । इस तरह की प्रेरणा देने वालों के वह पंख कतर देता है। वह कायरों और पराभव-प्रेमियों को ललकारता हुआ एक बार उन्हें भी समरभूमि में उतरने के लिए बुलावा देता है।

अथवा

स्नान से ज्यादा समय ध्यान ले रहा था। दूर जलधारा के बीच एक आदमी सूर्य की ओर उन्मुख हाथ जोड़े खड़ा था। उसके चेहरे पर इतना विभोर, विनीत भाव था मानो अपना सारा अहम त्याग दिया है। उसके अन्दर 'स्व' से जनित कोई कुंठा शेष नहीं है, वह शुद्ध रूप से चेतनस्वरूप, आत्माराम और निर्मलानंद है ।

11. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: **(4+4=8)**

(क) ''दुख और सुख तो मन के विकल्प है''- कथन का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि कुटज कैसे इन दोनों से अप्रभावित रहता है ।

(ख) हरगोबिन द्वारा बड़ी बहुरिया का संवाद न सुना पाने के पीछे निहित कारणों पर प्रकाश डाजिए ।

(ग) ''आधुनिक औद्योगीकरण की आँधी में सिर्फ मनुष्य ही नहीं उखड़ता, बल्कि उसका परिवेश, संस्कृति और आवास-स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते हैं।'' 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ के आधार पर उपर्युक्त कथन की समीक्षा कीजिए ।

12. असगर वजाहत **अथवा** ब्रजमोहन व्यास के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए उनकी भाषाशैली की दो प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। **(6)**

अथवा

विष्णु खरे **अथवा** केशवदास के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

13. 'सूरदास प्रतिशोध की अपेक्षा क्षमा में विश्वास रखता था ।' – इस कथन के आलोक में 'सूरदास' कहानी में निहित जीवन–मूल्यों की समीक्षा कीजिए। **(5)**

अथवा

''भूपसिंह के जीवन–मूल्य हमारे लिए भी प्रेरणा–स्त्रोत है'' – 'आरोहण' पाठ के आधार पर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

14. (क) सूरदास के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **(5)**

(ख) 'आरोहण' कहानी के आधार पर सिद्ध कीजिए कि पहाड़ों का जीवन अत्यन्त कठिन है। **(5)**

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र

सैट-3 (हल सहित)

हिन्दी 'ऐच्छिक'

कक्षा- बारहवीं : 2016-17

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:-

(क) कौरवों और पांडवों ने महाभारत युद्ध को धर्मयुद्ध क्यों माना ?

दोनों पक्षों में किस निष्ठा की बात कही गई थी ?

उत्तर: कौरवों और पांड़वों ने न्याय और अधिकार को प्राप्त करने के लिए महाभारत के युद्ध को धर्मयुद्ध माना । दोनों पक्षों में इस निष्ठा की बात कहीं थी कि ''लक्ष्य प्राप्त हो या ना हो, किंतु हम कुमार्ग पर पाँव नहीं रखेंगे ।''

(ख) मलिन कर्म से क्या आशय है? युद्ध को मलिन कर्म क्यों माना गया है?

उत्तर: मलिन कर्म से आशय है, अधर्म तथा हिंसात्मक रूप से लड़ा गया युद्ध । युद्ध को मलिन कर्म इसलिए माना गया है, क्योंकि यह युद्ध धर्म तथा नियम को ध्यान में रखकर नहीं लड़ा गया था।

(ग) युद्ध में प्रवृत्ति रखने वाले लोगों की क्या पहचान बताई गई है?

उत्तर: युद्ध में प्रवृत्ति रखने वाले लोग क्रोध, लोभ, रोगों और स्वार्थो के दास होते हैं। और यही पहचान भी बताई गई है।

(घ) हिंसा का आदि, मध्य और अंत अधर्म क्यों माना गया है?

उत्तर: युद्ध का अर्थ हमेशा हिंसा, छल, कपट, पाप ही होता है। अत: युद्ध कभी भी धर्म पर रहकर नहीं लड़ा जा सकता है। इसीलिए इसे अधर्म माना गया है।

(ड़) साध्य और साधन से आप क्या समझते है? कैसे कहा जा सकता है, कि महाभारत युद्ध में साध्य प्रमुख और साधन गौण हो गए ?

उत्तरः साध्य का अर्थ होता है, लक्ष्य एवम् साधन लक्ष्य को प्राप्त करने का माध्यम होता है। इस युद्ध में दोनों पक्षों के लिए विजयी होना साध्य था। और राज्य प्राप्ति की महत्वाकाक्षां थी। और उसके लिए दोनों पक्षों ने अधर्म, छल, कपट का सहारा लिया, युद्ध के नियम तोड़े थे। अतः इस युद्ध में साध्य प्रमुख था।

(च) आपके विचार में गद्यांश से विश्वशांति के लिए क्या संदेश उभरता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः महाभारत के युद्ध के परिणाम से विश्व को यह सीख लेनी चाहिए कि यदि विश्व में शांति चाहिए तो युद्ध को नज़र अंदाज करना होना और शांति एवम् आपसी सहमति से समस्याओं का हल खोजना होगा।

(छ) ''युद्ध कभी भी धर्म के पथ पर रहकर लड़ा नहीं जा सकता है।'' –पक्ष या विपक्ष में दो तर्क प्रस्तुत कीजिए।

इस वाक्य के आधार पर निम्न तर्क प्रस्तुत किए जा सकते है:–

पक्ष में तर्क :

1. युद्ध का केवल एकमात्र लक्ष्य जीतना होता है। चाहे जैसे भी प्राप्त हो।
2. किसी भी नीति पर चलकर, कोई भी मार्ग अपनाकर केवल विजयी होना चाहिए।

विपक्ष :

1. प्रेम भाईचारे, आपसी सहमति द्वारा युद्ध को टाला जा सकता है।
2. युद्ध को युद्ध के परिणाम जाने बिना नहीं लड़ना चाहिए अर्थात् युद्ध के भंयकर दुष्परिणामों के प्रति भी सचेत रहना चाहिए।

(ज) शीर्षक :–

- विश्वशांति और युद्ध
- धर्म और शांति का महत्व

प्रश्न 2. काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) कवि किसे ललकार रहा है? और क्यों?

उत्तरः कवि भाग्य को ललकार रहा है। कवि भाग्यवादियों को यह संदेश दे रहा है, कि अपने भाग्य निर्माता स्वयं बनो।

(ख) कवि की चुनौती देने वाली मुद्रा की टिप्पणी कीजिए।

उत्तरः कवि ने खुले वक्ष, उन्नत, शीश, रक्तिम नेत्र और दृढ़ बाहुदंड से वीरता और ओजपूर्ण रूप में भाग्य को चुनौती दी है।

(ग) कवि ने नियति को भ्रम और मिथ्या वंचना क्यों कहा है?

उत्तरः कवि ने कहा है, कि वह नियति या भाग्य का दास नहीं है, वह अपने बल पर अर्थात् आत्मबल पर विश्वास करता है। भाग्य के भरोसे कुछ नहीं बदला जा सकता है, अतः वह भ्रम और मिथ्या वंचना है।

(घ) कवि ने अपनी पहचान क्या बताई है।

उत्तरः कवि अपने को कर्मवादी, परिश्रम करने वाला बताता है।

(ड़) भाव स्पष्ट कीजिए :–''पूजा है पराजय का विनत स्वीकार''।

उत्तरः पूजा को कवि ने झुकना, कमजोरी का प्रतीक बताया है।

जीवन मे खेलों का महत्व

1. **प्रस्तावना** –

   पढ़ोगे, लिखोगे, होंगे कामयाब,
   खेलोगे, कूदोगे, बनोगे नवाब।।

   सचमुच आज लोग खेलों के माध्यम से नवाबों, राजाओं के समकक्ष या बराबर पदवियों को धारण कर रहे हैं।

   खेल हमें स्वस्थ तो बनाते ही हैं, साथ ही नाम, धन, और प्रसिद्धि भी दिलाते है। भारत मे शायद ही कोई होगा जो विराट कोहली, सचिन तेंदूलकर, सानिया मिर्जा, सानिया नेहवाल आदि से परिचित ना हो। उपरोक्त सभी खिलड़ियों के नाम समूचे विश्व में आदर के साथ लिये जाते हैं।

2. **प्रमुख खेल और खिलाड़ी :** भारत में विभिन्न प्रकार के खेल खेले जाते है उसमे कुछ खेल और उसके प्रसिद्ध खिलाड़ी निम्न हैं–

(1) हॉकी - धनराज पिल्लै, मेज़र ध्यान चंद

(2) क्रिकेट - सौरव गाँगूली, विराट कोहली

(3) लॉन टेनिस - सानिया मिर्जा

(4) कुश्ती - सुशील कुमार

(5) निशानेबाजी - राज्यवर्धन सिंह राठौर, अभिनव बिन्द्रा, जसपाल राणा

(6) भारोत्तोलन - कर्णम मल्लेश्वरी इत्यादि।

(3) **खेलों से लाभ**-

1. **स्वास्थ्य :** खेलने-कूदने से व्यक्ति स्वस्थ और दिर्घायु होता है। नियमित व्यायाम के कारण सामान्यत: व्यक्ति बिमार नहीं होता।

2. **धन :** वर्तमान खेलों मे मैच फीस के साथ-साथ प्रायोजको एवं विज्ञापनों के द्वारा मोटी धनराशि प्राप्त होती है। आज लगभग हर खेल मे ढेरो पैसा है। विश्व के कई प्रमुख खिलाड़ी संसार के बड़े अमीरों में शामिल हैं।

3. **पुरस्कार :** खेलों के माध्यम से व्यक्ति को विभिन्न पुरस्कार भी प्राप्त होते हैं। भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान सचिन तेंदूलकर को खेलों की बदौलत ही मिला। (भारत रत्न)

4. **प्रतिष्ठा :** खेलों के द्वारा खिलाड़ियों को समाज में प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। लोग खिलाड़ियों को सिर आँखों पर चढ़ाकर रखते हैं।

5. **पद :** खेल रोजगार दिलाने मे भी सहायक होते हैं। विभिन्न सरकारी उपक्रमो में खिलाड़ियों के लिए स्थान आरक्षित होते हैं। बड़ी कम्पनियां अपना गौरव बढ़ाने के लिए बड़े खिलाड़ियों को अपने कार्यालय में स्थान देती हैं।

6. **भ्रमण :** खिलाड़ी के तौर पर समूचा विश्व आपको धूमने को मिल जाता है, जो सामान्य लोगों के लिए कठिन है।

7. **समाज सेवा :** खिलाड़ी के तौर पर समाज में अपकी अलग पहचान होती है। यह पहचान लोगों को आपकी बात सुनने एवं मानने को बाध्य करती है जो समाज मे आपका गौरव भी बढ़ाती है।

नकारात्मक प्रभाव : मोटे तौर पर खेलों का कोई खास नकारात्मक प्रभाव नहीं है

1. **क्रिकेट की बाढ़ :** भारत में हर दूसरा आदमी क्रिकेट ही खेलता है जो गलत है अन्य ढ़ेर सारे खेल है लोगों को उसमें भी भाग लेना चाहिए और अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिए।

2. **दुर्घटनाएँ :** यदा-कदा खेलों में दुर्घटना के कारण मृत्यु भी हो जाती है। चोट इत्यादि तो सामान्य तौर पर लगती ही रहती है।

3. **कम लोगों को सफलता :** एक साथ कई खिलाड़ी खेल रहे होते हैं परन्तु धन, पद और प्रतिष्ठा कम लोगों को ही प्राप्त होती है।

4. **संसाधनों की कमी :** भारतीय खेलों एवं प्राधिकरणों में संसाधनों की कमी का रोना-रोया जाता है जो खेलो के विकास में बाधक है।

उपसंहार/निष्कर्ष - निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि यदि व्यक्ति लगन से खेले और अपना श्रेष्ठ देने का प्रयास करे तो खेल समाज में उसे सफलता का वो शिखर दिला सकता है जो बहुत लोगों के लिए स्वप्न के समान है।

प्रश्न 4. पत्र लेखन :

सेवा में,

राज्य शिक्षा सचिव,

दिल्ली।

विषय : विद्यालय स्तर पर सैनिक शिक्षा को अनिवार्य करने के अनुरोध हेतु पत्र।

महोदय/महोदया जी,

निवेदन यह है कि आज के आधुनिक युग मे जहाँ चारों और मानव विकास चाहता है। और ये विकास चाहे उसे प्राकृतिक असंतुलन द्वारा प्राप्त हो या वैज्ञानिक खोज करके। मानव इन सभी के द्वारा आधुनिक सुविधा सम्पन्न तो बनता जा रहा है। परन्तु इसका परिणाम यह हुआ है, कि आज दुनिया के सभी देशों में एक-दूसरे से होढ़ लगी हुई है। जिससे देश की आन्तरिक और बाह्य सीमा पर रोज एक नई समस्या मुहँ बाय खड़ी है। अत: उससे निपटने के लिए हमें तैयार भी रहना होगा। देश की सुरक्षा एक सैनिक करता है। वह सीमा पर होता है, ऐसे में आम नागरिक के भी अपने देश के प्रति कुछ कर्त्तव्य है। और इन देश के कर्त्तव्य बोध को जगाने का एक रास्ता यह भी है, कि शुरू से ही नागरिकों के मन में इस बोध को

जगाया जाए विद्यालय स्तर पर यदि सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जाएगी तो उनमें एक जिम्मेदारी का भाव आएगा। वे सैनिकों के त्याग, बलिदान को समझ पाएगें। देश में आई किसी भी संकटकालीन स्थिति से निपट पाने में सरकार व आम नागरिकों को सहायता करेगें।

अत: मेरा आपसे अनुरोध है, कि आप उच्च माध्यमिक स्तर पर सैनिक शिक्षा अनिवार्य करने के बारें में विचार करेगें, जिससे देश को उच्च कोटि के देशभक्त व सैनिक प्राप्त हो सकेगें।

सधन्यवाद

परीक्षा भवन

क.ख.ग।

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :-

(क) संचार किसे कहते है?

उत्तर: दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा विचारों, सूचनाओं का विभिन्न माध्यमों द्वारा आदान-प्रदान संचार कहलाता है।

(ख) चौथा खंभा किसे कहा जाता है?

उत्तर: मीडिया या पत्रकारिता को चौथा स्तंभ कहा जाता है, क्योंकि मीडिया समस्याओं और उसके समाधानों से सभी को परिचित कराती है। यह देश दुनिया में पहरेदार का कार्य करता है।

(ग) समाचार के किन्हीं दो तत्वों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: समाचार में **नवीनता, जनरूचि** और जनता पर **प्रभाव** डालने की क्षमता होती है।

(घ) पत्रकार की बैसाखियों से आप क्या समझते है?

उत्तर: पत्रकारों का यह कर्त्तव्य होता है कि उसके द्वारा प्रस्तुत खबरों मे तथ्यपरक सच्चाई, विश्वसनीयता, निष्पक्षता, स्पष्टता हो।

(ड़) खोजपरक पत्रकारिता से आप क्या समझते है?

उत्तर: जिस खबर को गहरी छानबीन करके जनता के समाने लाने का प्रयास किया जाता है।

प्रश्न 6. 'बस्ती-बस्ती में रामलीला की धूम' विषय पर फ्रीचर।

उत्तर: भारत विविध संस्कृतियो और त्योहारों का देश है। यहाँ सभी त्योहार बड़े ही उल्लास और धूम-धाम से मनाये जाते है। प्रत्येक त्योहार की तैयारी उसके आने से पहले ही शुरू हो जाती है। ऐसे ही यहाँ अक्टूबर-नवम्बर की महीने में बस्ती-बस्ती रामलीला भी मनाई जाती है। दशहरे से 10 दिन पहले अलग-2 स्थानों पर रामलीला का आयोजन किया जाता है। इसका हिन्दू धर्म में अपना महत्व है। सभी जानते है कि राम को 14 वर्ष का वनवास मिला था। और रावण द्वारा सीता का हरण और फिर राम द्वारा रावण का विनाश यह कथा सभी बच्चे-बूढ़े सभी को पता रहती है।दशहरा अधर्म पर धर्म की जीत का प्रतीक है। जो अधर्म के मार्ग पर चलेगा उसका रावण जैसा ही हाल होगा। अत: प्राचीन काल से यह प्रथा चली आ रही है और इस कथा का नाट्य रूप में मंचन होता है। समय के साथ इसके रूप में भी बदलाव आया है। परन्तु प्रत्येक काल में रामलीला धार्मिक महत्व के साथ मनोरंजन का माध्यम भी रही है। इस समय विद्यालयों, कॉलेजों में सत्रीय परीक्षा के बाद 10 दिन का सत्रीय अवकाश हो जाता है। बच्चे सबसे ज्यादा उत्साहित होते है रामलीला देखने को। जगह-2 मैदानों में मेला व रामलीला का मंचन होता है। जिसमें 10 दिन के भीतर राम के जीवन की पूरी झाँकी को दिखाया और बताया जाता है।

प्रसंग सहित व्याख्या

प्रश्न 7. जननी निरखति बान.....निछावरि मैया।

प्रसंग - कवि - गोस्वामी तुलसीदास

कविता - गीतावली

संदर्भ : तुलसीदास ने माता कौशल्या के पुत्र वियोग का मार्मिक वर्णन किया है। राम के वन में जाने के बाद माता कौशल्या की क्या दशा हो गई है, इसे इस पद के माध्यम से बताया गया है।

व्याख्या : माता कौशल्या राम के वन में जाने के बाद उनकी वस्तुओं जैसे धनुष बाण को देखती है, कभी वे उनकी छोटी-छोटी सुन्दर-सुन्दर जूतियों को निहारती है, तो कभी उन्हें वे अपनी आँखों और अपने हृदय से लगा लेती है। कभी-कभी तो वे बिल्कुल भूल जाती हैं। कि राम अब यहाँ नहीं हैं, और वे उन्हें पहले की ही भांति मीठे-मीठे बोल बोलकर नींद से जगाती हैं, कि हे। पुत्र जागो तुम्हारे मित्र और सभी भाई द्वारा पर खेलने के लिए तुम्हारी

प्रतिक्षा कर रहे हैं। माँ तुम्हारे ऐसे चन्द्रमा के समान मुँख पर बलिहारी हुए जाती है। कभी वे कहती है कि बहुत देर हो गई सोते हुए अब उढ़ो, और महाराज के पास जाओं। मैंने तुम्हारी पसंद के सभी व्यंजन पकाए है, अपने साथियों और भाइयों को बुला लाओं, तुम सभी को खाता देख मुझे बहुत खुशी होगी। परन्तु जैसे ही माँ को याद आता है, कि राम तो वन में चले गए है, तो वह मूर्ति के जैसे एक चित्र के तरह ही रह जाती हैं। तुलसीदास माता की उस समय की स्थिति के बारे में बताते है जब राम उनके पास ही थे, तब वे एक मोरनी की भांति प्रसन्नचित होकर राम के आगे-पीछे घूमती रहती थी।

काव्य सौन्दर्य :

1. माता के वात्सल्य प्रेम का वर्णन है।
2. 'चित्र लिखि से' उपमा अंलकार
3. ब्रज, अवधी मिश्रित भाषा
4. छंदयुक्त, गेयता, संगीतात्मक व लयबद्ध रचना
5. गुण - माधुर्य
6. रस - करूण, वात्सल्य
7. भाषा - सरल, सहज
8. अनुप्रास, रूपक, अंलकार

जो है वह खडा .....बिल्कुल बेखबर।

प्रसंग :- कवि - केदरनाथ सिहँ

कविता - बनारस

सदंर्भ : बनारस शहर की प्राचीनता सांस्कृतिक, अध्यातिमक भव्यता के साथ-साथ उसकी आधुनिकता का वर्णन किया गया है:-

व्याख्या : कवि बनारस शहर का सांस्कृतिक वर्णन करते हुए कहता है कि यह शहर जो वर्षो से इसी तरह खड़ा है, वह किसी सहारे के कारण नहीं अपितु आज भी लोगों के मन में इस शहर के प्रति भक्ति, श्रद्धा और विश्वास है। उसी के सहारे यह शहर आज भी अपने महत्व को बचाए हुए है। और जो शहर इस सहारे के नहीं खडा वह यहाँ धार्मिक महत्व अर्थात् उसे गंगा में बहती शवों की राख, चिता और आरती की रोशनी, उनकी आग

उनसे निकलने वाला धुआँ व खुशबू तथा प्रार्थना के लिए उठे हुए हाथ इस शहर को सहारा देते हैं। सदियों से सूर्य को अर्ध्य देते अपनी एक टांग पर खडे अपनी दूसरी टांग से बिल्कुल बेखबर है।

यहाँ कवि ने प्रतीकात्मक रूप से एक बात कही है, कि प्रार्थना, धार्मिक गतिविधियों के अलावा भी इस शहर को बचाने के लिए भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए। और इस बात से एक पैर बिल्कुल बेखबर है। उन आवश्कताओं की पूर्ति दूसरी टांग कर रही है, क्योंकि केवल प्रार्थना के बल पर कोई शहर टिक नहीं सकता । दूसरी टांग अर्थात आध्यातिमकता से बेखबर आधा शहर आधुनिकता के दौर में प्रवेश कर चुका है।

काव्य सौन्दर्य :

1. भाषा सरल सहज एवम् प्रवाहमयी है।
2. खड़ी बोली छदंमुक्त व अतुकान्त भाषा है।
3. तत्सम् व तद्भव शब्दों का प्रयोग है।
4. 'टांग' तथा 'स्तम्भ का प्रतीकात्मक प्रयोग है।
5. दृश्य बिम्ब
6. अनुप्रास अंलकार
7. भाषा में सौन्दर्य भाव है।

प्रश्न 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) ''दुख ही जीवन की कथा रही''- पंक्ति में निहित 'निराला' की वेदना पर प्रकाश ड़ालिए।

उत्तर : निराला का जीवन सदा दुखों एवम् अभावों में बीता था । युवावस्था में ही पत्नी का देहांत हो गया था। मुक्तक छदं की कविताएँ लिखने के कारण सम्पादकों द्वारा छापा नहीं जाता था, अत: आर्थिक अभाव का सामना करना पड़ा था। इसी कारण पुत्री के लालन-पालन से वंचित रहना पड़ा, उसका विवाह सामान्य ढ़ंग से करना पड़ा, और बीमारी में इलाज भी नहीं करवा पाएँ। अत: जीने का एक मात्र सहारा पुत्री सरोज का आकस्मिक निधन हो गया। जिससे वे बुरी तरह टूट गए। अत: वे कहते है, कि उनका तो पूरा जीवन ही दुखो से भरा हुआ है।

(ख) 'यह दीप अकेला', 'स्नेह भरा' के आधार पर बताइए कि व्यष्टि का समष्टि में विजय क्यों और कैसे सम्भव है?

उत्तरः व्यष्टि अर्थात् व्यक्ति से ही समाज बनता है। और उसका समाज में विलय होने से उसकी सार्थकता व महत्ता कम नहीं होती है। उसे नयी पहचान मिलती है वह महत्ता और बढ़ जाती है। उसके समाज में विलय होने से समाज और शक्तिशाली हो जाता है। उसके गुण समाज में काम आते हैं। उसके मानवीय गुणों का सार्वभौमिकरण हो जाता है।

(ग) धनानंद के सवैये के आधार पर 'हियो हितपत्र' की विशेषताएँ लिखिए और बताइए कि उसके साथ प्रियतमा ने क्या व्यवहार किया?

उत्तरः धनानंद ने अपने हृदय रूपी पत्र को बहुत ही परिश्रम से सुजान के लिए लिखा था। उस पत्र में घनानंद ने सुजान के प्रति अपने प्रेम के सुन्दर स्वरूप का ही वर्णन किया था। इसके अलावा किसी भी अन्य बात का उल्लेख नहीं किया था। परंतु उसने ऐसे प्रेम भरे पत्र को एक बार पढ़ा तक नहीं बल्कि उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

प्रश्न 9. काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :-

(क) ऊँचे तरूवर.....फिरकी-सी आई, चली गई।

भाव सौन्दर्य : इस कविता के माध्यम से कवि ने बसंत के आने पर प्रकृति में जो परिवर्तन होते है, उनका वर्णन किया है। वह कहता है कि वसंत के आने पर ऊँचे पेड़ो के पत्ते पीले होकर गिरने लगते है। अब तक जो हवा शीतल और शुष्क थी, उसमें गरमाहट आने लगती है। सुबह का समय सुखद अनुभूति देता है।

शिल्प सौन्दर्य :

1. भाषा → सरल-सहज
2. शैली → छंदमुक्त चित्रात्मक
3. बोली → खडी बोली
4. पदावली → अतुकान्त
5. शब्द चयन → तद्भव शब्दों का प्रयोग है।
6. अंलकार → मानवीकरण, अनुप्रास, उपमा अंलकार है।
7. गुण → माधुर्य गुण है।
8. → बिम्ब विधान कविता है।
9. → शहरी कृत्रिम जीवन पर व्यग्ंय है।

(ख) हेमकुंभ ले.....भर तारा।

भाव सौन्दर्य : प्रात: कालीन सूर्योदय का वर्णन किया गया है। सूर्य के उदय होने से पहले आकाश में तारे जाग रहे थे। अर्थात् चमक रहे थे, परन्तु जैसे ही सूर्य उदय होता है तो ऐसा लगता है, कि ऊषा रूपी पनिहारिन सोने का घड़ा लेकर आई है जिसमें उसने सुख भरे हुए है व पूरे संसार पर वह सुख रूपी सुनहरा पानी बिखेर रही हो। यहाँ कवि कहना चाहता है, कि सूर्य यहाँ के जन-जीवन के लिए सुख और मंगल अपने साथ लेकर आता है।

शिल्प सौन्दर्य : भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य का सुन्दर चित्रण है।

अंलकार - 'हेम-कुंभ' में रूपक अंलकार है।

अंलकार - 'सुबह' का मानवीकरण किया गया है।

बिम्ब - प्राकृतिक बिंब है।

छन्द कविता - संगीतात्मक, तुकान्त है।

गुण - माधुर्य

भाषा - सरल व सहज

बोली - खडी बोली

(ग) यह तन जारों.....धरैं जहँ पाउ ।।

भाव सौन्दर्य : इसमें कवि ने नायिका के विरह की चरमावस्था का वर्णन किया है। नायिका अपने पति के वियोग में कहती है, कि विरह उसके शरीर को जलाकर राख कर दें, और उस शरीर रूपी राख को पवन उड़ा कर उस मार्ग में ड़ाल दे जिस मार्ग से उसके प्रियतम जाते है। अत: नायिका प्रेम में सर्वस्व समपर्ण का भाव रखते हुए अपने को मिटाने को भी तैयार है।

शिल्प सौन्दर्य :

1. कवि - जायसी
2. कविता - बारहमासा
3. छंद - दोहा

4. रस – वियोग श्रृंगार

5. गुण – माधुर्य

6. भाषा – अवधी

7. छंद कविता – तुकान्त

8. प्रेम का सर्वस्य त्याग की भावना

प्रश्न 10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए ।

साहित्य का पांचजन्य.....उतरने के लिए बुलावा देता है।

प्रसंग – पाठ – यथास्मै रोचते विश्वम्

लेखक – राम विलास शर्मा

संदर्भः साहित्य का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए साहित्य की तुलना श्री कृष्ण के शंख (पाँचजन्य) से करते हुए यह बताने का प्रयास करता है –

व्याख्याः मनुष्य का जीवन समरभूमि के समान है। लेखक जीवन को संग्राम मानता है, और साहित्य का अर्थ और उद्देश्य स्पष्ट करते हुए बताता है, कि जिस प्रकार श्री कृष्ण अपने शंखनाद से अर्जुन को उसके कर्त्तव्य के प्रति जाग्रत किया था। उसी प्रकार साहित्य भी मनुष्य के जीवन में उदासीनता का संदेश नहीं देता। वह मनुष्य को यह नहीं बताता कि वे भाग्य के सहारे बैठ जाएँ और अपने को लिए गुलाम दीन हीन समझकर, पिंजरे में आजादी और अधिकारों के लिए फड़फडाते रहें। बल्कि साहित्य तो कायरों, डरपोको को ललकारता है। और जो जीवन के संघर्ष में अपनी हार स्वीकार कर लेते है, उन्हें उत्साहित करता है उन्हें जोश व सशक्त बनने का मार्ग सूझाता है। लेखक कहता है, कि साहित्य तो कृष्ण के शंखनाद के जैसा है, जो अर्जुन की तरह लागों को क्रियाशील बनाता है, और कर्त्तव्य के प्रति सचेत करता है।

विशेष :

1. बोली – खड़ी

2. गुण – ओज

3. शब्द चयन – तत्सम्

4. शैली – उदाहरण, वर्णनात्मक

5. साहित्य का महत्व बताया है।

6. प्रेरित करने का भाव है।

7. भाषा – सरल सहज

अथवा: स्नान से ज्यादा.....आत्माराम और निमलिनंद है।

प्रसंग – लेखिका – 'ममता कालिया'

पाठ – 'दूसरा देवदास'

सदंर्भ : इस कहानी में लेखिका हरिद्वार में गंगा स्नान, गंगा आरती के समय गंगातट के शांत व श्रद्धामय वातावरण का वर्णन किया है :

व्याख्या : लेखिका बताती है, कि लोगों का गंगा में स्नान से ज्यादा समय गंगा के प्रति उनका ध्यान, भक्ति, श्रद्धा ले रहा था। वे गंगा की धारा के बीच खड़े होकर सूर्य नमस्कार कर रहे थे। अर्थात् लोगों के मन में गंगा के प्रति भक्ति भाव यहाँ लेखिका बताने का प्रयास कर रही है कि हिन्दू धर्म में गंगा स्थान का क्या महत्व है। उन्हें गंगा स्नान करते समय देखकर लगता है, कि मानों उनका मन सभी प्रकार की ईर्ष्या, द्वेष, कुठां, छल, कपट, लालच, आदि मलिन भावों से मुक्त हो गया है। गंगा स्नान का अध्यात्मिक वातावरण उनके हृदय के सारे राग द्वेष को मिटा देता है। वे निर्मला, निष्कंलक व पापमुक्त हो जाते है। उनका मन, शरीर, जीवन पुनः शुद्ध हो जाता है। और वे इस प्रकार आनन्द प्राप्त करते है।

विशेष :

1. खडी बोला की रचना है।

2. संस्कृत निष्ठ भाषा है।

3. तत्सम् प्रधान शब्दावली

4. माधुर्य गुण

5. हिन्दू धर्म में गंगा स्नान का महत्व बताया गया है।

6. भारतीय संस्कृति का वर्णन है।

प्रश्न 11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(क) ''दुख और सुख तो मन के विकल्प है'' - कथन का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि कुहज कैसे इन दोनों से अप्रभावित रहता है।

उत्तर: लेखक सुख और दुख को मन का विकल्प मानता है। क्योंकि सुख और दुख मन के भाव है, कि सुखी व्यक्ति वह है, जिसका मन वश में है और दुखी वह जिसका मन परवश है। और वे परवश का अर्थ बताते है, कि दूसरों की खुशामद करना, चाटुकारिता करना, दांत निपोरना, जी हजूरी करना ही दुख का कारण है, क्योंकि वह परिस्थिति से बहुत जल्दी प्रभावित होता है और अपनी कमी छिपाने के लिए झूठ, व ढ़ोंग का सहारा लेता है। अत: कुटज से हमें शिक्षा लेनी चाहिए क्योंकि उसके लिए सुख-दुख एक समान है। वह कठिनाइयों में संघर्ष करने से घबराता नहीं है दुखी नहीं होता। किसी की जी हजूरी नहीं करता, वह तो हमेशा प्रत्येक स्थिति में खुश रहता है।

(ख) हरगोबिन द्वारा बड़ी बहुरिया का सवाँद न सुना पाने के पीछे निहित कारणों पर प्रकाश ड़ालिए।

उत्तर: हरगोबिन के मन में अपने गाँव और बड़ी बहुरिया के लिए बहुत आदर और सम्मान था। उसे लगता था, कि यदि बड़ी बहुरिया जिसे वह गाँव की लक्ष्मी मानता था यदि वह गाँव से चली जाएगी तो गाँव की मान-मर्यादा को बहुत ठेस पहुँचेगी। और यदि उसने बड़ी बहुरिया का संवाद उसके मायके में बता दिया तो वे क्या सोचेगें, कि उनकी बेटी की वहाँ कोई इज्जत नहीं है। जिससे बड़ी बहुरिया का संवाद नहीं सुनाता।

(ग) ''आधुनिक औद्योगीकरण की आँधी में सिर्फ मनुष्य ही नहीं उखड़ता, बल्कि उसका परिवेश, संस्कृति और आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते है।'' 'जहाँ कोई वापसी नहीं' के आधार पर उपर्युक्त कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर: इस पाठ के माध्यम से लेखक ने विकास के नाम पर जो आज का मानव पर्यावरण का विनाश कर रहा है और उस विनाश से पैदा हुई विस्थापन की समस्या को उठाया है। आधुनिक औद्योगीकरण के कारण विस्थापन की समस्या उत्पन्न होती है, जिसकी वजह से लोगों को अपने मूल परिवेश, विरासत में प्राप्त संस्कृति, आवास स्थल को छोड़कर दूसरी जगह रहने को मजबूर होना पड़ता है। और फिर अपने परिवेश में कभी भी ना लौटकर जाने का दर्द, दुख त्रासदी के बोझ के साथ हमेशा के लिए जीना पड़ता है। अत: यह बिल्कुल सही बात है, कि आधुनिक औद्योगीकरण से केवल मनुष्य ही नहीं उखड़ता, बल्कि उसका परिवेश, संस्कृतिक और आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते है।

प्रश्न 12. **विष्णु खरे**

जीवन परिचय

जन्म व जन्मस्थान: विष्णु खरे स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य रचनाकार है। इनका जन्म सन् 1940 ई. में छिंदवाड़ा, मध्यप्रदेश में हुआ था।

शिक्षा : इंदौर से 1963 में अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया।

कार्य :

1. अध्यापन कार्य- 1963 से 1975 तक मध्यप्रदेश तथा दिल्ली के महाविद्यालयों में अध्यापन से जुड़े।
2. लेखन कार्य- औपचारिक रूप से लेखन का आरंभ 1956 में हुआ। उन्होंने विदेशी कविताओं का हिन्दी तथा हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद अधिक किया है।
3. सम्पादन कार्य-
    1. 1962-63 में दैनिक 'इंदौर समाचार' में उप संपादक रहे।
    2. 1966-67 में लघु-पत्रिका 'व्यास' का संपादन
    3. 1976-84 तक साहित्य अकादमी में उप-सचिव पद पर पदासीन रहे।
    4. 1985 से 'नवभारत टाइम्स' मे प्रभारी कार्यकारी संपादक के पद पर कार्य किया।
    5. 1993 में जयपुर नवभारत टाइम्स के संपादक के रूप में कार्य किया।
    6. इसके बाद जवाहरलाल नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय में दो वर्ष वरिष्ठ अध्येता रहे।
    7. तब से वे स्वतंत्र लेखन एवं अनुवाद कार्य में रत है।

प्रकाशन कार्य :

1. पहला प्रकाशन टी. एस. इलियट का अनुवाद मरू प्रदेश और अन्य कविताएँ।
2. एक समीक्षा पुस्तक 'आलोचना की पहली किताब' 1983 में प्रकाशित हुई।

रचनाएँ : विष्णु खरे की पहचान कविता के साथ-साथ अनुवादक रूप में रही है। इनके प्रमुख ग्रंथ है-

1. 'खुद अपनी आँख से'
2. 'सबकी आवाज के परदे में'
3. 'पिछला बाकी'
4. 'काल और अवधि के दरमियान'

साहित्यिक विशेषताएँ : विष्णु खरे के साहित्य मे आधुनिक जीवन एवं उनसे जुड़ी समस्याएँ देखने को मिलती है। वे अपने काव्य द्वारा अमानवीय परिस्थितियों के विरूद्ध खड़े होकर उसे नैतिक स्वर प्रदान करते है। उनका काव्य स्वतंत्रता के पश्चात भारत का दर्पण है जिसमें देश समाज की प्रगति दिखाई गई है।

भाषा शैली : उनकी भाषा सीधी सादी एवं गंभीर भावों को एक साथ समेटे हुए है। इनकी भाषा मे मुहावरों का काव्यात्मक प्रयोग हुआ है।

पुरस्कार/सम्मान :

1. फिनलैंड का 'राष्ट्रीय सम्मान' 'नाइट ऑफ दि आर्डर ऑफ दि ह्वाइट रोज'
2. रघुवीर सहाय सम्मान
3. शिखर सम्मान
4. हिंदी अकादमी दिल्ली का 'साहित्यकार सम्मान'
5. मैथिलीशरण गुप्त सम्मान

प्रश्न 13. 'सूरदास प्रतिशोध की अपेक्षा क्षमा में विश्वास रखता था। इस कथन के आलोक में 'सूरदास' कहानी में निहित जीवन-मूल्यों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर: सूरदास एक अंधा भिखारी है जो भीख मांग कर अपना गुजारा करता है। वह कहानी का नायक है। सूरदास भिखारी होने के बावजूद ऐसे मानवीय गुणों से परिपूर्ण है, जो उसे बहुत महान बना देते है। 'सूरदास' कहानी में निम्नलिखित जीवन मूल्यों का समावेश है :

1. **बदला ना लेने की भावना** - सूरदास को पता था, कि उसकी झोपड़ी भैरो ने जलाई है। परन्तु वह उससे इस बात की कोई शिकायत नहीं करता है। क्योंकि वह बदला लेने की बजाए माफ करने में विश्वास करता है।

2. **पुनर्निर्माण मे विश्वास** – वह विध्वंस के स्थान पर पुनर्निर्माण में विश्वास करता है। जब मिठुआ उससे पूछता है, कि कोई हमारी झोपड़ी सौ लाख बार जलाएगा, तो वह जवाब देता है, कि हम सौ लाख बार बनाएगें। अर्थात् वह पुनर्निर्माण की भावना में विश्वास करता है।

3. **हार ना मानने की प्रवृत्ति** – सूरदास किसी भी परिस्थिति में हार नहीं मानता है। चाहे वह कोई भी परिस्थिति हो। झोपड़ी जलने पर और उसकी जीवन भर की सारी पूंजी खो जाने पर वह निराश नहीं होता।

4. **सहृदय व परोपकारी** – सूरदास सभी के साथ परोपकार की भावना रखता है। वह सुभागी को अपने घर में शरण देता हैं। समाज कल्याण के लिए कुंआ खुदवाता है। उसके मन में सभी की सहायता करने का विचार रहता है।

5. **उत्तरदायित्वों का निर्वाह** – वह अनाथ मिठुआ का पालन–पोषण करता है। पूर्वजों की आत्मा की शांत्ति के लिए पिंडदान की बात करता है। अत: वह अपने सभी कर्त्तव्यों को भली भांति पूरा करने की सोचता है।

6. **कर्मशील व दृढ़ संकल्पशील** – सूरदास कर्म करने में विश्वास करता रखता है। और दृढ़ संकल्पित व्यक्ति है।

अथवा

''भूपसिहँ के जीवन–मूल्य हमारे लिए भी प्रेरणा–स्रोत है'' 'आरोहण' पाठ के आधार पर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: भूपसिहँ एक पहाड़ी व्यक्ति है। जिसका पहाडों पर चढ़ने में कोई मुकाबला नहीं कर सकता। उसके व्यक्तित्व में ऐसे बहुत से गुण है– जो हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है।

1. **धैर्यशील व्यक्ति :** भूपसिहँ एक धैर्यशील व्यक्ति है। भूस्खलन में उसका सब कुछ बर्बाद हो जाता है। पस्तु वह धैर्य नहीं खोता, बल्कि फिर से अपने आत्मविश्वास और आत्मबल से सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

2. **पुनर्निर्माण में विश्वास :** प्राकृतिक आपदा में भूपसिहँ का सब कुछ बर्बाद हो जाता है। पर वे हिम्मत ना हार कर शैला और वह कड़ी मेहनत करके पुन: खेत, घर बना लेते है।

3. **पर्वतारोहण में कुशल :** पूरे माही गाँव में चढ़ाई करने में उनका मुकाबला नहीं कर सकता था। रूपसिहँ आधुनिक उपकरणों और ट्रेनिंग के द्वारा चढ़ाई करता था। परन्तु भूपसिहँ बिना किसी उपकरण के चढ़ाई चढ़ता था।

4. **अपनी जन्मभूमि व परिवेश से लगाव :** जब रूपसिहँ अपने भाई भूपसिहँ को अपने साथ शहर ले चलने की बात करता है, तो वो मना कर देता है। उन्हें अपने जन्म स्थान से इतना लगाव है, कि वह उसके सामने शहरी सुविधाओं को भी ठुकरा देता है।

5. **परिस्थिति से हार ना मानना :** वह किसी भी परिस्थिति में हार नहीं मानते है। चाहे वह सिंचाई के लिए झरने का मुहँ मोड़ना हो, या आपदा में सब कुछ बर्बाद हो गया हो।

प्रश्न 14. सूरदास के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए : -

उत्तर- सूरदास के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है :-

1. **परोपकारी :** सूरदास परोपकार की भावना से ओत-प्रोत था। वह समाज, भैंरो के डर की परवाह किये बिना सुभागी को अपने घर में शरण देता है। व उसकी सहायता करता है।

2. **सहदयता :** सूरदास गोद लिए मिठुआ का पालन-पोषण करता है। समाज की भलाई के लिए कुआँ बनवाने की बात करता है। अपनी भूमि को बस्ती के जानवरी के चारे के लिए ऐसे ही छोड़ देता है।

3. **धैर्यशील :** सूरदास अपनी झोपड़ी जल जाने पर अपना धैर्य नहीं खोता बल्कि उसे पता था, कि उसकी झोपड़ी में आग कैसे लगी है। फिर भी वह उनके प्रति कोई बदले की भावना नहीं रखता।

4. **प्रतिशीध्र की भावना ना होना :** भैरो और जगधर से अपनी झोपड़ी जलाने व जीवन भर की पूंजी चुराने पर भी उनसे कोई शिकायत नहीं करता है।

5. **पुनर्निर्माण में विश्वास :** वह झोपड़ी जल जाने पर निराश नहीं होता। और जब मिठुआ उससे पूछता है, कि कोई झोपड़ी सौ बार जला देगा, तो वह जवाब में कहता है, कि हम सौ बार बनाएंगें।

6. **कर्मशील :** सूरदास निराशा के स्थान पर कर्म करने की पुनर्निर्माण की बात करता है।

7. **गांधीवादी विचार धारा का प्रतिनिधित्व :** सूरदास गांधीवादी विचार धारा का समर्थक है। अहिंसा, सत्य का पुजारी है। प्रतिशीध की भावना नहीं रखता।

अथवा

'आरोहण' कहानी के आधार पर सिद्ध कीजिए कि पहाड़ों का जीवन अत्यत्त कठिन है।

उत्तरः पहाड़ी जीवन बहुत कठिन और चुनौती भरा होता है। वहाँ के लोगो को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे :-

1. वहाँ के लोगों को अत्याधिक ठंड, सर्दियों में पानी की समस्या आदि का सामना करना पड़ता है। जैसे कि भूपदादा को करना पड़ा। उन्होंने शैला के साथ मिलकर खेतों की सिंचाई के लिए झरने का मुहँ मोड दिया था।

2. **यातायात के सीमित साधन :** पहाड़ों पर यातायात के सीमित साधन है। और वर्षा या प्राकृतिक आपदा के समय वे भी बंद हो जाते है।

3. **प्राकृतिक आपदा :** पहाडों पर रहने वाले लोगों को प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड़ता है। कई बार तो उसमें इनका सब कुछ नष्ट हो जाता है। जैसे भूपदादा का घर, खेत, माँ-बाप, भूस्खलन में समाप्त हो गए थे।

4. **बेरोजगारी की समस्या :** पहाडी क्षेत्रों पर विकास की सुविधाएँ बहुत कम पहुँच पाती है। अतः वहाँ के लोगों को बेरोजगार की समस्या का सामना करना पड़ता है। उन्हें काम की तलाश में अपना घर-परिवार छोड़ना पड़ता है। रूपसिहँ घर से भागा तो वह पुनः वहाँ बसने को तैयार नहीं था।

5. **अशिक्षा की समस्या :** पहाडों पर अशिक्षा की समस्या होती है। आरोहण कहानी में भी कोई भी पात्र पढ़ा-लिया नहीं था।

6. रोजगार के साधनों का अभाव रहता है।

7. जंगली जानवरों का भय होता है इसके साथ-साथ स्वास्थ्य सम्बधी समस्या का अभाव रहता है।

8. ईधन की कभी, खाने-पीने का सामान जुटाने की समस्या का सामना करना पड़ता है।